नबियों के किस्से

www.abulhasanalinadwi.org

अनुवादक के क़लम से

मेरी दिली ख़्वाहिश थी कि मैं हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी की अरबी में लिखी "क़ससुन नबीय्यीन" नामक किताब का हिन्दी में तर्जुमा करूँ।

मैंने इस काम को करने का इरादा तो कर लिया लेकिन तर्जुमा करने का तरीक़ा न जानने और उसका अनुभव न होने के कारण मेरा इरादा कमज़ोर पड़ने लगा। मगर मेरे बुजुर्ग और मेरा सही मार्गदर्शन करने वाले मौलाना सैय्यद राबे नदवी तथा मौलाना सैय्यद वाज़ेह रशीद नदवी ने मेरी हिम्मत बढ़ाई और मैंने अल्लाह का नाम लेकर इस काम को शुरू कर दिया।

इस काम को आगे बढ़ाने में मेरे हमदर्द साथियों ने मेरी हर प्रकार से सहायता की, आज मैं इस किताब का पहला भाग जिसमें हज़रत इब्राहीम अ0 और हज़रत यूसुफ अ0 के क़िस्से हैं, पेश करने के क़ाबिल हुआ।

www.abulhasanalinadwi.org

इस पर मैं अल्लाह का जितना भी शुक्र करूं कम है। यह काम केवल उसी के फज़ल से पूरा हो सका है।

मैं विशेषकर अपने मित्र सैय्यद इब्राहीम हसनी जो मेरे बहनोई भी हैं, का बेहद मशकूर हूँ, जिनके सहयोग से यह काम पूरा हुआ। मैं मौलवी रहमान नक़वी तथा मास्टर खुर्शीद का भी बहुत आभारी हूँ, जिन्होंने Proof Reading में मेरी मदद की। मैं अपने दोनों भतीजों सैय्यद हसन मुसन्ना व सैय्यद सोहेल हसनी का भी ममनून हूँ जिन्होंने Computer Typing & Composing का काम किया। अल्लाह ताला इन सब हज़रात को अच्छा बदला दें।

अनुवादक

सैय्यद अहमद अली

www.abulhasanalinadwi.org

मूर्तियों को किसने तोड़ा ?

मूर्तियों का बेचने वाला

बहुत समय पूर्व एक गाँव में एक प्रसिद्ध आदमी था। उसका नाम आज़र था। आज़र मूर्तियों का व्यापार करता था। इस गाँव में बहुत बड़ा घर था और इस घर में बहुत सी मूर्तियाँ थीं। लोग इन मूर्तियों की पूजा करते थे। आज़र भी इन मूर्तियों को पूजता था।

आज़र का बेटा

आज़र का एक नेक और शरीफ़ लड़का था। उसका नाम इब्राहीम था। इब्राहीम लोगों को मूर्तियों की पूजा और सजदा करते देखते थे। इब्राहीम यह भली प्रकार जानते थे कि यह मूर्तियाँ पत्थर की हैं। वह यह भी जानते थे कि यह मूर्तियाँ सुनती और बोलती नहीं हैं। यह न तो किसी को लाभ पहुँचा सकती हैं और न ही हानि। वह देखते थे कि यदि कोई मक्खी भी उन पर बैठ जाये तो वह उसको भगा नहीं सकती। वह यह भी

www.abulhasanalinadwi.org

देखते थे कि यदि कोई चूहा उनका खाना खाने लगे तो वह उसको भी भगा नहीं सकती हैं। इब्राहीम अपने मन में सोचा करते थे कि फिर भी लोग मूर्तियों को सजदा क्यों करते हैं और इनसे क्यों माँगते हैं?

इब्राहीम का उपदेश

इब्राहीम अपने पिता से कहते थे कि :— ऐ पिताजी! आप इन मूर्तियों की पूजा क्यों करते हैं? ऐ पिताजी! आप इनको सजदा क्यों करते हैं? ऐ पिताजी! आप इन मूर्तियों से माँगते क्यों हैं? यह मूर्तियाँ न तो बात करती हैं और न आप की बात सुनती हैं। यह मूर्तियाँ न तो कोई लाभ पहुँचाती हैं और न ही कोई हानि। इनका हाल तो यह है कि अगर इनके सामने आप खाने पीने की वस्तु रख दें तो यह उसको न खाती है न पीती है।

आज़र इन बातों से क्रोधित हो जाता था। परन्तु इब्राहीम अपनी क़ौम को उपदेश देते रहते थे। इब्राहीम के उपदेशों से जनता बड़ी क्रोधित होती थी और समझती न थी। एक दिन इब्राहीम ने दिल में इरादा किया कि जब यह लोग चले जायेंगे, उस समय मैं इनकी मूर्तियों को तोड़ दूँगा। तब इन लोगों की समझ में बात आयेगी।

इब्राहीम अ० मूर्तियों को तोड़ते हैं

ईद का दिन आया और लोग खुशी मनाने लगे। ईद की खुशी मनाने के लिये लोग निकले बच्चे भी निकले,

www.abulhasanalinadwi.org

इब्राहीम के वालिद भी निकले और इब्राहीम अ० से कहा "क्या तुम हमारे साथ नहीं चल रहे हो?" इब्राहीम अ० ने कहा कि मैं बीमार हूँ। इब्राहीम के अतिरिक्त सभी लोग त्योहार मनाने अपने घरों से चले गये। इब्राहीम अ० लोगों के चले जाने के बाद मूर्तियों के पास आये और उनसे कहने लगे कि :– "क्यो भाई तुम बोलते क्यो नहीं सुनते क्यों नहीं हो? यह तुम्हारे सामने खाने–पीने का सामान रखा हुआ है उसको खाते–पीते क्यों नहीं हो?" मगर वह मूर्तियाँ तो पत्थर थीं और पत्थर बोलते नहीं हैं। इब्राहीम ने मूर्तियों से कहा "तुम बोलती क्यों नहीं हो? मूर्तियाँ चुप रही और नहीं बोली इब्राहीम अ० को गुस्सा आ गया। उन्होंने कुल्हाड़ी हाथ में ली और मूर्तियों को तोड़ डाला मगर एक बड़ी मूर्ति को छोड़ दिया और कुल्हाड़ी उसकी गरदन पर लटका दी।

यह किसने किया?

त्योहार मनाने के बाद लोग घरों को वापस आ गये तथा बुत ख़ाने गये। मूर्तियों को जब सजदा करने का इरादा किया कि ईद का दिन था तो उनको टूटा हुआ पाकर दंग रह गये और डर भी गये तथा क्रोध में चीख़ कर बोले कि हमारे उपासको के साथ किसने यह व्यवहार किया है? उनमें से कुछ लोगों ने कहा कि यह काम केवल इब्राहीम का ही हो सकता है। वे सब इब्रहीम अ० के पास आये और पूछा "ऐ इब्राहीम क्या तुमने हमारे

www.abulhasanalinadwi.org

देवताओं के साथ दुर्व्यवहार किया है?" इब्राहीम अ0 ने उत्तर दिया "तुम लोग उनसे क्यों नहीं पूछ लेते यदि वे बोल सकते हों? मेरा ख़्याल तो यह है कि उनमें से जो सबसे बड़ा है उसी ने यह सब किया है।" वे सब यह जानते थे कि मूर्तियाँ पत्थर की हैं और पत्थर बोलता नहीं है। बड़ी मूर्ती भी पत्थर की है तथा उसमें चलने फिरने की ताक़त नहीं है। वह कहीं मूर्तियों को तोड़ सकती है? उन सब ने इब्राहीम अ0 से कहा "ऐ इब्राहीम तुम तो जानते हो हो कि यह मूर्तियाँ बोलने की शक्ति नहीं रखतीं।"

इब्राहीम अ0 ने कहा फिर कैसे तुम लोग मूर्तियों को पूजते हो जब कि वह न लाभ पहुँचा सकती हैं न हानि?

तुम लोग कैसे मूर्तियों से अपनी आवश्यकता माँगते हो जब कि वह न बोल सकती हैं न सुन सकती हैं?

क्या तुम लोग कुछ भी नहीं समझते और कुछ भी बुद्धि नहीं रखते? लोग चुप रहे और लज्जित हुए।

वह सब एक स्थान पर जमा हुए और बोले अब हमें क्या करना चाहिये? इब्राहीम ने हमारी मूर्तियों को तोड़ा है और हमारे उपास्यों का अपमान किया है। उसको इसका दण्ड अवश्य मिलना चाहिये। तुम लोग बताओ कि उसको क्या दण्ड दिया जाये? सब बोल पड़े कि इब्राहीम ने हमारे उपास्यों का अपमान किया उसको जलती आग में डाल दिया जाये और अपने देवताओं की सहायता की जाए। उन्होंने अलाव जलाया और इब्राहीम अ0 को उसमें डाल

www.abulhasanalinadwi.org

दिया। लेकिन अल्लाह ने इब्राहीम अ0 की सहायता की और आग को ठंडा होने का आदेश दिया। आग ठंडी हो गयी और इब्राहीम अ0 को जलने से सुरक्षित रखा। जब लोगों ने देखा कि आग इब्राहीम अ0 को जला नहीं रही है और वह तो उसमें खुश और सुरक्षित हैं तो उनको बड़ा आश्चर्य हुआ और डर भी लगा।

मेरा रब कौन है?

एक रात इब्राहीम अ0 ने तारा देखा और कहने लगे कि यह मेरा रब है। जब वह तारा ग़ायब हो गया और डूब गया तो कहा कि यह मेरा रब नहीं हो सकता। उसके बाद चाँद को देखा तो कहने लगे कि यह मेरा रब है। उसके डूबने पर बोले कि यह भी मेरा रब नहीं है। प्रातः जब सूर्य को देखा तो बोले कि यह मेरा रब है। यह बड़ा भी है और ज्यादा रौशन भी है। जब रात आयी और सूर्य अस्त हो गया तो इब्राहीम अ0 बोल उठे कि यह भी मेरा रब नहीं हो सकता। अल्लाह तो ज़िन्दा है उसको मौत नहीं आ सकती। अल्लाह सदैव बाक़ी रहने वाला है। वह ग़ायब नही हो सकता। अल्लाह बड़ा बलवान और शक्तिशाली है उस पर कोई चीज़ ग़ालिब नहीं आ सकती।

तारा कमज़ोर है उस पर सुबह ग़ालिब आ गई। चाँद कमज़ोर है उस पर सूर्य ग़ालिब आ गया। सूर्य कमज़ोर है उस पर रात और बादल ग़ालिब आ गये। यह सब कमज़ोर हैं। ये मेरी मदद (सहायता) नहीं कर सकते।

www.abulhasanalinadwi.org

मेरी मदद तो अल्लाह ही कर सकता है जो ज़िन्दा है, मरेगा नहीं और सदैव रहेगा। वह ग़ायब नहीं होगा। वह बलवान और शक्तिशाली है। उस पर कोई भी वस्तु ग़ालिब नहीं आ सकती है।

मेरा रब (परवरदिगार) अल्लाह है

इब्राहीम अ0 ने जान लिया कि उनका रब अल्लाह है क्योंकि वह हमेशा ज़िन्दा रहेगा। उसको मौत नहीं आयेगी। वह सदैव रहने वाला है वह ग़ायब नहीं हो सकता। इब्राहीम ने जान लिया कि अल्लाह ही चाँद, सूरज तथा सितारों का रब है और वही सारे जहान का रब है। अल्लाह ने इब्राहीम को सीधा मार्ग दिखाया। उनको नबी और अपना दोस्त बनाया और उनको आदेश दिये कि वह अपने समाज को नेकी का पाठ पढ़ायें और उनको मूर्ति पूजा से रोकें।

इब्राहीम अ0 के उपदेश

इब्राहीम अ0 ने समाज को अल्लाह की तरफ़ बुलाया और उनको मूर्तिपूजा से रोका। इब्राहीम अ0 ने अपनी क़ौम से कहा कि तुम किसकी पूजा करते हो? क़ौम बोली "हम तो मूर्तियों को पूजते हैं।" इब्राहीम अ0 ने कहा "ऐ मूर्खो ऐसी चीज़ की पूजा क्यों करते हो क्या जब तुम उन को पुकारते हो तो वह तुम्हारी पुकार सुनते या वह तुम को लाभ या हानि पहुँचा सकते हैं? वह कहने लगे कि ऐ

www.abulhasanalinadwi.org

इब्राहीम! हमने तो अपने बाप दादा को मूर्ति पूजा करते हुए पाया है। इब्राहीम अ० ने कहा कि मैं तो इन मूर्तियों की पूजा नहीं कर सकता। मैं तो मूर्तियों का दुश्मन हूँ। मैं तो उस रब की इबादत करता हूँ जो सारी दुनिया का मालिक है। उसने मुझे पैदा किया वही मुझे रास्ता दिखाता है। वही मुझे खिलाता है। जब भी मैं बीमार होता हूँ वही मुझे ठीक करता है। वही मुझे मारेगा और फिर ज़िन्दा करेगा। यह पत्थर (मूर्ति) हैं। निःसंदेह मूर्तियाँ न किसी को पैदा कर सकती हैं न सत्मार्ग दिखा सकती है न किसी को खिला सकती हैं न पिला सकती हैं जब काई बीमार हुआ तो उस को अच्छा भी नहीं कर सकतीं न यह किसी को मार सकती न जिला सकती है।

बादशाह के सामने

शहर में एक ज़ालिम बादशाह था। जनता उसको सजदा करती थी। उसने सुना कि इब्राहीम केवल अल्लाह को सजदा करता है। किसी दूसरे को सजदा करने से इन्कार करता है तो बादशाह को बहुत गुस्सा आया और इब्राहीम अ० को बुलवाया। उसके बुलाने पर इब्राहीम अ० उसके पास पहुँचे। इब्राहीम अल्लाह के अलावा किसी से नहीं डरते थे। इब्राहीम अ० आये तो बादशाह ने पूछा। इब्राहीम तुम्हारा खुदा कौन है? इब्राहीम अ० ने जवाब दिया कि मेरा खुदा अल्लाह है। बादशाह बोला कौन अल्लाह? इब्राहीम ने उत्तर दिया वह अल्लाह जो मारता

www.abulhasanalinadwi.org

है और जिलाता है। बादशाह ने कहा कि मैं भी मार सकता हूँ और जिला सकता हूँ। बादशाह ने उन्हीं के सामने दो आदमियों को बुलवाया। एक को क़त्ल करवा दिया और दूसरे को छोड़ दिया और कहने लगा कि देखा तुमने! मैंने एक को मार दिया और दूसरे को छोड़ दिया। इब्राहीम ने सोचा बादशाह बड़ा मूर्ख हैं। इब्राहीम अ0 ने इरादा किया बादशाह और क़ौम को समझाएं। इब्राहीम ने उससे कहा कि मेरा अल्लाह तो सूरज को मशरिक़ (पूरब) से निकालता है तुम ज़रा उसको मग़रिब (पश्चिम) से निकाल कर दिखाओ। इस प्रश्न पर बादशाह को हैरत (आश्चर्य) हुई और वह खामोश हो गया। वह कोई उत्तर नहीं दे सका।

पिता को उपदेश

अब इब्राहीम अ0 ने अपने पिता को अल्लाह की तरफ़ बुलाया और उनसे कहा कि ऐ पिताजी! "आप ऐसी वस्तु की पूजा क्यों करते हैं जो न देख सकती हैं और न ही सुन सकती हैं। आप उसकी पूजा क्यों करते हैं जो आपको कभी कोई लाभ व हानि नहीं पहुँचा सकती। ऐ पिताजी! शैतान की इबादत मत करो अल्लाह की इबादत करो।" इस बात पर पिता (आज़र) को उन पर बहुत गुस्सा आया और इब्राहीम अ0 से कहा कि तुम मुझे मेरे हाल पर छोड़ दो और अब मुझसे एक भी शब्द इस विषय में मत कहना। नहीं तो मैं तुम्हें मारूंगा। इब्राहीम बड़े

www.abulhasanalinadwi.org

क्षमाकारी थे पिता की बात का बुरा नहीं माना। बस उनसे कहा रुखसती का सलाम लो मैं आपकी इच्छानुसार यहाँ से चला जाउँगा और अपने रब से दुआ करूंगा। इब्राहीम को बहुत दुःख हुआ उन्होंने इरादा किया किसी दूसरे मुल्क चले जाएं और अपने रब की इबादत करें और लोगों को अल्लाह की ओर बुलाएं।

नाराज हो गये तो

जब इब्राहीम अ0 बादशाह, समाज तथा पिता से निराश हो गये तो उन्होंने किसी दूसरे शहर जाने का निश्चय कर लिया जहाँ वह अल्लाह की इबादत कर सकें और लोगों को उसकी तरफ़ बुलायें। इब्राहीम अ0 ने अपनी पत्नी हाजिरा के साथ अपने पिता और शहर को अलविदा कहा और मक्का जाने का निर्णय किया। मक्का धरती का वह हिस्सा था जहाँ पानी के लिये न तो कुँआ था और न ही कोई नहर। इसी कारण वहाँ घास और वृक्ष नहीं थे। उस स्थान पर न तो कोई मनुष्य था और न ही कोई जानवर। इब्राहीम अ0 ने यहाँ अपनी पत्नि हाजिरा तथा पुत्र इस्माईल के साथ पड़ाव किया। जब वह इन दोनों को छोड़ कर जाने लगे तो हाजिरा ने उनसे कहा कि "ऐ मेरे सरदार हमको यहाँ छोड़ कर आप कहाँ जा रहे हैं। आप को मालूम है कि इस स्थान पर खाने को खाना नहीं है, और न पीने को पानी हमें इस हाल में छोड़कर जाने का क्या अल्लाह ने आप को

www.abulhasanalinadwi.org

आदेश दिया है।" इब्राहीम अ0 ने कहा हां! हाजिरा ने कहा यदि यह अल्लाह का आदेश है तो हमें कोई चिन्ता नहीं है। अल्लाह ही हमारी रक्षा करेगा।

ज़म–ज़म का कुआँ

इब्राहीम अ0 के पुत्र इस्माईल अ0 को प्यास लगी। उनकी माता ने उनके पानी पिलाना चाहा मगर उस जगह न कोई नहर थी और न ही कोई कुआँ कि वह उनको वहाँ से पानी पिलातीं। पानी के लिये परेशान सफ़ा से मरवा और मरवा से सफा तक दौड़ती रहीं अल्लाह ने उनकी सहायता की और धरती से पानी निकल पड़ा। उससे हाजिरा ने अपने पुत्र की प्यास बुझाई और खुद भी पानी पिया और पानी बाकी रहा यही ज़म–ज़म का कुआँ है। अल्लाह ने इस ज़म–ज़म में बरकत दी। आज भी दुनिया भर के लोग उसका पानी पी रहे हैं। हाजी ज़म–ज़म का पानी अपने घरों को लाते हैं। क्या तुमने ज़म–ज़म का पानी पिया है?

'इब्राहीम अ0 का सपना'

बहुत दिनों बाद इब्राहीम अ0 मक्का आए और अपने परिवार (हाजिरा और इस्माईल अ0) से मिले। इसमाईल अ0 को देख कर इब्राहीम अ0 को बहुत खुशी हुई। उस समय इस्माईल अ0 बहुत छोटे थे। वहीं वह खेलते–कूदते और अपने पिता के साथ ही बाहर घूमने जाते थे।

www.abulhasanalinadwi.org

इब्राहीम अ0 उनको बहुत चाहते थे। एक रात इब्राहीम अ0 ने सपने में उनको कुर्बान (ज़ब्ह) करते देखा।

इब्राहीम अ0 सच्चे नबी थे और नबियों के सपने भी सच्चे होते हैं। इब्राहीम अ0 को अल्लाह ने मित्र बनाया था। इब्राहीम अ0 को सपने में अल्लाह का जो आदेश प्राप्त हुआ उन्होंने उसका पालन करने की ठान ली। इब्राहीम अ0 ने इस्माईल अ0 को अपना सपना बताया तथा उनकी राय जानना चाही। इस्माईल अ0 ने अपने पिता से कहा "अल्लाह ने आप को जो आदेश दिया है वही करें, मुझे इसमें कोई आपत्ति नहीं है। मुझे तो आप सब्र करने वालों में पायेंगे।" इब्राहीम अ0 ने इस्माईल अ0 को अपने साथ लिया तथा एक छुरी भी ले ली और इस्माईल अ0 को ज़ब्ह करने मिना पहुँचे। इस्माईल अ0 को ज़मीन पर लिटाया और छुरी उनकी गरदन पर रखी। मगर अल्लाह तो इब्राहीम की केवल परीक्षा ले रहा था कि इब्राहीम को जो आदेश दिये जा रहे हैं वह उसका पालन करते हैं या नहीं। वह उसे अधिक चाहते हैं या अपने पुत्र को। इब्राहीम अपनी परीक्षा में सफल हुए। अल्लाह ने इस्माईल अ0 के स्थान पर जन्नत से एक दुम्बा भिजवाया और उसको इस्माईल के स्थान पर ज़ब्ह करने को कहा। इब्राहीम अ0 के इस कार्य को अल्लाह ने पसंद किया तथा सारे मुस्लिम समाज को बक़राईद के दिन कुर्बानी करने का आदेश दे दिया।

www.abulhasanalinadwi.org

दुरूद व सलाम हो इब्राहीम खलीलुल्लाह पर।
दुरूद व सलाम हो उनके पुत्र इस्माईल पर।।

'काबा'

इब्राहीम अ0 चले गये उस के बाद फिर आए और अल्लाह की इबादत के लिए एक घर बनाने का निर्णय किया क्योंकि घर तो बहुत से थे लेकिन ऐसा घर कोई नहीं था जिसमें अल्लाह की इबादत होती। इस्माईल अ0 ने भी अपने पिता के साथ अल्लाह का घर बनाने का निर्णय किया। और यह दोनों बाप–बेटे पहाड़ से पत्थर लाने लगे और दोनों मिलकर अल्लाह का घर बनाने लगे। इब्राहीम अ0 और इस्माईल अ0 घर बनाते जाते और अल्लाह से दुआ माँगते कि "ऐ रब तू हमारी इस मेहनत को स्वीकार कर ले। तू सुनने वाला और बड़ा जानकार है।" अल्लाह ने इब्राहीम अ0 और इस्माईल अ0 की दुआ को स्वीकार किया और काबा में बरकत दी। हम सब काबा की तरफ़ मुंह करके ही अपनी हर नमाज़ पढ़ते हैं। मुसलमान हज के समय काबा जाते हैं, वहाँ उसकी परिक्रमा करते हैं और नमाज़ पढ़ते हैं। अल्लाह ने काबे में बरकत दी और इब्राहीम अ0 और इस्माईल की जानिब से उसे कबूल किया।

दुरूद व सलाम हो इब्राहीम पर
दुरूद व सलाम हो इस्माईल पर
दुरूद व सलाम हो मोहम्मद पर

www.abulhasanalinadwi.org

बैतुल मक़दिस

इब्राहीम अ0 की एक दूसरी पत्नी भी थीं उनका नाम सारा था। सारा से इब्राहीम अ0 को एक और पुत्र था उनका नाम इसहाक़ था इब्राहीम अ0 शाम में रहे थे वहीं उनके पुत्र इसहाक़ रहते थे। इसहाक़ अ0 ने भी शाम में अल्लाह का घर बनाया जिस तरह उनके पिता इब्राहीम अ0 और भाई इस्माईल अ0 ने मक्का में बनाया था। शाम में जो अल्लाह का घर इसहाक़ अ0 ने बनाया उसी को बैतुल मक़्दिस कहते हैं। यही मस्जिदे अक़्सा है जिसके इर्द–गिर्द अल्लाह ने बरकत दी।

अल्लाह ने इसहाक़ अ0 की संतान में बरकत दी जैसा की इस्माईल अ0 की संतान में बरकत दी। उन्हीं की औलादों में बहुत से बादशाह और नबी हुए इन्हीं में इसहाक़ अ0 के पुत्र याकूब अ0 थे। वह भी नबी थे। याकूब अ0 के 12 पुत्र थे उन्हीं में यूसुफ़ बिन याकूब अ0 थे। यूसुफ़ अ0 का क़िस्सा भी बड़ा अजीब है जो कि कुरआन मजीद में है।

www.abulhasanalinadwi.org

'क़िस्सों में अच्छा क़िस्सा यूसुफ़ अ० का'

'अजीब सपना'

यूसुफ़ अ० के ग्यारह भाई थे। यूसुफ़ अ० बहुत ही खूबसूरत और बुद्धिमान बालक थे। उनके पिता याकूब अ० दूसरे भाईयों के मुकाबले उनको बहुत चाहते थे।

एक रात यूसुफ़ अ० ने अजीब सपना देखा। देखा कि 11 सितारे, चाँद और सूरज उनको सजदा कर रहे हैं। यूसुफ़ अ० बहुत छोटे थे, वह इस सपने को समझ न सके। यह बात उन की समझ में न आयी कि सितारे, चाँद और सूरज आदमी को कैसे सजदा कर रहे हैं। उन्होंने इस अजीब व ग़रीब सपने का ज़िक्र अपने पिता याकूब अ० से किया। वह कहने लगे कि "ऐ पिताजी! मैंने सपने में देखा है कि ग्यारह सितारे, चाँद और सूरज मुझे सजदा कर रहे हैं।" याकूब अ० नबी थे वह इस सपने को समझ गये और बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने यूसुफ़ अ० से कहा कि बेटे यह सपना बहुत अच्छा है। अल्लाह तुम्हारा सम्मान बढ़ायेगा और तुम्हारी एक प्रतिष्ठा होगी। यह

www.abulhasanalinadwi.org

सपना खुशख़बरी है तुम्हारे ज्ञान की और तुम्हारे नबी होने की। अल्लाह ने तुम्हारे दादा इसहाक़ और इब्राहीम पर बड़ा उपकार किया है वह तुम पर और याकूब की संतान तथा परिवार पर भी उपकार करेगा। याकूब अ० बहुत बूढे हो गये थे वह लोगों के स्वभाव को भली–भाँति जानते और पहचानते थे। उनको पता था कि शैतान इन्सान को किस प्रकार बहकाता है। उन्होंने अपने बेटे यूसुफ़ से कहा कि "ऐ मेरे बेटे! इस सपने का अपने भाईयों में से किसी से ज़िक्र करोगे तो वह तुम से ईर्ष्या (हसद) करने लगेंगे।"

भाईयों की ईर्ष्या (हसद)

यूसुफ़ की माता से उनका एक भाई और था जिसका नाम बिनयामीन था। याकूब अ० इन दोनों को बहुत चाहते थे। यूसुफ़ अ० के दूसरे भाई इन दोनों से हसद करने लगे थे। वे कहते थे कि हमारे पिता इन दोनों को हमसे ज़्यादा क्यों चाहते हैं? वह दोनों छोटे हैं और कमजोर हैं। फिर भी पिताजी को उनसे इतनी मुहब्बत क्यों हैं? वह हम लोगों को यूसुफ़ के समान क्यों नहीं चाहते? जबकि हम उन दोनों से अधिक बलवान और युवा हैं। यह बात समझ में नहीं आती। यूसुफ़ छोटे तो थे ही नासमझी में अपना सपना भाईयों को बता दिया। भाई सपना सुनकर क्रोध में आ गये और उन लोगों की जलन यूसुफ़ के प्रति और बढ़ गयी। एक दिन सब भाई इकट्ठा

www.abulhasanalinadwi.org

हुए और वे यूसुफ़ को क़त्ल करने अथवा किसी अपरिचित स्थान पर छोड़ आने की योजना बनाने लगे। वे कहने लगे कि यदि हमने यूसुफ़ को ठिकाने लगा दिया तो पिताजी फिर हमें उसी प्रकार चाहने लगेंगे। उन भाईयों में से एक कहने लगा कि उनको क़त्ल करने या दूर छोड़ आने से यह ज्यादा ठीक रहेगा कि उनको किसी कुएँ में डाल दिया जाये। कोई राही उनको निकाल लेगा। उसकी इस योजना पर सब सहमत हो गये।

'याकूब के पास उनका प्रतिनिधि मण्डल'

जब सारे भाई इस योजना पर सहमत हो गये तो वह सब याकूब अ0 के पास आये। याकूब अ0 यूसुफ़ अ0 के बारे में बहुत डरते थे। वह जानते थे कि उन के भाई उन से जलते हैं, उनसे मुहब्बत नहीं करते हैं। इस लिये याकूब अ0 यूसुफ़ अ0 के भाइयों के साथ नहीं भेजते थे यूसुफ़ अ0 बस अपने (माजाई) भाई के साथ खेलते थे और दूर नहीं जाते थे उनके सब भाई यह बातें जानते थे लेकिन उन्होंने बुराई का इरादा कर लिया था।

अपने पिता से कहने लगे कि आप हमारे साथ यूसुफ़ को खेलने क्यों नहीं भेजते। वह हमारे प्यारे भाई है। वह हमारे छोटे भाई है। आपको किस बात का डर है। हम सब एक बाप की संतान हैं और सब भाई आपस में खेलते–कूदते हैं। फिर हम सब क्यों न जायें और एक साथ खेलें–कूदें। हमने कल जाने का कार्यक्रम बनाया

www.abulhasanalinadwi.org

है। आप यूसुफ़ को हमारे साथ जाने की अनुमति दे दें वह हमारे साथ खेलें खायें। हम उनकी रक्षा का आपको विश्वास दिलाते हैं।

याकूब अ0 को यूसुफ़ के भाईयों के प्रति यह डर था कि कहीं अपने हसद और जलन के कारण यूसुफ़ अ0 को हानि न पहुँचाएँ। यूसुफ़ अ0 से उनके हसद की जानक़ारी याकूब अ0 को थी। इसी लिये याकूब अ0 यूंसुफ़ को उनके भाईयों के साथ कहीं नहीं भेजते थे। याकूब अ0 बुद्धिमान बुजुर्ग थे। यूसुफ़ के भाईयों ने जब उनके सामने यूसुफ़ को अपने साथ ले जाने की बात रखी तो उनको डर लगा और अपने पुत्रों से कहा कि मुझे इस बात का डर है कि तुम सब खेल–कूद में इतने व्यस्त हो जाओगे कि अपने छोटे भाई का ख़्याल नहीं रहेगा और उसे भेड़िया उठा ले जायेगा। बेटे बोले "यह कैसे हो सकता है।

हम सब साथ खेलेंगे। हम सब बलवान हैं। भेड़िये का उनको खाना असम्भव है।" इसके बाद याकूब अ0 ने यूसुफ़ अ0 को ले जाने की अनुमति दे दी।

जंगल की ओर

अनुमति मिल जाने पर सब भाई बहुत प्रसन्न हुए। दूसरे दिन वह यूसुफ़ अ0 को ले कर चल दिये और उनको जंगल के एक कुएँ में फेंक दिया। उन्हें अपने छोटे भाई यूसुफ़ को कूएँ में डालते समय जरा भी रहम नहीं आया। उन्होंने यह भी नहीं सोचा कि यूसुफ़ छोटा है और

www.abulhasanalinadwi.org

कुआँ गहरा और जंगल में है। उस पर क्या बीतेगी फिर पिताजी बूढ़े हैं उन पर क्या गुज़रेगी। वह इस कष्ट को सहन भी कर सकेंगे या नहीं उन्होंने बिना सोचे समझे यूसुफ़ को कुएँ में डाल दिया। अल्लाह यूसुफ़ अ० के साथ था। अल्लाह ने उनको उदास नहीं होने दिया बल्कि उनके साथ होने की खुशख़बरी दी और उनसे कहा कि यह भाई फिर तुम्हारे पास आयेंगे और जो कुछ उन्होंने तुम्हारे साथ किया है तुमको बतायेंगे और अपने इस कार्य पर लज्जित होंगे। उधर यूसुफ़ अ० को कूएँ में डालने के बाद सब एक जगह जमा हुए और सोचने लगे कि यूसुफ़ अ० के बारे में पिताजी से क्या कहेंगे। उनमें से कुछ ने तो यह कहा कि पिताजी को भेड़िये के खाने का भय पहले ही से था हम यही बात जाकर उनसे कह देंगे कि पिताजी आपने सच कहा था। यूसुफ़ अ० को वास्तव में भेड़िया खा गया। उनमें से कुछ बोलें कि ठीक है हम यही कह देंगे पर इसका क्या प्रमाण है? कहने लगे इसका प्रमाण ख़ून होगा। भाईयों ने बकरी का बच्चा जब्ह किया उसके ख़ून में यूसुफ़ अ० का कुर्ता रंग दिया। भाई इस बात से बहुत खुश हुए।

याकूब अ० के सामने उपस्थिति

रात को रोते हुए सब अपने पिताजी के पास आये और बोले "पिताजी! हम सब खेलने चले गये थे और सामान के पास यूसुफ़ को छोड़ दिया था। भेड़िया आया

www.abulhasanalinadwi.org

और यूसुफ़ को खा गया।" फिर उन्होंने अपने साथ लाये झूठे ख़ून में डूबी हुई क़मीज़ उनके सामने रख दी। याक़ूब अ० अपनी संतानों के मुक़ाबले अधिक बुद्धिमान तथा अनुभवी थे। याक़ूब अ० जानते थे कि इन मूर्खों को पता नहीं कि जब इन्सान को भेड़िया खाएगा तो उसका कपड़ा फाड़ देगा। और यूसुफ़ अ० की क़मीज़ कहीं से नहीं फटी है और केवल ख़ून में डूबी हुई है। फिर यह ख़ून भी झूठा है। मालूम होता है कि इन सब ने यह कहानी गढ़ी है। उन्होंने अपनी औलाद से कहा कि तुम्हारी बातों में सत्यता नहीं है। अब तो सब्र के अलावा क्या किया जा सकता है। याक़ूब अ० यूसुफ़ अ० को बहुत ज़्यादा चाहते थे। इसलिए उन्हें इस खबर से बड़ा रंज हुआ। लेकिन उन्होंने सब्र किया।

यूसुफ़ अलैहिस्सलाम कूएँ में

यूसुफ़ के भाई यूसुफ़ को कुएँ में डाल कर लौट आये और उनको कुएँ में अकेला छोड़ दिया। भाईयों ने खुशी में खाना खाया और आराम की नींद सोये। बेचारे यूसुफ़ कुएँ में अकेले पड़े थे। उनको न खाना मिला न पानी, और न सोये। भाईयों ने घर आ कर यूसुफ़ को भुला दिया मगर यूसुफ़ अ० भूखे प्यासे कुएँ में जाग रहे थे और सब को याद कर रहे थे। पिता भी उनकी याद में सो नहीं पा रहे थे। यूसुफ़ अ० उस अंधेरी रात में डरावने जंगल के अंधेरे कुएँ में पड़े थे।

www.abulhasanalinadwi.org

कुएँ से महल की तरफ़

उस जंगल से व्यापारियों का क़ाफ़िला जा रहा था। रास्ते में उनको प्यास लगी। वे पानी पीने के लिये कुआँ ढूंढने लगे। कुआँ दिख जाने पर उन लोगों ने अपने एक आदमी को पानी लाने भेजा। वह कुएँ के पास आया और पानी निकालने के लिये डोल डाला। जब उसने डोल खींचा तो वह अधिक वज़नदार था। कड़ी मेहनत के बाद उसने डोल को खींचा तो उसमें एक ख़ूबसूरत सा लड़का बैठा था। डोल में लड़के को पाकर उस आदमी को बड़ा आश्चर्य हुआ। वह चीख़ पड़ा अरे यह तो लड़का है। व्यापारी बहुत खुश हए और उस बच्चे को छुपा लिया और मिस्र ले आये। मिस्र के बाज़ार में उसको बेचने लगे और उसकी बोली लगाने लगे। आखिर मिस्र के अजीज ने उसे थोड़े से दिरहमों में ख़रीद लिया। मूर्ख व्यापारियों ने यूसुफ़ अ० को नहीं पहचाना और उनका सौदा कर दिया। मिस्र का अजीज यूसुफ़ अ० को खरीद कर महल ले आया और अपनी पत्नी से कहा इसका ख़्याल रखना। लड़का भला मालूम पड़ता है। शायद इससे हमें लाभ पहुँचे।

यूसुफ़ अ० की स्वामीभक्ति

जब अज़ीज की पत्नी ने यूसुफ़ को ख़्यानत (सम्भोग) पर उकसाया तो यूसुफ़ ने ऐसा करने से साफ इनकार कर दिया और कहा कि ऐसा कभी नहीं हो सकता। मेरे मालिक ने मुझे आदर दिया, मेरा सम्मान बढ़ाया और मेरे

www.abulhasanalinadwi.org

साथ अच्छा व्यवहार किया। ऐसे व्यक्ति के साथ मैं ख़्यानत नही कर सकता। मुझे अल्लाह का डर है। इस बात पर अजीज की बीवी बड़ी क्रोधित हुई और अपने शौहर से यूसुफ़ की शिकायत कर दी। अजीज समझदार था वह बात समझ गया कि औरत झूठी है। वह यूसुफ़ को जान चुका था और परख चुका था। उसने अपनी पत्नी से कहा कि तुम ग़लती पर हो। वास्तव में ऐसा नहीं है जो तुम कह रही हो। यूसुफ़ की ख़ूबसूरती के पूरे मिस्र में बड़े चर्चे थे। जो भी उन को देखता बस देखता ही रह जाता और देखने वाला कहता कि आदमी इतना हसीन नहीं हो सकता यह तो कोई फ़रिश्ता जान पड़ता है। अपनी असफलता पर उस औरत को बहुत क्रोध आया और यूसुफ़ अ० से बोली कि अब तो तुम को जेल की हवा खानी पड़ेगी। यूसुफ़ अ० ने कहा कि मुझे बदकारी के मुक़ाबले जेल जाना ज्यादा पसन्द है। कुछ दिन बाद अजीज ने यह जानते हुए भी कि यूसुफ़ अ० निर्दोष हैं उनको जेल भेज दिया।

जेल वालों को उपदेश

यूसुफ़ अ० जेल चले गये वहाँ उनको देख कर क़ैदियों को यह विश्वास हो गया कि यूसुफ़ अ० शरीफ़, शिक्षित और ज्ञानी नवयुवक हैं। इनके दिल में दया और नम्रता है। क़ैदी यूसुफ़ को बेहद चाहने और उनका आदर करने लगे थे।

www.abulhasanalinadwi.org

यूसुफ़ अ0 के साथ दो आदमी और जेल आये। उन दोनों ने यूसुफ़ अ0 को अपने सपने बताये जो उन्होंने देखे थे। एक ने कहा कि "मैंने देखा है कि मैं शराब निकाल रहा हूँ।" दूसरे ने कहा कि "मैं अपने सिर पर रोटियों का थाल उठाये हूँ और उसमें से चिड़ियाँ खा रही हैं।" दोनों ने अपने सपनों की ताबीर यूसुफ़ अ0 से जानना चाही। यूसुफ़ अ0 सपनों की ताबीर जानते थे इस लिये कि वह नबी थे। यूसुफ़ अ0 के समय में लोग अल्लाह को छोड़ कर दूसरों की पूजा करते थे और बहुत से देवता अपनी तरफ़ से बना रखे थे। कोई धरती का देवता था तो कोई समुद्र का। कोई खाने का देवता था तो कोई बारिश का था। यूसुफ़ उनकी मूर्खता पर हंसते थे। वह यह सब जानते थे और उनकी नासमझी पर रोया करते थे। यूसुफ़ अ0 ने उनको अल्लाह की तरफ़ बुलाने का फ़ैसला कर लिया। और अल्लाह चाहता था कि उसके दीन के उपदेश देने का काम जेल से ही शुरू हो और जेल वालों को उपदेश क्यों न दिया जाए वह भी तो आदम की औलाद हैं। जेल वाले भी तो अल्लाह के बंदे हैं। और उसकी रहमत के हक़दार यह भी उतने ही हैं जितने कि जेल से बाहर वाले। यूसुफ़ अ0 जेल में थे मगर आज़ाद थे। वह फ़कीर थे मगर सख़ी थे। नबी तो सच्ची और हक़ की बात हर जगह खुलेआम निडर होकर कहते हैं। नबियों ने हर समय में नेक और उदार कामों

की शिक्षा दी है और अच्छाई की तरफ़ बुलाया है।

यूसुफ़ की दानाई

यूसुफ़ अ0 सोचते थे कि आदमी अपने स्वार्थ के लिये खुशामद करता है पैरों पर गिरता है। कड़वी और सख़्त बातें सुनता है। यह दोनों क़ैदी मेरे पास अपने स्वार्थ के लिये आये हैं यदि मैं इन से कुछ कहूँगा तो यह सुनेंगे और उसको अवश्य (जरूर) सुनेंगे। यूसुफ़ अ0 ने तुरन्त ताबीर नहीं बताई, यूसुफ़ अ0 ने जल्दी नहीं की बल्कि कहा कि तुम्हारा खाना आने से पहले पहले तुम्हारे सपनों की ताबीर बता दूँगा। दोनों शान्त होकर बैठ गये। यूसुफ़ अ0 ने उनको बताया कि "मैं सपनों की ताबीर देना जानता हूँ और यह चीज़ मेरे रब ने मुझे सिखाई और बताई है इस पर दोनों प्रसन्न हुए और सन्तुष्ट हुए। इस अवसर का लाभ उठाते हुए यूसुफ़ अ0 ने अपना उपदेश आरंभ कर दिया।

ख़ुदा (ईश्वर) को एक मानने का उपदेश

उन दोनों से यूसुफ़ अ0 ने कहा कि यह वह ज्ञान है जो मेरे रब ने मुझे सिखाया है। यह ज्ञान अल्लाह हर किसी को नहीं देता। यह ज्ञान उसको नहीं मिलती जो ईश्वर के साथ किसी और को शरीक करे। क्या तुम जानते हो मेरे रब ने मुझे यह ज्ञान क्यों सिखाया है? इस लिये कि मैंने शिर्क वालो का रास्ता छोड़ दिया है। मैंने

www.abulhasanalinadwi.org

तो अपने बाप दादा इब्राहीम अ0, इस्हाक़ अ0 और याकूब अ0 के मार्ग को अपनाया है। हमारे लिये जाइज नहीं कि हम अल्लाह के साथ किसी को शरीक करें। यूसुफ़ अ0 ने कहा! ईश्वर को एक मानना केवल हमारे लिये ही आवश्यक नहीं है यह तो सारे समाज के लिये है। यह तो अल्लाह की हम पर दया है। परन्तु लोग ईश्वर का शुक्र अदा नहीं करते। यूसुफ़ अ0 ने अपनी बात रोक कर उन से पूछा कि तुमने हर चीज का एक अलग ईश्वर बना लिया है। कहते हो ख़ुश्की का ईश्वर, समुद्र का ईश्वर, रोजी का ईश्वर बारिश का ईश्वर। हम तो कहते हैं कि सारे संसार का ईश्वर एक अल्लाह है। तुम ही बताओ कि भाँति--भाँति के ईश्वर ज्यादा ठीक हैं या केवल एक जो शक्तिशाली है। कहाँ है स्थल का देवता और समुद्र का देवता? उन्होंने धरती पर क्या वस्तुएं बनायी है? या उन की साझेदारी आसमानों में है? देखो आकाश तथा धरती की ओर देखो मनुष्य की ओर यह सब अल्लाह ने पैदा किया है। मुझे दिखाओ उसके अतिरिक्त लोगों ने क्या पैदा किया है? तुम मुझे बताओ कि तुम्हारे भगवान ने क्या बनाया? इनमें कोई वास्वतिकता नहीं है। तुमने अपने स्वार्थ के लिये इनके नाम रख लिये हैं। तुमको जान लेना चाहिये कि बादशाहत केवल अल्लाह की है। धरती व आकाश उसी के हैं। इस संसार का चलाने वाला वही है। उसी के आदेश पारित होते हैं। तुम

www.abulhasanalinadwi.org

किसी और की पूजा मत करो, केवल अल्लाह की इबादत करो। यही धर्म ठीक और सीधा है लेकिन अधिकतर मनुष्य इस बात को नहीं समझते।

सपनों की ताबीर

यूसुफ़ अ0 ने नसीहत, दावत तथा उपदेश के बाद उन दोनों क़ैदियों को उनके सपनों की ताबीर बताना आरम्भ किया और कहा :– "तुम में से एक तो अपने मालिक को शराब पिलायेगा तथा दूसरे को फाँसी हो जायेगी और उसके सर को चिड़ियाँ खायेंगी।" यूसुफ़ अ0 ने पहले वाले से कहा कि तुम अपने मालिक से मेरी चर्चा करना। दोनों आदमी कारागार से छूट गये पहला आदमी बादशाह का साक़ी (शराब पिलाने वाला) हो गया और दूसरे को फाँसी हो गयी। पहले वाला (साक़ी) बादशाह से यूसुफ़ अ0 की चर्चा करना भूल गया। इसी कारण उनको कुछ वर्ष और कारागार में रहना पड़ा।

बादशाह का सपना

मिस्र के बादशाह ने एक विचित्र सपना देखा। उसने सपने में देखा कि सात मोटी और सात दुबली गायें हैं। सातों दुबली गायें मोटी गायों को खा रही हैं। उस ने सात हरी और सात सूखी बालियाँ देखीं इस सपने से बादशाह को बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने अपने दरबारियों से इसकी ताबीर जानने के लिये कहा तो दरबारियों ने

www.abulhasanalinadwi.org

उससे कहा कि चिंता की कोई बात नहीं है नींद में आदमी बहुत सी चीज़ें देख लेता है जिनका कोई महत्त्व नहीं होता है। इस तरह के सपने अधिकतर दिख जाते हैं। शराब पिलाने वाला बोला कि ऐसी बात नहीं है इस सपने की ताबीर मैं बता दूँगा। वह साक़ी यूसुफ़ अ० के पास आया और उनसे बादशाह का सपना बताया और उसकी ताबीर पूछी। यूसुफ़ अ० बड़े दयालु, दयावान और दानी थे। यूसुफ़ अ० ने उसको सपने की ताबीर बतायी और उसके साथ उससे बचने और सुरक्षित रहने के उपाय भी बताये। यूसुफ़ अ० ने उससे कहा कि सात वर्ष खेती करो और दाना बाली में ही छोड़ दो आवश्यकतानुसार उसमें से खाने के लिये लो। सात वर्ष बाद भयानक अकाल पड़ेगा तब जो तुमने बालियों में छोड़ा या जमा किया था उसी में से खाओ यह अकाल सात वर्ष तक पड़ेगा उसके बाद स्थिति ठीक होगी और लोग सुख की साँस लेंगे।

वह साक़ी वापस गया और बादशाह को उसके सपने की ताबीर बतायी।

यूसुफ़ के पास बादशाह का दूत

बादशाह ने अपने सपने की ताबीर तथा उसके उपाय सुने तो बड़ा प्रसन्न हुआ उसने पूछा यह सपने की ताबीर किसने बतायी है। वह कौन शरीफ़ व्यक्ति है जिसने हमें ताबीर के साथ-साथ तदबीर भी बतायी? साक़ी ने उत्तर

दिया यह मेरे मित्र यूसुफ़ हैं। उन्होंने ही मेरा सपना सुन कर मुझे आप का साक़ी होना बतलाया था। बादशाह का यूसुफ़ से मिलने को जी चाहा। बादशाह ने साक़ी से कहा कि उनको मेरे पास लेकर आओ मैं उनको अपने साथ रखूंगा।

यूसुफ़ का जाँच के लिये कहना

बादशाह का दूत यूसुफ़ अ0 के पास आया और उसने कहा कि बादशाह आपको बुला रहे हैं। यूसुफ़ अ0 यह नहीं चाहते थे कि वह केवल बादशाह के बुलाने पर कारागार से चले जायें और लोग यूसुफ़ अ0 पर उंगली उठायें और कहें कि यही यूसुफ़ है जो कल तक जेल में थे और जिन पर अज़ीज़ की पत्नी के साथ ख़्यानत करने का दोष लगा था यूसुफ़ अ0 बुद्धिमान थे ओर बहुत सूझ–बूझ के व्यक्ति थे। उन्होंने कोई जल्दबाजी नहीं दिखाई और जाने से केवल इसलिये इनकार कर दिया कि उन पर दोष लगाया गया। उसकी जाँच हो। अगर मैं निर्दोष पाया गया तभी मुझे रिहा किया जाये। उनके स्थान पर कोई दूसरा होता तो इस निमंत्रण का लाभ उठाता और जेल से आज़ाद हो जाता।

बादशाह ने वास्तविकता जानी और यह जान लिया कि यूसुफ़ अ0 निर्दोष हैं। और लोगों को भी यह बात मालूम हो गयी। इसके बाद यूसुफ़ अ0 बाहर आये तो बादशाह ने उनका बड़ा आदर किया।

www.abulhasanalinadwi.org

राज्य–उपज मंत्री

यूसुफ़ अ0 जानते थे कि लोगों में अमानतदारी बहुत कम हैं और उनमें ख़यानत बहुत बढ़ गई है। यूसुफ़ अ0 देख रहे थे कि मनुष्य अल्लाह के माल में किस प्रकार से घोटाला कर रहे हैं। यूसुफ़ अ0 को यह जानकारी थी कि धरती पर बड़े–बड़े भण्डार हैं लेकिन सरकारी लोग उसे नष्ट कर रहे हैं और उस में घोटाला कर रहे हैं। वे अल्लाह से नहीं डरते। वह देखते कि मनुष्य को खाने के लिये नहीं मिलता लेकिन सरकारी लोगों के कुत्ते और बिल्ली खाते हैं। वे अच्छा खाते और पहनते हैं परन्तु आम जनता भूखी और नंगी रहती है। इन भण्डारों से ग़रीब का कोई भला नहीं होता था। जो कर्मचारी भण्डारों का कार्य देख रहे थे वे यह भी जानते थे कि भण्डार कहाँ–कहाँ हैं तथा उनसे किस प्रकार लाभ उठाया जा सकता है।

भण्डारों के कर्मचारी उनमें से खूब खा रहे थे तथा घोटाला कर रहे थे। यह सब देखकर यूसुफ़ अ0 को कष्ट होता था। यूसुफ़ अ0 यह नहीं चाहते थे कि जनता का माल सरदार और पूंजीपति खायें। यूसुफ़ अ0 यह नहीं चाहते थे कि जनता भूखी मरे और पूंजीपति उनका माल हड़प कर लें। यूसुफ़ अ0 को सत्य बोलने में कोई लज्जा नहीं आती थी। भण्डारों का हाल और उन पर पूंजीपतियों का नियंत्रण तथा गरीबों की भुखमरी देख कर यूसुफ़ अ0 ने बादशाह से भण्डारों की देख–रेख का समस्त कार्य

www.abulhasanalinadwi.org

उनके नियंत्रण में देने अर्थात राज्य–उपज मंत्री बनाने की राय दी और कहा कि मैं इस कार्य को सही ढंग से चलाऊँगा। इस प्रकार यूसुफ़ अ0 मिस्र के राज्य–उपज के मंत्री हो गये उधर लोगों ने सुख की साँस ली इस पर यूसुफ़ ने अल्लाह का शुक्र अदा किया।

यूसुफ़ अ0 के भाईयों का आगमन

यूसुर्फ़ अ0 की सूचनानुसार समस्त मिस्र व शाम में अकाल के कारण भुखमरी थी। याकूब अ0 व शाम वालों को यह सूचना मिली कि जिसको भण्डारों का चार्ज मिला है वह बड़ा दानी, नेक व दयालु है। उसके पास लोग जाते हैं और राशन लेकर लौटते हैं। याकूब अ0 ने भी अपने पुत्रों को पैसा देकर राशन लाने हेतु मिस्र भेजा परन्तु उन्होंने बिनयामीन को उन लोगो के साथ जाने की अनुमति नहीं दी। यूसुफ़ अ0 के साथ जो घटना घट चुकी थी। उससे वह डर गये थे इस कारणवश बिनयामीन को अपने से दूर नहीं जाने देते थे। जब भाईयों का यूसुफ़ अ0 से मिलन हुआ तो वे यूसुफ़ अ0 को पहचान न सके। वे तो यही समझ रहे थे कि यूसुफ़ अ0 तो कुएँ में मर चुके होंगे परन्तु यूसुफ़ अ0 ने उनको अच्छी तरह पहचान लिया उनको देख कर दिल में कहा कि इन पागलों ने हमें मारने की योजना बनायी थी परन्तु अल्लाह ने हमारी रक्षा की। यूसुफ़ अ0 ने उनको पहचानते हुए भी कुछ नहीं कहा और न ही उनको लज्जित होने दिया।

www.abulhasanalinadwi.org

यूसुफ़ अ० अपने भाईयों के बीच

जब उनके राशन लेने की बारी आयी तो यूसुफ़ अ० ने उनसे पूछा कि तुम लोग कहाँ से आये हो? उन लोगों ने उत्तर दिया कि हम कनआन से आये हैं। फिर उनसे उनके पिता का नाम पूछा वे बोले हमारे पिता का नाम याकूब बिन इसहाक़ बिन इब्राहीम है। यूसुफ़ अ० ने फिर पूछा कि तुम लोगों के अतिरिक्त कोई और भाई भी है? उन लोगों ने उत्तर दिया कि हाँ एक बिनयामीन नाम का और है। यूसुफ़ अ० ने पूछा कि अपने साथ उसको क्यों नहीं लाये। वे कहने लगे कि पिताजी को उससे बहुत प्रेम हैं वे उसे अपने से जुदा नहीं कर सकते। यूसुफ़ अ० ने पूछा कि अपने से जुदा न करने का क्या कारण है क्या वह अभी बहुत छोटा है? वे बोले नहीं यह बात नहीं है हमारा भाई यूसुफ़ नाम का भी था। वह एक दिन हमारे साथ था। हम सब खेल में व्यस्त हो गये उसको सामान के पास छोड़ दिया उसी समय एक भेड़िया आया और उसको खा गया। यूसुफ़ अ० अपने दिल में हंसे लेकिन उन से कुछ नहीं कहा यूसुफ़ अ० के दिल में अपने भाई बिनयामीन से मुलाकात की इच्छा पैदा हुई। उधर अल्लाह ने याकूब अ० का दोबारा इम्तिहान लेने का इरादा हुआ। यूसुफ़ अ० ने उन लोगो को ग़ल्ला देने का आदेश दिया और उन लोगों से कहा कि तुम अपने उस भाई को मेरे पास लाओगे अगर उसे अगली बार न लाए तो यहाँ गल्ला न पाओगे।

यूसुफ़ अ० ने अपने आदमियों को हुक्म दिया कि उनका माल इनके सामान में छुपा कर रख दिया जाए अतः उनका माल उनके गल्ले में रख दिया गया।

याकूब अ० और उनके पुत्र

वे राशन लेकर घर लौटे और याकूब अ० से कहने लगे कि ऐ पिताजी जब हम पुनः राशन लेने जायें तो हमारे साथ बिनयामीन को भी कर दीजियेगा। नहीं तो हमें राशन नहीं मिलेगा क्योंकि भण्डार के मंत्री ने उनको साथ लाने का आदेश दिया है। आप उसको साथ कर दीजियेगा। हम उसकी रक्षा करेंगे। याकूब अ० ने पुत्रों से कहा "क्या वैसी ही रक्षा करोगे जैसी यूसुफ़ की की थी? क्या तुम्हारी बातों पर उसी प्रकार विश्वास कर लूँ जिस प्रकार यूसुफ़ के मामले में तुम पर किया था? यूसुफ़ के साथ जो कुछ तुम लोगों ने व्यवहार किया था उसको इतनी जल्दी भुला दिया। क्या तुम बिनयामीन का भी उसी तरह ख़्याल रखोगे जिस प्रकार यूसुफ़ का रखा था। अल्लाह ही रक्षा करने वाला है और वही रहम करने वाला भी है।"

राशन के साथ जब भाईयों ने उसकी रक़म भी रखी देखी तो वे बोल उठे पिताजी अज़ीज़ तो बड़ा नेक है। उसने राशन का दाम भी हमसे नहीं लिया हमारा सारा पैसा उसने लौटा दिया। आप अगली बार बिनयामीन को अवश्य भेजें ताकि उसके हिस्से का भी राशन आ जाये। याकूब अ० ने अपने पुत्रों से कहा कि मैं बिनयामीन

को तुम्हारे साथ उस समय तक नहीं भेज सकता जब तक तुम उसको वापस लाने का अल्लाह से अहद न कर लो। जब उन्होंने बिनयामीन को वापस लाने का अल्लाह से अहद कर लिया तो याकूब अ0 ने अपने पुत्रों से कहा कि जो कुछ भी हम कह रहे हैं अल्लाह उसका निगराँ है। इसके बाद याकूब अ0 ने अपने पुत्रों को नसीहत करने के लिये जमा किया वह बोले ऐ मेरे पुत्रों! तुम सब एक ही द्वार से वहाँ प्रवेश मत करना बल्कि अलग–अलग द्वार से प्रवेश करना।

बिनयामीन, यूसुफ़ अ0 के पास

पिता की आज्ञा का पालन करते हुए सब भाईयों ने अलग–अलग द्वारों से प्रवेश किया और यूसुफ़ अ0 के पास पहुँचे गये। यूसुफ़ अ0 ने जब बिनयामीन को देखा तो बहुत प्रसन्न हुए उनको अपना मेहमान बनाया व अपने घर उतारा। कुछ देर बाद बिनयामीन से कहा कि मैं तुम्हारा भाई यूसुफ़ हूँ। तो बिनयामीन सन्तुष्ट हो गया। कई वर्षों के बाद यूसुफ़ अ0 बिनयामीन से मिले थे। सब घर वालो, माता–पिता की ख़ैरियत जानी। यूसुफ़ अ0 का मन चाहा कि बिनयामीन उनके पास रह जायें ताकि उसे प्रतिदिन भेंट हो। घर की बातें हो। यूसुफ़ अ0 सोचने लगे कि बिनयामीन को कैसे रोका जाये। उनको तो कल जाना है और भाईयों ने पिताजी से उनको वापस लाने का वादा व अल्लाह से अहद किया है। बिना कारण बिनयामीन को रोका भी नहीं जा

www.abulhasanalinadwi.org

सकता अगर बिना कारण उनको रोका गया तो दुनिया कहेगी कि यूसुफ़ अ० ने एक कनआनी को बिना कारण क़ैद कर लिया है जो कि ठीक नहीं है। यह अन्याय होगा। यूसुफ़ अ० बुद्धिमान और समझदार थे उनके पास पानी पीने का एक कीमती बर्तन था। उन्होंने वह प्याला बिनयामीन के सामान में रखवा दिया। वह लोग जब रवाना होने लगे तो उनको रोका गया और कहा गया कि तुम लोगों ने चोरी की है। भाईयों ने आश्चर्य से पूछा क्या चोरी हो गया है और किसको चोर कह रहो हो? उन लोगों ने कहा कि बादशाह का कटोरा गायब है। जो ढूंढ कर लायेगा उसको पुरस्कार में एक ऊंटनी के बोझ भर गल्ला दिया जाए गा। भाई बोले आप कैसी बात कर रहे हैं क्या हम गड़बड़ी करने आये हैं। ख़ुदा की क़सम हम लोग चोर नहीं हैं। कहा कि ठीक है अगर तुम झूठे निकले तो तुम को क्या सज़ा दी जाये। भाईयों ने कहा कि जिसके सामान में वह वस्तु निकले उसको दंड के रूप में रोक लिया जाये। वह कटोरा बिनयामीन के सामान में से निकल आया। तब भाईयों को बड़ी लज्जा आयी परन्तु हठ्धर्मी से कहने लगे कि यदि बिनयामीन ने चोरी की है तो ऐसा हो सकता है क्योंकि इससे पूर्व इनके भाई यूसुफ़ अ० भी चोरी कर चुके हैं। यूसुफ़ अ० ने जब उनकी यह बात सुनी तो उनको इस झूठे आरोप पर आश्चर्य हुआ परन्तु उन्होंने इसको ख़ामोशी से सुना व क्रोधित नहीं हुए। भाईयों ने

www.abulhasanalinadwi.org

कहा ऐ बादशाह इसके पिता बहुत बूढ़े हैं आप हम लोगों में से किसी एक को अपने पास रोक लें। आप तो सबके साथ बड़ा एहसान करने वाले हैं। यूसुफ़ अ0 ने उनसे कहा कि यह कैसे हो सकता है कि अपराध कोई करे और दंड कोई और पाये। यह अन्याय होगा। इस प्रकार बिनयामीन यूसुफ़ अ0 के साथ रहे तथा भाई अपने घर लौट गये। यूसुफ़ अ0 लम्बे समय से अकेले रह रहे थे। परिवार में से किसी को देखा नहीं था आखिरकार बिनयामीन को अल्लाह ने उनसे मिला दिया। तो क्या वह उनको रोक न लेते कि उनको देखें और उनसे बात करें। क्या यह जुल्म है कि भाई भाई के पास रहे? कदापि नहीं कदापि नहीं।

याकूब अ0 के पास

भाईयों को चिन्ता हुई कि क्या मुंह लेकर अपने बाप के पास जायेंगे और उनसे क्या कहेंगे। एक बार वह यूसुफ़ अ0 के मामले में अपने पिता को कष्ट पहुँचा चुके हैं। आज फिर बिनयामीन के मामले में उनको मुसीबत में डालें यह अच्छा नहीं लगता। सबसे बड़े भाई ने तो बाप का सामना करने से इनकार कर दिया और अपने भाईयों से कहा कि तुम पिताजी के पास जाओ और कहो, पिता जी आप के बैटे ने चोरी की हम आपसे वही कह रहे हैं जो हमने देखा है और जाना है। वास्तविकता क्या है इसकी जानकारी हमें नहीं है। हमें छिपी बातो की जानकारी नहीं है। याकूब अ0 ने जब कहानी सुनी तो वह समझ

www.abulhasanalinadwi.org

गये कि इसमें अल्लाह की मस्लेहत है। अल्लाह फिर कोई परीक्षा ले रहा है। कल यूसुफ़ के लिये मुसीबत में पड़े और आज बिनयामीन के लिये कष्ट उठाना पड़ रहा है। अल्लाह दोहरी आजमाइश में कभी नहीं डालता। दो बच्चों का कष्ट नहीं देता। इसमें जरूर अल्लाह की कोई मस्लेहत है। वह बराबर अपने बन्दों को आज़माइश में नहीं डालता और अगर डालता है तो फिर बाद में उनको खुशी भी देता है और उन पर इनाम करता है। वह कहने लगे कि बड़ा बेटा मिस्र में ही रुक गया और उसने कनआन आने से इन्कार कर दिया। क्या मुझे तीन बेटों का कष्ट उठाना पड़ेगा? यह नहीं हो सकता। याकूब अ0 को सुकून हो गया और कहने लगे कि सम्भव है अल्लाह तीनों को सही सालिम मेरे पास लाये। वह ब्रड़ा दाना और जानकार है।

भेद का खुलना

याकूब अ0 मनुष्य थे उनके सीने में भी इन्सान का दिल था पत्थर दिल नहीं थे। जब यूसुफ़ अ0 की याद आती तो रंजीदा हो जाते, कहते हाए अफसोस यूसुफ़ पर पता नहीं यूसुफ़ किस हाल में है। परन्तु उनके बेटे उनको बुरा भला कहते वे उनसे कहते कि इस तरह तो आप यूसुफ़ को याद करते–करते मर जायेंगे। याकूब अ0 उनसे कहते तुम्हें इससे क्या! मैं अपनी शिकायत और कष्ट अल्लाह से कहता हूँ। तुम कहाँ उस बात को जानते हो जिसको मैं जानता हूँ याकूब अ0 जानते थे

www.abulhasanalinadwi.org

कि निराश होना कुफ्र है। उनको अल्लाह से बड़ी आशा थी।

याकूब अ0 ने अपने बेटों से मिस्र जाकर यूसुफ़ अ0 को तलाश करने का आदेश दिया कि वे यूसुफ़ अ0 को ढूंढने का प्रयत्न करें। निराश न हों। सब भाई तीसरी बार मिस्र गये और यूसुफ़ अ0 से जाकर मिले उन्हें अपनी विपदा सुनाई और उनसे सहायता माँगी। यूसुफ़ अ0 के दिल में मुहब्बत का तूफान उठा मगर रंजीदा भी हुए। अपने हृदय पर नियंत्रण न रहा दिल में आया कि मेरे बाप के बेटे हैं, नबियों की सन्तान हैं, एक बादशाह के सामने अपनी विपदा रखते हैं कब तक बात छुपाई जाए, कब तक इन का यह बुरा हाल देखा जाए। कब तक मैं अपने पिता को न देखूं यूसुफ़ अ0 अपने पर नियंत्रण न रख सके। और भाईयों से बोले कि तुम्हें पता है कि तुमने यूसुफ़ ओर उसके भाई के साथ क्या किया था? जब तुम्हारा अज्ञानता काल था? भाई जानते थे कि इस भेद को हमारे और यूसुफ़ के अतिरिक्त कोई तीसरा नहीं जानता। उनको यह अन्दाज़ा हो गया कि यही यूसुफ़ हैं। अल्लाह की कुदरत कि यूसुफ़ कुएँ में मरे नहीं और आज तक ज़िन्दा हैं। या सलाम यूसुफ़ ही मिस्र के अज़ीज़ है? सारे भण्डारों के मालिक है। वही हमको राशन दिलवाता है। उनको यक़ीन हो गया कि यही यूसुफ़ है। वह सब बोल पड़े "क्या आप ही यूसुफ़ हैं?" यूसुफ़ अ0 ने उत्तर दिया "हाँ मैं ही यूसुफ़ हूँ। और

www.abulhasanalinadwi.org

यह मेरा भाई बिनयामीन है। अल्लाह ने हम पर बड़ी दया की। जो अल्लाह से डरता है और सब्र करता है, ऐसे भले लोगों के भले कामों को अल्लाह अकारत नही करता।" भाईयों ने कहा "खुदा की क़सम अल्लाह ने आपको हम पर प्रधानता दी हम तो बड़े पापी हैं।" यूसुफ़ अ0 के साथ भाईयों ने जो कुछ भी किया उस पर यूसुफ़ अ0 ने उनको बुरा नहीं कहा बल्कि उनसे कहा कि जो कुछ तुमने हमारे साथ किया अल्लाह उसको क्षमा करेगा। वह सब से अधिक दया करने वाला है।

यूसुफ़ अ0 ने याकूब अ0 के पास भेजा

यूसुफ़ अ0 की याकूब अ0 से मिलने की लालसा ओर बढ़ गयी और क्यों न बढ़ती पिता को देखे और उनसे मिले एक लम्बा समय बीत गया था। अब जबकि भेद खुल गया है कैसे इन्तेजार करते। यूसुफ़ अ0 को खाना पानी कैसे अच्छा लगता जब कि उनके वालिद को न खाना अच्छा लगता था न पीना न सोना। यूसुफ़ अ0 की जुदाई के ग़म में रोते रोते आँखों की रोशनी भी जाती रही। भेद खुल जाने के बाद अल्लाह ने चाहा कि याकूब अ0 की आँखों को ठंडक पहुँचे। यूसुफ़ अ0 को इस बात का जब पता चला तो उन्होंने भाईयों को अपना कुर्ता दिया और कहा कि इसको ले जाओ और अब्बा के चेहरे पर डाल देना इससे उनके आँखों की रोशनी लौट आयेगी फिर तुम सब मेरे पास आ जाना।

www.abulhasanalinadwi.org

याकूब अ0 यूसुफ़ अ0 के पास

भाईयों ने यूसुफ़ अ0 का कुर्ता ले कर कनआन की दिशा में कूच किया। उधर याकूब अ0 को यूसुफ़ अ0 की खुश्बू महसूस होने लगी वह कहने लगे कि मुझे यूसुफ़ अ0 की खुश्बू आ रही है। घर वालों ने कहा खुदा की कसम आप वही पुरानी बातों को दोहराते हैं जिस में कोई सत्यता नहीं है। जबकि याकूब अ0 बिल्कुल सच बोल रहे थे। यूसुफ़ अ0 का कुर्ता जैसे ही याकूब अ0 के चेहरे पर डाला गया तुरन्त उनकी आँखों में रोशनी आ गयी। वह बोले कि मैं तुमसे कहता था कि जो कुछ मैं जानता हूँ वह तुम लोग नहीं जानते। पुत्रों ने कहा पिताजी हमसे भूल हुई हम बड़े पापी हैं। आप हमारे पापों की क्षमा के लिये दुआ करें। याकूब अ0 ने उनसे कहा कि ठीक है मैं तुम लोगों के पापों को क्षमा करने के लिये अपने रब से दुआ करूंगा वह पापों को क्षमा करने वाला और बड़ा दयालु है। याकूब अ0 सपरिवार मिस्र पहुँचे वहाँ उनका भव्य स्वागत हुआ। इन बाप बेटे के मिलन की खुशी का कोई अन्दाजा नहीं लगा सकता। मिस्र में वह दिन बड़ा मुबारक व दर्शनीय था। यूसुफ़ अ0 ने अपने पिता तथा माता को राज गद्दी पर बिठा दिया और सब ने यूसुफ़ अ0 को सजदा किया। इस अवसर पर यूसुफ़ अ0 ने कहा कि यह है उस सपने की ताबीर जो मैंने देखा था आज मेरे रब ने उसको साकार कर दिया। मैंने देखा था कि 11 सितारे, चाँद

www.abulhasanalinadwi.org

और सूरज मुझे सजदा कर रहे हैं यूसुफ़ अ0 ने अल्लाह का शुक्र अदा किया। याकूब अ0 और उनकी औलाद काफ़ी समय तक मिस्र में रही। याकूब अ0 और उनकी पत्नी का निधन भी मिस्र में ही हुआ।

अच्छा परिणाम

यूसुफ़ अ0 ने बड़ा साम्राज्य पाने के बाद भी अल्लाह की इबादत और उसका ज़िक्र नहीं छोड़ा। वह अल्लाह का ज़िक्र और उसी की इबादत करते थे। उसी से डरते व उसी का कानून लागू करते थे। उनको शासन का कोई लालच नहीं था। वह तो यह दुआ करते थे कि वह बादशाहों की मौत न मरें ताकि उनकी हालत बादशाहों जैसी न हो। वह तो चाहते थे कि नेक बंदों की तरह मरें ओर नेकी के साथ उठाये जायें। वह दुआ माँगते थे कि :– "ऐ रब तूने मुझे बादशाहत दी और सपनों की ताबीर बताने का ज्ञान दिया। ऐ आकाश और धरती के पैदा करने वाले तू ही मेरा दुनिया में और आख़िरत में वली और मददगार है मुझे मुसलमान मारना और नेकूकारों (नेकी करने वालों) से मिलाना।" अल्लाह ने उनको इस्लाम की हालत में मौत दी और उनके बाप, दादा इब्राहीम, इसहाक़ और याकूब से मिला दिया।

अल्लाह उन पर और हमारे नबी पर दुरूद व सलाम भेजे।

✦ ✦ ✦

www.abulhasanalinadwi.org

नूह अ० की कश्ती (नाव)

अल्लाह ने आदम की औलाद में बड़ी बरकत दी। उस में मर्द और औरतें बहुत हुई आदम का परिवार फैल गया और उन की संख्या अधिक हो गयी, संख्या इतनी ज्यादा हुई कि यदि आदम वापस संसार में आयें और देखें तो वह पहचान न सकें और यदि उन से कहा जाये कि यह सब आप की औलाद तथा आप का परिवार है तो उनको आश्चर्य हो और कहें कि "सुब्हानल्लाह क्या यह सब मेरी औलाद हैं? यह सब मेरा परिवार है?"

आदम की औलाद में लोग बड़े बलवान थे। उन्होंने रहने के लिये बहुत से घर बनाये वह खेती बाड़ी करते और ज़िन्दगी का लुत्फ (मज़ा) उठाते थे वह सब आदि बाप आदम के धर्म पर कायम थे अल्लाह की पूजा करते थे और उसकी पूजा में किसी को शामिल नहीं करते थे। वह सब एक उम्मत थे। उनका एक बाप है और उनका खुदा एक है।

www.abulhasanalinadwi.org

शैतान की जलन (हसद)

लेकिन शैतान को यह बात कहाँ पसन्द थी कि लोग बराबर अल्लाह की इबादत करें और यह उम्मत एक रहे और इन में मतभेद न हो यह नहीं हो सकता यह नहीं हो सकता है कि आदम की औलाद तो जन्नत 'स्वर्ग' में जाये और शैतान जहन्नम 'नर्क' में जाये। यह नहीं हो सकता यह नहीं हो सकता। उसने आदम को सजदा करने से इनकार कर दिया था अल्लाह ने उसे मलउन कहा और उसे दुत्कार दिया था। उस ने कहा क्यों न वह आदम की नस्ल से अपना बदला ले और उन को अपने साथ जहन्नम (नर्क) में ले जाये। ऐसा ही होना चाहिये और ऐसा ही होगा। "यह शैतान ने सोचा"

शैतान विचार

शैतान ने सोचा कि यदि लोगों को मूर्तियों की पूजा के लिये बुलाया जाये तो वह नर्क में जा सकते हैं और जन्नत में कभी दाखिल न हो सकेंगे। शैतान को इसकी जानकारी थी कि अल्लाह शिर्क के अलावा हर पाप माफ़ कर सकता है यदि वह क्षमा करना चाहे। इस लिये शैतान ने यह फैसला किया कि वह लोगों को शिर्क की दावत देगा जन्नत में उन को कभी दाखिल न होने देगा।

उस ने विचार किया कि इस का तरीका क्या हो। लोग अल्लाह की पूजा कर रहे हैं उन को बुतों की पूजा की दावत यदि दी जायेगी तो वह स्वीकार नहीं करेंगे।

www.abulhasanalinadwi.org

लोग भड़क भी जायेंगे और मारेंगे भी और कहेंगे कि "अल्लाह की पनाह" क्या हम अल्लाह के साथ किसी और को शरीक करें और बुतों की पूजा करें। शैतान यक़ीनन मरदूद है।

शैतान का बहाना

शैतान ने एक दरवाजा देख लिया जिस से लोगों के दिमागों में दाखिल हुआ जा सकता है। कुछ लोग थे जो लोग अल्लाह से डरते हैं और उस की इबादत "पूजा" रात दिन करते थे और उस का जिक्र सदैव करते रहते थे। वे अल्लाह से मुहब्बत करते थे और अल्लाह उन से मुहब्बत करता था और उन की दुआएं कबूल करता था और लोग उन बुजुर्गों से मुहब्बत करते थे और उनकी बुजुर्गी तसलीम करते थे। यह बाते शैतान खूब जानता था। पस शैतान लोगों के पास गया और उन नेक लोगों का जिक्र करने लगा जो मर गये थे। उन से पूछने लगा कि फलाँ व फलाँ तुम में कैसे थे?' लोगों ने जवाब दिया सुब्हानल्लाह! वह तो अल्लाह वाले थे, अल्लाह के वली थे। उन्होंने जब दुआ की अल्लाह ने कबूल की। उन लोगों ने जब अल्लाह से माँगा तो अल्लाह ने उन को अता किया।

महान पुरूषों की तस्वीरें

शैतान ने उन से पूछा कि उन के बिछड़ने का तुम्हे बड़ा सदमा (तकलीफ) होगा। वह कहते कि हाँ– उनके

www.abulhasanalinadwi.org

बिछड़ने का हम पर बहुत असर है। शैतान ने फिर उन से पूछा कि उन के लिये तुम्हारा प्यार "चाहत" कितनी है। वह बोलते कि बहुत ज्यादा है। शैतान ने उन से कहा कि यदि यह बात है तो तुम उनको 'प्रतिदिन' क्यों नहीं देखते वह जवाब देते यह कैसे हो सकता है वह तो मर चुके हैं। शैतान ने उन को समझाया कि तुम उन की तस्वीरें बनाओं और प्रतिदिन सुबह उन को देखा करो। शैतान की यह बात उन को पसंद आई और उन्होंने उन मरे हुए लोगों की तस्वीरें बनाकर रोज़ देखना शुरू (आरम्भ) कर दिया। वह उन की तस्वीर देखते और उनको याद करते।

तस्वीरों से मूर्तियाँ

अब लोगों ने तस्वीरों क़ो मूर्तियों में तबदील कर दिया और अधिक तादाद में उन लोगों की मूर्तियाँ बनाने लगे। उन को अपने घरों और मस्जिदों में रख दिया। वह अल्लाह की इबादत करते थे उस के साथ किसी को शरीक न करते थे। वह यह अच्छी तरह जानते थे कि यह मूर्तियाँ नेक लोगों की है और यह मूर्तियाँ पत्थर की हैं जिन में लाभ तथा हानि पहुँचाने की ताक़त नहीं। यह खाना किसी को नहीं दे सकते लेकिन उनसे बरकत लेते थे और उन का आदर करते थे इसलिये कि यह मूर्तियाँ नेक और अच्छे लोगों की थीं। मूर्तियों की तादाद बढ़ती गई। उनका आदर और अधिक होने लगा।

www.abulhasanalinadwi.org

अब जब भी कोई नेक आदमी मरता उस की मूर्ति बनाते और उसका वही नाम रख देते जिसकी मूर्ति होती थी।

स्टेचू से बुतों तक

यह लोग गुजर गये, उन के लड़कों ने अपने बाप दादा को मूर्तियों की अत्यधिक आदर करते और उनसे बरकत हासिल करते देखा था। उन्होंने यह भी देखा था कि उन के बाप दादा उनको चूमते चाटते थे और उन को छूते थे और उन के करीब दुआ करते थे और उन को देखा था कि उन के सामने अपने सर को झुकाते थे और उन के सामने शीश नवाते थे। बेटे अपने बाप दादा से आगे बढ़ गये। वह उन को सजदे करने लगे, उन से माँगने लगे और उन के नाम पर बली चढ़ाने लगे। इस प्रकार यह बुत (मूर्तियाँ) 'खुदा' भगवान हो गई और इन की लोग उसी प्रकार पूजा करने लगे जैसे वह पहले अल्लाह की पूजा करते थे ऐसे भगवानों की तादाद में बढ़ोत्तरी हुई और उनका नाम रखना शुरू कर दिया कि यह वद्द है यह सुवाअ है, यह यगूस है यह यऊक है और यह नस्र है।

अल्लाह का प्रकोप (क़हर)

अल्लाह उनकी इन हरकतों पर बहुत नाराज़ हुआ और उनपर लानत भेजी। अल्लाह उनसे नाराज क्यों न

www.abulhasanalinadwi.org

होता? क्या इसी लिये अल्लाह ने उन को पैदा किया है, क्या इसी लिये अल्लाह ने उन को खाना देता है कि वह अल्लाह की जमीन पर चलें और उस की नाशुक्री करें। अल्लाह का रिज़क़ खायें और उस के साथ किसी दूसरे को शरीक करें यह कितनी ज्यादती और ना–इन्साफी की बात है और यह कितना बड़ा जुल्म है। अल्लाह का कहर लोगों पर आया, वर्षा कम होने लगी पैदावार में कमी आ गई और नस्ल (वंश) भी कम हो गई फिर भी लोगों की समझ में यह बात नहीं आयी मगर लोगों ने इस काम को नहीं छोड़ा और न अल्लाह से तौबा की।

रसूल (अल्लाह का पैग़ाम लाने वाला)

अल्लाह ने चाहा कि उनके पास उन्हीं का एक आदमी भेजें जो उन से उनकी अपनी जबान में बात करे और उनको समझाये तथा नसीहत करे। बादशाह हर व्यक्ति से व्यक्तिगत रूप से कहाँ बात करते हैं और वह हर व्यक्ति को किसी कार्य को करने के आदेश कब देता है वह मनुष्य है हर व्यक्ति उन को देख सकता है और उनकी बातों को सुन सकता है लेकिन कोई भी न तो अल्लाह को देख सकता है और न ही उस का कलाम सुन सकता है। किसी में इस बात की कुदरत नहीं है लेकिन जब अल्लाह ही इस बात का इरादा कर ले। इसीलिये अल्लाह ने एक रसूल (दूत) भेजने का निश्चय किया ताकि वह लोगों से बात करे और उन सब को नसीहत करे उनको समझाये।

मनुष्य या फ़रिश्ता

अल्लाह ने चाहा कि रसूल इन्सान हो और उन्हीं में से हों उसको लोग पहचानते हों और उस की बात को समझें। यदि रसूल फ़रिश्ता होगा तो लोग कहेंगे कि भाई कैसे काम चलेगा हम तो आदमी हैं और वह फ़रिश्ता है। हम खाते–पीते हैं। हमारा परिवार है। हम अल्लाह की इबादत कैसे करें और जब रसूल इन्सान हो तो वह कहेगा कि मैं खाता–पीता हूँ मेरा भी परिवार है। मैं अल्लाह की इबादत करता हूँ तो फिर तुम उसकी इबादत क्यों नहीं करते। और यदि रसूल (दूत) फ़रिश्ता होता तो कहते कि तुमको तो भूख व प्यास लगती नहीं है। तुम न तो बीमार पड़ते हो और न तुमको मौत आ सकती है। तुम हमेशा अल्लाह की इबादत करते हो और उस को याद करते हो। हम तो इन्सान हैं हमें भूख व प्यास भी लगती है, हम बीमार भी पड़ते हैं और हमें मौत भी आती है। हम हमेशा अल्लाह की इबादत और उस को याद कैसे कर सकते हैं। जब रसूल इन्सान होगा तो वह उन से यह कहेगा कि मैं तुम्हारी तरह हूँ। मुझे भी भूख–प्यास लगती है मैं भी बीमार होता हूँ और मुझे भी मरना है मैं अल्लाह की इबादत और उसको याद करता हूँ तुम क्यों अल्लाह की इबादत और उसको याद नहीं करते। उस वक्त लोगों से जवाब न बन पड़ेगा और कोई उज्र न कर सकेंगे।

www.abulhasanalinadwi.org

नूह अलैहिस्सलाम रसूल

अल्लाह ने नूह अलैहिस्सलाम को उनकी क़ौम में रसूल बनाकर भेजा उन की क़ौम में बहुत से मालदार और सरदार थे। लेकिन अल्लाह ने अपने काम के लिये नूह अलैहिस्सलाम को चुना अल्लाह ने किसी अन्य का चयन नहीं किया क्योंकि वह जानता था कि उस का कार्य कौन ठीक ढंग से कर सकता है। नूह अलैहिस्सलाम बड़े भले और साधारण इन्सान थे नूह अलैहिस्सलाम बड़े इज्जतदार और बुद्धिमान थे। नूह अलैहिस्सलाम बड़े दयालु नसीहत करने वाले, सत्यवादी और अमानतदार, दूसरों को समझाने वाले थे अल्लाह ने नूह अलैहिस्सलाम को चुना और उनको वह्य की कि अपनी क़ौम को उन पर दर्दनाक अज़ाब आने से पूर्व डराइये। नूह अ0 क़ौम के सामने खड़े हुए और अपनी क़ौम से कहा कि मैं तुम्हारे पास रसूल बनाकर भेजा गया हूँ मेरी बात मानो कामयाब होगे।

क़ौम ने क्या जवाब दिया

नूह अ0 ने जब बस्ती वालों से कहा कि मैं तुम में रसूल बनाकर भेजा गया हूँ तो बस्ती वालों में से कुछ खड़े हुए और बोले कि तुम नबी कब हो गये। कल तक तो तुम हमारे साथ थे और आज रसूल होने का दावा कर रहे हो! नूह अ0 के कुछ मित्रों ने कहा कि यह तो हमारे साथ बचपन में खेलता था हर दिन हम में बैठता–उठता था

www.abulhasanalinadwi.org

इस का नबुव्वत कब मिल गई दिन में या रात में? पूंजीपतियों और घमंडियों ने कहा कि क्या अल्लाह को और कोई दूसरा नहीं मिला। क्या सब लोग मर गये हैं क्या पूरी क़ौम में एक गरीब ही इस कार्य के लिये मिला?

(मूर्खों) जाहिलों ने कहा कि यह तो तुम जैसा आदमी है यदि अल्लाह चाहता तो फरिश्ता उतार सकता था। हमने तो अपने बाप–दादा से ऐसा कुछ नहीं सुना। कुछ लोग यह भी कहने लगे कि इज्जत शोहरत और सरदारी हासिल करने के लिये नूह अ० ने यह तरीका अपनाया और यह 'नाटक' रचा है।

नूह और उनकी बस्ती वाले

नूह अ० की क़ौम जानती थी कि बुतों की पूजा सही है और बुतों की पूजा करना समझदारी है उनकी राय थी कि जो बुतों की पूजा नहीं करते वह मूर्ख और गुमराह हैं। रास्ता भटके हुए हैं वह कहते थे कि जब हमारे बाप–दादा बुतों की पूजा करते थे तो हम क्यों न करें।

नूह अलैहिस्सलाम जानते थे कि बुतों की पूजा गुमराही और सरासर बेवकूफी है। वह जानते थे कि जिन बाप दादा की यह जिक्र करते हैं वह सब भटके हुए थे। हज़रत आदम जो सब बापों के बाप हैं बुतों की पूजा नहीं करते थे वह केवल एक अल्लाह की इबादत करते थे। यह क़ौम गुमराही और बेवकूफी में पड़ी हुई है। यह पत्थर की पूजा करते हैं और उस अल्लाह की इबादत नहीं

www.abulhasanalinadwi.org

करते जिसने उन्हें पैदा किया है। "नूह" अलैहिस्सलाम खड़े हुए और बुलंद आवाज़ में कहा कि 'ऐ लोगो! अल्लाह की इबादत करो। उसके अलावा कोई दूसरा रब नहीं है। यदि तुम अपनी हठधर्मी पर कायम रहे तो मुझे तुम पर बड़े दिन (कियामत) के अजाब का खतरा है।

बस्ती के सरदारो ने कहा कि हम तुम्हें खुली गुमराही में देख रहे हैं और भटका हुआ देखते है। हज़रत 'नूह' ने कहा कि मैं गुमराह नही हूँ। मैं तो अल्लाह की तरफ़ से रसूल बनाकर भेजा गया हूँ मैं तुमको अपने रब का पैगाम पहुँचाने आया हूँ मैं तुम को नसीहत करता हूँ और मैं अल्लाह की ओर से वह जानता हूँ जो तुम नही जानते हो।

कमीनों (बुरे लोग) की पैरवी

हज़रत नूह अ० ने बड़ी कोशिश की कि उन की बस्ती वाले ईमान ले आयें अल्लाह की इबादत करने लगें और बुतों की पूजा करना छोड़ दें, लेकिन थोड़े लोगों को छोड़कर कोई ईमान नहीं लाया। जो थोडे ईमान लाए वह अपने हाथों से काम करते थे और हलाल रोजी खाते थे। पूंजीपतियों ने अपने धन और घमण्ड के कारण नूह की बात मानने से इन्कार किया और ईमान नहीं लाये। अपने बच्चों और अपनी दौलत में ऐसे फँसे कि आखिरत की सोच दिल से निकल गई और फिर कहने लगे कि हम शरीफ हैं और यह लोग कमीने हैं, जलील हैं। जब "नूह" अलैहिस्सलाम दावत देते तो वह कहते कि क्या हम तुम

www.abulhasanalinadwi.org

पर ईमान लायें? जब कि तुम्हारी पैरवी कमीने लोग कर रहे हैं। तुम्हारे साथ गरीब हैं। और यह भी कहते कि इन गरीबों, मिसकीनों को निकाल दो। हज़रत नूह अ0 ने उनकी यह बात मानने से इन्कार कर दिया और कहा कि इन मोमिनों को मैं निकालने वाला नहीं हूँ मेरा दरवाजा कोई बादशाह का दरवाजा नहीं है। मै तो तुमको होशियार करने आया हूँ।

नूह अलैहिस्सलाम जानते थे कि यह गरीब मिसकीन सही तौर पर ईमान लाये हैं और यह इसमें मुखलिस हैं। अल्लाह नाराज होगा यदि मैंने इनको निकाला तो फिर उनकी कोई मदद न कर सकेगा। हज़रत नूह अ0 ने क़ौम से कहा कि "ऐ मेरी क़ौम! यदि मैंने इनको निकाला तो फिर अल्लाह के मुकाबले में मेरी मदद कौन करेगा?"

दौलत वालों की दलील (तर्क)

पूंजीपति कहते कि नूह अ0 जिस बात की दावत देते हैं उसमें न तो कोई भलाई है और न वह हक है। इसलिये कि हमारा तजुर्बा (अनुभव) कहता है कि हम हर खैर में आगे हैं। खाने की अच्छी किस्में हमारे लिये हैं। अच्छे से अच्छा कपड़ा पहनना हमारे भाग्य में है। हर चीज़ हमारी सेवा के लिये है हम देखते हैं कि शहर में कोई खैर (लाभ की वस्तु) हमारे पास आने में गलती नहीं करता हम को छोड़ कर आगे नहीं जाता यदि यह दीन (धर्म) अच्छा होता तो मिसकीनों और गरीबों से पहले

www.abulhasanalinadwi.org

हमारे पास आता अगर इस में भलाई होती तो हमसे पहले यह गरीब लोगों के पास न जाता।

नूह अलैहिस्सलाम की दावत

नूह अलैहिस्सलाम ने लोगों को समझाने की बड़ी कोशिश की और उनसे कहा कि लोगों! मैं तुमको डराने आया हूँ अल्लाह की इबादत करो और उससे डरो और उसकी मानों अल्लाह तुम्हारे पापों को माफ़ कर देगा और एक समय तक तुम को अजाब से मुहलत देगा बेशक अजाब का वक्त आ जाता हैं तो फिर नहीं रुकता। क्या अच्छा होता कि तुम इस को समझते। अल्लाह ने बारिश रोक दी उस की नाराजगी बढ़ गयी उसने इनकी खेती की पैदावार कम कर दी और उनकी सन्तानों में भी कमी कर दी। नूह अलैहिस्सलाम ने अपने लोगों से कहा कि लोगो! यदि तुम अल्लाह पर ईमान ले आओ तो अल्लाह तुम से खुश हो जायेगा और तुम्हारे यह सारे दुख–दर्द दूर कर देगा। अल्लाह वर्षा करेगा तुम्हारे रोजगार और तुम्हारी सन्तान में बरकत देगा। नूह अलैहिस्सलाम ने अपने लोगों को अल्लाह की तरफ़ बुलाया और उनसे कहा कि क्या अल्लाह को नहीं पहचानते तुम्हारे चारो तरफ़ उसकी निशानियाँ ही तो है तुम इस पर विचार क्यों नहीं करते। कब तुम्हें समझ आयेगी। तुम्ही बताओ आसमान किसने बनाया? चाँद में रोशनी किसने पैदा की? और सूरज को रौशन किसने किया? और जमीन को फर्श

www.abulhasanalinadwi.org

किसने बनाया? सोचो! और विचार करो। लेकिन वह लोग मूर्ख थे वह ईमान नहीं लाये उलटा, उनपर यह असर हुआ कि जब नूह अलैहिस्सलाम अल्लाह की दावत देते वह अपने कानों में अंगूलियाँ डाल लेते। बताओ वह आदमी कैसे बात समझेगा जो सुनेगा नहीं और वह कैसे सुनेगा जो सुनना नहीं चाहे।

नूह अलैहिस्सलाम की दुआ

एक समय तक नूह अलैहिस्सलाम ने अपने लोगों को दावत दी और 950 वर्ष तक क़ौम को नसीहत करते रहे लेकिन नूह अलैहिस्सलाम की क़ौम ईमान नहीं लाई और मूर्ति पूजा नहीं छोड़ी। कब तक नूह अलैहिस्सलाम उनके ईमान लाने का इन्तेजार करते, कब तक ज़मीन पर हो रहे बिगाड़ को देखते और कब तक मूर्ति पूजा बरदाश्त करते। कब तक यह देखते रहते कि खायें तो अल्लाह का और पूजा दूसरों की करें। नूह को गुस्सा क्यों न आता इन बातों पर। जितना सब्र किया कोई कर नहीं सकता। 950 वर्ष उन्होंने सब कुछ सहन किया।

आखिर अल्लाह की वह्य नूह अलैहिस्सलाम पर आई कि जिन को ईमान लाना था ला चुके अब यह लोग ईमान नहीं लायेंगे। "वह्य" (ईशवानी) के बाद हज़रत नूह ने एक बार फिर कोशिश की और उनको ईमान लाने को कहा उनकी क़ौम ने उनको जवाब दिया कि ऐ नूह तुम अब तक हम से लड़ते रहे और इस लड़ाई झगड़े में

www.abulhasanalinadwi.org

दिन प्रतिदिन बढ़ोत्तरी हो रही है। रोज की चिक–चिक से अच्छा है कि तुम वह ले आओ जिससे तुम हमको डराया करते हो यदि तुम सच्चे हो।

नूह अलैहिस्सलाम अपने लोगों से बिल्कुल नाउम्मीद हो गये और उनको अल्लाह के लिये गुस्सा आया और उन्होंने बद–दुआ की कि ऐ अल्लाह! इस धरती पर काफ़िरों में से किसी को न छोड़ना और न बचाना।

सफीना 'बड़ी कश्ती'

अल्लाह ने नूह अलैहिस्सलाम की दुआ कुबूल की और उनकी क़ौम को डूबाने का फैसला किया लेकिन नूह अलैहिस्सलाम और उनकी क़ौम के मोमिनीन को बचाने का भी फैसला किया। नूह अलैहिस्सलाम को अल्लाह ने एक बड़ी कश्ती बनाने का आदेश दिया। नूह अलैहिस्सलाम ने कश्ती बनाना आरम्भ किया। क़ौम ने उनको यह काम करते देखा तो उनको एक मशगला हाथ लग गया और उन का मज़ाक़ "खिल्ली" उड़ाने लगे और यह कहते "अरे यह क्या नूह? तुम कब से बढ़ई हो गये? हम तुमसे पहले ही कहा करते थे कि देखो इन नीचे लोगों में मत उठो–बैठो। लेकिन तुमने हमारी बात नहीं मानी। तुम बढ़ई और लोहारों में बैठने लगे बढ़ई हो गये यह जो कश्ती तुम बना रहे हो इस को कहाँ चलाओगे। ऐ नूह तुम्हारी बातें सब की सब अजीब है। अब बताओ यह कश्ती रेत में चलेगी या

www.abulhasanalinadwi.org

पहाड़ पर चढ़ेगी। समुद्र यहाँ से बहुत दूर है। क्या इसे जिन उठाकर ले जायेगा" या इसको बैल खीचेगे? नूह अलैहिस्सलाम यह सब बातें सुनते और सब्र करते रहे। इस से भी अधिक सख्त बातें उन्होंने सुनी और सब्र किया लेकिन नूह अलैहिस्सलाम उनको शर्मो-हया (लज्जा) दिलाते हुए यह कहते कि जैसे तुम आज हमारा मजाक उड़ा रहे हो ऐसे ही कल हम तुम्हारा मजाक उड़ायेंगे।

तूफान

अल्लाह की पनाह- अल्लाह का वादा आ पहुँचा तूफानी और मूसलाधार बारिश हुई। और बहुत बारिश हुई ऐसा लगता था कि जैसे आसमान में छेद हो गये वह पानी को रोक नही पाता, धरती से पानी उबला और बह पड़ा। हर तरफ़ पानी फूट रहा था और बह रहा था यहाँ तक कि पानी ने सब को हर तरफ से घेर लिया।

अल्लाह ने नूह अलैहिस्सलाम को वह्य की "हुक्म दिया" अपने साथ चरिन्द और परिन्द का एक-एक जोड़ा (नर-मादा) साथ ले लें। इस लिये कि तूफान ऐसा होगा जिस से ईन्सान और हैवान का बचना मुमकिन नहीं होगा। नूह अ० ने वही किया जिसका उन्हें हुक्म मिला था। उनकी कश्ती में वह लोग सवार हुए जो उनकी कौम में ईमान लाये थे। उसके साथ चरिन्द व परिन्द्र का एक-एक जोड़ा था। पहाड़ों के बराबर मौजे मारती पानी की लहरों में कश्ती चलने लगी। कौम

www.abulhasanalinadwi.org

अपने को बचाने के लिये ऊँची–ऊँची जगहों और टीलों पर चढ़ने लगी इस अजाब से बचने के लिये कहीं स्थान नहीं मिला। लेकिन आज कहीं पनाह नहीं सिवाय अल्लाह के।

नूह अलैहिस्सलाम का बेटा

नूह अलैहिस्सलाम का बेटा काफिरों के साथ था। जब नूह अलैहिस्सलाम ने उसको तूफान में घिरा पाया तो बेटे से कहने लगे आओ हमारे साथ कश्ती में सवार हो जाओ और काफिरों के साथ मत रहो। उसने जवाब दिया कि मैं तो पहाड़ पर चढ़ जाऊंगा वहाँ मुझे पानी से नजात मिल जायेगी। हज़रत नूह अ0 ने उससे कहा कि आज केवल वह बच सकता है। जिसको अल्लाह बचाना चाहे। इन दोनों के बीच मौज आई और उनके बेटे को डुबो दिया।

हज़रत नूह अ0 को अपने बेटे के डूबने का बड़ा दुःख था और क्यों न होता आखिर उनका बेटा था। हज़रत नूह ने सोचा कि वह डूबने से तो न बच सका कियामत में वह जहन्नम की आग से तो बच जाये। वह जानते थे कि जहन्नम की आग पानी से कहीं अधिक सख़्त होगी और आखिरत का अजाब ज्यादा तकलीफ देने वाला होगा।

अल्लाह ने वादा किया है उनके परिवार के बचाने का और अल्लाह का वादा सच्चा है। उन्होंने अपने बेटे के लिये अल्लाह से दुआ की।

www.abulhasanalinadwi.org

वह तुम्हारे परिवार का नहीं था

नूह अलैहिस्सलाम ने अल्लाह को पुकारा और कहा कि ऐ अल्लाह मेरा बेटा मेरे परिवार में से है और तेरा वादा सच्चा है और आप बहुत अच्छे हाकिम है लेकिन अल्लाह इन्सान को नहीं देखता वह तो कर्मों को देखता है। अल्लाह मुशरिक के लिये किसी की शफाअत (सिफारिश) स्वीकार नहीं करता चाहे वह नबी के परिवार का हो और चाहे वह नबी का बेटा ही क्यों न हो।

अल्लाह ने हज़रत नूह अ0 से कहा कि तुम्हारा बेटा तुम्हारे परिवार का नहीं था। उसके कर्म अच्छे नहीं थे। तुम मुझ से ऐसी माँग मत करो जिसकी तुम्हें जानकारी नहीं ऐसी जाहिलाना बातों से बचो। नूह अलैहिस्सलाम को इसका एहसास हुआ और तौबा की और कहने लगे ऐ अल्लाह मैं तुझसे ऐसी बातों की माँग पर तेरी पनाह माँगता हूँ। जिसकी मुझे जानकारी नहीं। यदि तूने मुझे क्षमा नहीं किया मुझ पर कृपा नहीं की तो मैं बड़े नुकसान में रहूँगा।

तूफान के बाद

अल्लाह ने मुशरिकीन को डुबाने का निश्चय किया और यह कार्य पूरा हो गया। वर्षा रुक गयी पानी नीचे चला गया और कश्ती जोदी पहाड़ पर सही सालिम आ लगी तो कहा गया बुरा हो जालिमों का। अब नूह अ0 तुम भी सलामती से उतरो। नूह अ0 और कश्ती वाले कश्ती

www.abulhasanalinadwi.org

से उतर कर खुश्की पर चलने फिरने लगे।

नूह अलैहिस्सलाम की कौम "काफ़िर" तबाह व बरबाद हो गई उनकी तबाही पर न तो आसमान रोया और न जमीन।

अल्लाह ने हज़रत नूह अ0 की औलाद को बड़ी बरकत दी वह जमीन पर फैल गई और जमीन भर गई। उन में कौमे हुई, बादशाह हुए, सम्राट हुए, ऋषिमुनी, नबी और पैगम्बर हुए।

आलमो में नूह अलैहिस्सलाम पर सलामती हो।

आलमो में नूह अलैहिस्सलाम पर सलामती हो।।

www.abulhasanalinadwi.org

नूह अलैहिस्सलाम के बाद 'हज़रत हूद अलैहिस्सलाम'

अल्लाह ने नूह अलैहिस्सलाम की सन्तान में बरकत दी और वह जमीन में फैल गयी। उन्हीं में एक कौम आद भी थी। उस कौम के मर्द बड़े जियाले मजबूत और बलवान थे। उनके बदन बिल्कुल फौलादी थे। वह सब पर भारी पड़ते थे। वह किसी से नहीं डरते थे, उनसे सब डरते थे।

कौम आद को हर चीज में अल्लाह ने बरकत दी थी। सारा मैदान उनके ऊँटों, बकरियों तथा घोड़ो से भर जाता था। उनके घर लड़को से भरे पड़े थे। आद की भेड़, बकरी तथा ऊँट जब चरने बाहर निकलते बड़ा अच्छा लगता था। इसी प्रकार जब आद के बच्चे सुबह खेलने घर से निकलते थे बड़ा अच्छा लगता था। आद की जमीन हरी--भरी थी, उसमें चश्में और नहरें थी। बागात तथा पार्क थे जिससे आद की जमीन की खूबसूरती बढ़ गीई थी।

www.abulhasanalinadwi.org

आद की नाशुक्री 'अल्लाह का एहसान न मानना'

लेकिन आद ने अल्लाह की इन नेअमतों, बरकतों पर कभी शुक्र अदा नहीं किया। उन्होंने "हज़रत नूह अ0 की कौम पर जो अजाब आया और" जो कुछ उनके बारे में अपने पुर्खों, माता–पिता से सुना था। उस को भुला दिया और जो निशान उन्होंने स्वयं देखे उससे सबक नहीं लिया। वह यह भूल गये कि किस कारण नूह अ0 की कौम पर अल्लाह ने अजाब भेजा था।

वह वैसे ही मूर्तियों की पूजा करने लगे जैसे नूह अ0 की कौम मूर्तियों की पूजा करती थी।

वह अपने हाथों से पत्थर की मूर्तियाँ बनाते और तराश्ते थे फिर उनकी पूजा करते थे और उनको सजदा करते थे। वह अपनी आवश्यकताएं उनके सामने रखते थे उनसे माँगते थे और उनके नाम की बली चढ़ाते थे वह बिल्कुल नूह अलैहिस्सलाम की कौम के नक्शे कदम पर चलने लगे। वह मूर्ख हो गये उनकी अकलें (बुद्धि) उनको मूर्तियों की पूजा से नहीं रोक सकीं। दीन धर्म के मामले में वह दुनिया के बेवकूफतरीन (महामूर्ख) लोग थे।

कौम आद की बगावत

आद की ताकत उनके लिये मुसीबत बन गयी और लोगों पर बोझ हो गयी। केवल इसलिये कि उनका अल्लाह पर ईमान और आखिरत पर यकीन नहीं था।

फिर क्या चीज उनको जुल्म, अत्याचार और बगावत 'सरकशी' से रोकती। लोगों पर जुल्म करने से यह कैसे रूकते। वह अपने से अधिक बलवान ताकतवर किसी को नहीं मानते थे और न उनको इसकी चिन्ता थी कि जो जुल्म वह कर रहे है। उनपर उनकी पकड़ होगी और उसका हिसाब उनको देना होगा वह बिल्कुल जंगली हो गये थे। जहाँ हर बड़ा छोटे पर इख़्तियार रखता है और ताकतवर और बलवान अपने से कमजोर को मार डालता है।

जब क्रोध में आ जायें तो पागल हाथी की तरह हो जाते थे जो हर उस चीज को मार डालता है जो उसके रास्ते में मिले। वह जब किसी से जंग करते उसकी फसल व खेती बाड़ी को तबाह 'नष्ट' कर देते थे। वह जब किसी गाँव व शहर में दाखिल होते तूफान मचा देते थे। हर एक की बेइज्जती करते, इज़्ज़तदार लोगों को जलील बनाते और उनकी पगड़ी उछालते थे। छोटे लोग उनकी इस आदत के कारण उनसे डरते थे और उनसे भागते थे और उनसे छुपते फिरते थे। यह ताकत, यह घमण्ड उनके लिये वबाले जान बन गया। इसलिये कि न तो उनको अल्लाह का डर था और न मरने के बाद की जिन्दगी पर भरोसा था।

आद के महल

कौमे आद के पास काम भी कुछ अधिक नहीं था सिवाये खाने, पीने और खेल–कूद के। उनमें से कुछ तो

www.abulhasanalinadwi.org

वह थे जो बड़े–बड़े महल बनवाने में गर्व महसूस करते थे। कुछ केवल बंगलों को काफी समझते थे। उनकी दौलत और उनका फन इसी गारा मिट्टी और पत्थर में बरबाद हो रहा था।

कोई जगह खाली नज़र आती उस पर एक आलीशान महल या बंगला निर्माण कर लेते थे और निर्माण ऐसा कराते गोया उनमें उनको हमेशा रहना और कभी मरना नहीं है।

बहुत से बेचारे ऐसे भी थे जिनका न तो खाने के लिये खाना, पहनने के लिये कपड़ा और न रहने तथा सर छिपाने के लिये घर था। और कुछ के पास घर थे जिनमें कोई रहने वाला नहीं था खाली पड़े थे जो उनके महलों को देखता उसको यह यकीन हो जाता कि इस कौम को आखिरत पर यकीन और ईमान नहीं है।

हूद रसूल बनाकर भेजे गये

अल्लाह ने चाहा कि इस कौम में एक रसूल भेजे क्यों कि अल्लाह जमीन में गड़बड़ी को पसन्द नहीं करता वह यह भी नहीं चाहता कि उसके बन्दे काफिर हों। कौमे आद अपनी बुद्धि का प्रयोग नहीं करती थी, सिवाये खाने–पीने और खेल–कूद के कामों के।

वह मूर्ख थे इसलिये बुद्धि का प्रयोग दीन–धर्म में नहीं करते थे वह दुनिया के मामले में तो बड़े बुद्धिमान थे लेकिन दीन–धर्म के मामले में वह बेवकूफ थें। पत्थरों की

www.abulhasanalinadwi.org

पूजा करते थे। अल्लाह ने चाहा कि उनमें एक रसूल भेजे जो उनको सीधे रास्ते पर लाये। अल्लाह ने चाहा कि रसूल उन्हीं में से हो जिसको वह पहचानते हों और उसकी पूरी बात उनकी समझ में आये अल्लाह ने कौमे आद के एक शरीफ घर में पैदा होने वाले आदमी हज़रत हूद को चुना जिनकी परवरिश अच्छे वातावरण और नेक लोगों में हुई।

हूद अलैहिस्सलाम की दावत 'तबलीग़'

हज़रत हूद ने अपनी कौम को दावत दी और कहा कि ऐ कौम अल्लाह की पूजा करो। उसके सिवाये कोई अन्य पूजा के योग्य नहीं है। ऐ कौम पत्थरों की पूजा क्यों करते हो। उस अल्लाह की पूजा क्यों नहीं करते जिस ने तुम्हें पैदा किया है। ऐ कौम यह पत्थर जिनको कल तुमने तराशा था आज तुम उसकी पूजा कर रहे हो। तुम्हें क्या हो गया है? तुम उस की पूजा क्यों नहीं करते जिसने तुम्हें जन्म दिया और जो तुम्हें खाने को देता है और जिसने तुम्हारे परिवार, तुम्हारी दौलत, तुम्हारी खेती बाड़ी और नस्ल में बरकत दी और तुम्हें हज़रत नूह अ0 की कौम के बाद इस जमीन पर जानशीन बनाया और तुम्हें बलवान बनाया और तुम्हारे बदन को ताकत दी। इस सब का बदला तो यह था कि तुम केवल अल्लाह की पूजा करते। तुम देखो कि एक कुत्ता जिस को तुम हड्डी डालते हो वह तुम्हारा घर नहीं छोड़ता और तुम्हारे साथ साये

www.abulhasanalinadwi.org

की तरह हर समय लगा रहता है।

क्या तुमने देखा कि उस कुत्ते ने अपने मालिक को छोड़ दिया हो और किसी दूसरे के घर चला गया हो। तुम बताओ कि किसी जानवर ने पत्थर की पूजा की है। क्या किसी जानवर ने किसी पत्थर को सजदा किया है। फिर तुम क्यों कर रहे हो?

इन्सान जानवर से भी अधिक जलील है। क्या इन्सान जानवर से भी गया गुजरा है।

कौम का जवाब

कौम तो खाने–पीने, खेल–कूद में मगन थी और दुनियावी जिन्दगी से सन्तुष्ट थी। इस कारण हूद अलैहिस्सलाम की बातें सुनने का उन्हें समय नहीं था और वे बड़े तंग दिल हो गये थे। हज़रत हूद से कहने लगे कि ऐ हूद तुम क्या कहना चाहते हो? हूद तुम चाहते क्या हो? तुम्हारी बातें समझ में नहीं आ रही हैं। उनमें से कुछ कहते कि हूद तो बेवकूफ़ और पागल है।

जो दोबारा हज़रत हूद ने कौम के सामने इस्लाम की दावत दी तो उनके शरीफ और इज्जतदार लोग बोले कि "ऐ हूद हमें तो तुम बेवकूफ नज़र आते हो और तुम्हारी बातें गलत और झूठी मालूम पड़ती है।"

"ऐ कौम मूर्ख मैं नहीं हूँ, मैं तो संसार के पैदा करने वाले की तरफ से रसूल बनाकर भेजा गया हूँ। मैं तो अपने पैदा करने वाले की तरफ से तुम्हें नसीहत करने आया हूँ।"

हूद अलैहिस्सलाम की दानाई और कोशिश

हज़रत हूद बराबर अपनी कौम को नसीहत करते रहे और उनको बुद्धिमानी तथा विनम्रता से अल्लाह की तरफ बुलाते रहे। हज़रत हूद ने अपनी कौम से कहा कि 'ऐ कौम मैं तो कल तक तुम्हारा भाई और मित्र था क्या तुम मुझे नहीं पहचानते हो।'

ऐ मेरे भाई– मुझसे डरते क्यों हो, मुझसे भागते क्यों हो। मैं तुम्हारी दौलत में से कुछ नहीं ले रहा हूँ मैं तो तुमसे किसी बात की माँग नहीं कर रहा हूँ, मुझे तो मेरे काम का बदला अल्लाह देगा।

ऐ मेरी कौम! यदि तुम अल्लाह पर ईमान ले आओगे तो तुम्हें डर किस बात का। खुदा की कसम यदि तुम ईमान ले आओ तो अल्लाह तुम्हारे माल में जरा सी भी कभी नहीं करेगा। बल्कि अल्लाह तुम्हारे रिज़क़ में बरकत देगा और तुम्हें अधिक ताकतवर तथा बलवान बनायेगा।

ऐ कौम तुम्हें मेरी रिसालत पर ताज्जुब क्यों है। अल्लाह एक एक से बातें नहीं करता। अल्लाह एक एक को किसी कार्य के करने का आदेश नहीं देता। वह हर एक से मखातिब होकर नहीं कहता कि यह करो यह मत करो।

अल्लाह तो हर कौम से ही किसी आदमी को भेजता है। जो उनसे बेतकल्लुफ बातें करें और उनको नसीहत कर सके। अल्लाह ने मुझे रसूल बनाकर भेजा है। मैं तुम से बातें भी कर रहा हूँ और तुम्हें नसीहत भी कर रहा हूँ।

इसमें आश्चर्य की क्या बात है। अल्लाह ने अपना पैगाम उस आदमी के जरिये भेजा जो तुम में से है। वह तुम्हें डराने और समझाने आया है। उसकी बात सुनो और समझो।

हूद का ईमान

कौम आद को कुछ जवाब नहीं बन पड़ा और उनके समझ में नहीं आया कि हज़रत हूद को क्या उत्तर दें। लेकिन आजिज़ आकर बोले कि ऐ हूद हमारे भगवान तुम से नाराज हो गये इस लिये तुम मूर्ख हो गये हो। हमारे ईश्वरों की तरफ से तुम पर वबाल आया है। हज़रत हूद बोले कि यह पत्थर की मूर्ति न तो किसी को लाभ पहुँचा सकती है और न हानि। यह पत्थर की मूर्ति न तो बात कर सकती है और न सुन सकती है। और न उनमें देखने की ताकत है। भलाई व बुराई इन के वश में नहीं है। और न ही उनमें लाभ और हानि पहुँचाने की ताकत है। और ऐसे ही तुम भी किसी के लिये भलाई बुराई का इख्तियार नहीं रखते हो, और न मुझे लाभ हानि का इख्तियार रखते हो मैं तो तुम्हारे भगवानों पर न तो विश्वास रखता हूँ और न उन से डरता हूँ। मुझे इन बातों से कोई मतलब नहीं जो तुम करते हो तुम्हारा दिल जो चाहे वह करो मैं उस से भी डरता नहीं हूँ मुझे अपने पैदा करने वाले पर पूरा भरोसा है जो तुम्हारा भी रब है और मेरा भी। हर चीज उसके वश में है। एक पत्ता भी उसकी आज्ञा बिना गिर नहीं सकता, हिल नहीं सकता।

www.abulhasanalinadwi.org

आद की दुश्मनी

आद ने हज़रत हूद की तबलीग व नसीहत सुनी लेकिन ईमान नहीं लाये। हज़रत हूद की ताकत, उनकी दानाई व नसीहत बेकार गई कौम ने उल्टा हज़रत हूद से कहा कि – 'ऐ हूद इन बातों का तुम्हारे पास क्या सुबूत है तुम्हारे केवल नसीहत से अपने पुराने भगवानों को नहीं छोड़ सकते। क्या हम अपने उन भगवानों की पूजा छोड़ दें जिन की पूजा हमारे पूर्वजों ने की है' और कहने लगे ऐसा हो ही नहीं सकता और 'ऐ हूद तुम हमारे माबूदों पर विश्वास नहीं रखते उन पर ईमान नहीं लाते तथा उन से नहीं डरते हम भी तुम्हारे ईश्वर पर ईमान नहीं लाते और न उनके अजाब की हमें परवाह है। बहुत बार हम तुम से अजाब के बारे में सुन चुके हैं। कहाँ है वह अजाब और कब आयेगा वह ऐ हूद?

हज़रत हूद ने कहा कि इसकी जानकारी केवल अल्लाह को है। मैं तो केवल तुमको उसके अजाब से डराता हूँ। आद ने कहा कि हम उस अजाब के इंतेजार में हैं और हमें उस अजाब के देखने का बड़ा शौक है।

इनकी इस ढिटाई पर हज़रत हूद को बड़ा आश्चर्य हुआ और उनकी बदबख्ती और मूर्खता पर अफसोस किया।

अजाब

आद प्रतिदिन बारिश का इन्तेजार करते प्रतिदिन

www.abulhasanalinadwi.org

आकाश की ओर देखते लेकिन उनको बादल का एक टुकड़ा भी नज़र नहीं आता। उनको वर्षा की आवश्यकता थी, बारिश का बड़ा शौक था। एक दिन उन्होंने बादल देखे बहुत खुश हुये कि आज बादल आया है। खुशी में चीख पड़े कि यह बादल बरसेगा–यह बादल बरसेगा, खुशी में नाचने लगे और एक दूसरे को पुकारने लगे कि बादल आया यह बरसेगा लेकिन हज़रत हूद समझ गये कि अजाब आ पहुँचा, हज़रत हूद ने कौम से कहा कि अरे मूर्खों यह बारिश का बादल नहीं है। इन बादलों में हवा है और इसमें बड़ा दर्दनाक अजाब है और फिर ऐसा ही हुआ। सख्त हवा चली इतनी सख्त हवा कि लोगों ने कभी न देखी थी और न सुनी। तूफानी हवा चली जिसने पेडों को जड़ से उखाड़ फेंका, घरों को मिसमार कर दिया, जानवरों को एक स्थान से दूर ला फेका। रेगिस्तान की धूल उड़ी, दुनिया अंधेरी हो गयी कोई चीज़ नज़र नहीं आ रही थी। उनके दिलों में डर बैठ गया, घरों में घुस गये और दरवाजे अन्दर से बन्द कर लिये, बच्चे माओं से चिमट गये लोग दीवारों से चिमट गये और लोग घरों में घुस गये। बच्चे चीख़ने और चिल्लाने लगे, औरतें रोने लगीं और चिल्लाने लगी, और मर्द दुआ करने और पनाह माँगने लगे। गोया कहने वाला कह रहा था कि 'आज वही बच सकता है जिसको अल्लाह चाहे।' यह तूफान सात रात और आठ दिन लगातार आया कौम मर

www.abulhasanalinadwi.org

गयी, पेड़ गिरकर जमीनबोस हो गये। यह अ़जीब दृश्य था। लोग मरे पड़े थे उनके जिस्मों को चिड़ियाँ खा रही थीं और मकान उजड़ गये जिसमें अब उल्लू का बसेरा था।

अल्लाह ने हूद और उनपर जो ईमान लाये, महफूज़ रखा और कौमे हूद को उनकी सरकशी और कुफ्र के कारण बरबाद कर दिया।

कौमे आद ने अपने पैदा करने वाले का इन्कार किया। कौमे हूद के लिये दूरी हो बद–बख़्ती हो।

www.abulhasanalinadwi.org

'समूद की ऊँटनी'

आद के बाद

जिस प्रकार नूह अलैहिस्सलाम की कौम के वारिस आद थे ऐसे ही आद के वारिस समूद थे। समूद पूरी तरह आद के नक़्शे क़दम पर चल रहे थे जैसे कौमे आद, कौमे नूह के नक्शे कदम पर चले थे। समूद की जमीन भी खूबसूरत थी, हरियाली थी, बाग व पार्क थे, ऐसे बागात थे जिसके नीचे से नहरें बहती थीं।

खेती बाड़ी करते थे और उनको इमारतों का शौक था, सनअतो हिरफत और अक्ल में आद की तरह थे वह पहाड़ों को काटकर बड़े आलीशान मकानों का निर्माण करते और पत्थरों पर खूबसूरत नक्शो निगार बनाते थे। पत्थर का उन्होंने काम किया और अपनी बुद्धिमानी और कारीगरी के गुण से उन्होंने उससे वह सब कुछ बनाया जो इन्सान ढंग से बनाता है। जब कोई व्यक्ति शहर में प्रवेश करता तो वह दंग रह जाता। उनके बड़े अजीब पहाड़ों के बराबर ऊँचे–ऊँचे महल देखकर ऐसा मालूम

www.abulhasanalinadwi.org

होता था कि इन महलों का निर्माण जिन्नों ने किया है इन्सानों ने नहीं। दीवारों पर फूल बूटे ऐसे बनाते गोया मौसमे–बहार ने उसको उगाया हो।

अल्लाह ने समूद को हर चीज से नवाजा उनके लिये धरती में अल्लाह ने बड़ी बरकत उतारी और अल्लाह ने हर चीज के दरवाजे समूद पर खोल दिये। आकाश से वर्षा होती। धरती उनके फूल पौधों और खेती से लह–लहाती। उनके बागात फलों से पटे होते अल्लाह ने उनके रिज़क़ और निर्माण में बड़ी बरकत दी थी

समूद की नाशुक्री

इन सारी नेयमतों पर समूद ने अल्लाह का न तो कभी शुक्र अदा किया और न अल्लाह की इबादत की। बल्कि और अल्लाह को भुला दिया और उनकी सरकशी, ना फरमानी और नाशुक्री और बढ़ गयी। अल्लाह ने उनको जो दिया था उस पर यह सोच कर खुश होते कि हम से अधिक कोई बलवान नहीं और न कोई हम से अधिक ताकतवर है। वह सोचते थे कि हमें दुनिया में सदैव रहना है मरना नहीं और वह अपने महलों और बागों में हमेशा रहेंगे। वह सभी सोचते कि मौत इन पहाड़ों में आ नहीं सकती और उनके महलों तक पहुँचने के लिये उसको रास्ता भी नहीं मिलेगा। शायद वह ऐसा इसलिये सोचते थे कि नूह अलैहिस्सलाम की कौम वादी में थी इसीलिये वह डूब गयी। आद तबाह व बरबाद

www.abulhasanalinadwi.org

इसलिये हुए कि वह नर्म जमीन में थे हम खौफ और मौत से सुरक्षित स्थान में हैं।

बुतों की पूजा

यह बात उनके लिये काफी नहीं थी उन्होंने पत्थरों को तराशा, और बुतों की पूजा करने लगे।

पत्थरों की पूजा इसी अन्दाज से करते जिस अन्दाज से उनसे पहले आद और कौमे नूह करती थी।

अल्लाह ने उनको पत्थरों का बादशाह बनाया और वह अपनी मूर्खता के कारण पत्थरों के गुलाम हो गये। अल्लाह ने उनको इज़्ज़त दी और पाक रिज़्क दिया लेकिन उन्होंने अपने को जलील किया और मनुष्य की बेइज़्ज़ती की।

अल्लाह तो किसी पर जुल्म नहीं करता लेकिन इन्सान अपने ऊपर खुद जुल्म करता है। आश्चर्यजनक बात यह है कि पत्थर जिसको अपने हाथों से तराशा और जो न किसी बात को स्वीकार करते हैं और उनमें इन्कार करने की शक्ति है उनके सामने झुकते हैं और उनसे माँगते हैं।

क्या कोई बलवान एक कमजोर की पूजा कर सकता है। क्या कोई सरदार अपने गुलाम को सजदा कर सकता है। फिर क्यों इन्होंने अल्लाह को भुला दिया और अपने को भूल गये। इन्होंने अल्लाह की इबादत करने से इन्कार कर दिया अल्लाह ने उनको जलील किया।

सालेह अलैहिस्सलाम

अल्लाह ने चाहा कि उन्हीं में से एक रसूल भेजें जैसे कि अल्लाह ने कौमे नूह और कौमे आद में भेजा था। अल्लाह जमीन में गड़बड़ी–फसाद नहीं चाहता। वह यह भी नहीं चाहता कि उसके बन्दे कुफ्र औ शिर्क करें। कौमे समूद में नेक, अच्छे व्यवहार और अच्छे चरित्र का एक युवा था। उसका नाम साले था। सालेह का परिवार शरीफ था और वह खुद बुद्धिमा थे। यह अच्छे और भले युवक थे हर व्यक्ति उनकी तारीफ करता था और सब उनके बर्ताव, चरित्र और उनके स्वभाव से प्रभवित थे। लोग उनकी मिसाल देते थे कि भाई यह सालेह है। इनकी अपनी शान है, बान है और आन है देखना यह आगे बड़ा धनवान होगा, शरीफ होगा। इसके हसीन और खूबसूरत बागात और महल होंगे इनके पिता यह सोचकर कितने खुश होंगे कि उनके सपूत ने अपनी सूझ–बूझ और बुद्धिमानी से यह धन कमाया। लोगों में जब निकलेगा तो आन–बान और शान से घोड़े पर सवार होगा और नौकरों चाकरों तथा गुलामों की एक फौज होगी। लोग उसको सलाम करेंगे उसका आदर करेंगे और उस पर सब को गर्व होगा और यह बात बड़े हर्ष की होगी कि इसमें धन दौलत के सब गुण और अच्छाइयाँ हैं लेकिन अल्लाह ने इसके बिल्कुल खिलाफ इरादा किया अल्लाह ने उनको नुबुव्वत देना चाहा उनकी कौम में उनको नबी

बनाकर भेजना चाहा ताकि वह अपनी कौम को सीधा और सही रास्ता दिखलायें। कौम को अंधेरे से रोशनी में लायें। इससे बढ़कर इज्जत और मान सम्मान की और क्या बात हो सकती है।

हज़रत सालेह की दावत

हज़रत सालेह ने बुलन्द आवाज में पुकार कर कहा कि ऐ कौम अल्लाह की इबादत करो उसके अतिरिक्त और कोई इबादत के लायक़ नहीं है।

हज़रत सालेह की कौम के धनवान खेल–कूद, खाने पीने में मसरूफ थे। बुतों की पूजा करते और किसी तरफ नहीं देखते थे। हज़रत सालेह अ0 की दावत उनको अच्छी नहीं लगी।

उनको इस पर गुस्सा आ गया और कहने लगे कि यह कौन है। उनके सेवकों ने कहा कि यह सालेह हैं। फिर वह बोले कि यह कहते क्या हैं? सेवको ने कहा कि यह कहते हैं कि अल्लाह की इबादत करो। उसके सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं है। वह यह भी कहते हैं कि अल्लाह तुम्हें मरने के बाद फिर जिन्दा करेगा। और तुम्हारे कर्मो का फल देगा। और रसूल होने का दावा करते हैं और कहते हैं कि अल्लाह ने मुझे मेरी कौम का रसूल बनाकर भेजा है।

धनवान इस बात पर हंसे और कहने लगे कि यह बड़ा मिस्कीन है। भला यह बताओ कि यह कैसे रसूल हो

www.abulhasanalinadwi.org

सकता है। इसके पास न तो महल है और न कोई बाग। इसके पास खेती बाड़ी भी नहीं और न इसके पास खजूर के बागात हैं। यह रसूल कैसे हो सकता है?

धनवानों ने देखा कि कुछ लोग सालेह की दावत को कुबूल करने वाले हैं तो उनको अपनी सरदारी खतरे में पड़ती नज़र आयी वह उनसे कहने लगे कि यह तो तुम्हारी तरह इन्सान है जो तुम खाते हो यह खाता है, जो तुम पीते हो यह पीता है। यदि तुम ने अपने ही तरह के आदमी की बात मानी तो तुम को बड़ा घाटा होगा। क्या यह मुमकिन है कि तुम मर जाओगे मिट्टी हो जाओगे, तुम्हारी हड्डियाँ सड़ जायेगीं, तुम को फिर जिन्दा किया जायेगा। कितनी अजीब बात है जिसका यह वादा करते हैं हमारी यह जिन्दगी जिसमें जी रहे हैं और जिसमें हम मर रहे हैं हम दोबारा उठाये जायेंगे। यह सालेह ईश्वर पर झूठी बाते कहता है हम तो इस की बात पर विश्वास नहीं कर सकते।

हमारा ख्याल गलत निकला

हज़रत सालेह की बात उनकी कौम ने नहीं मानी अल्लाह की नाफरमानी की और उसपर ईमान नहीं लाये। सालेह अ० ने उनको जब नसीहत की और बुतों की पूजा से रोका तो कहने लगे कि ऐ सालेह! तुम तो बहुत अच्छे और नेक लड़के थे हमारा तो यह ख्याल था कि हम लोगों में तुम बड़े आदमी होगे और शरीफ होगे। हमारा

ख्याल था कि तुम फलाँ व्यक्ति की तरह होगे लेकिन तुम वैसे नहीं निकले। तुमने हमें बड़ा ना उम्मीद किया। तुम्हारी आयु के लड़के अपनी सूझबूझ से आज बड़े आदमी बने हुये हैं। ऐ सालेह! तुम ने गरीबी का रास्ता अपना कर हमारी आशाओं पर पानी फेर दिया और हमें बड़ा निराश किया। तुम्हारे पिता भी गरीब व मिस्कीन थे तुम्हारी माता भी मिस्कीन थीं हमने तुम से बेकार की अच्छी आशा रखी। हज़रत सालेह ने कौम की यह बातें सुनी तो उनको बेहद अफसोस हुआ। हज़रत सालेह जब अपनी कौम के पास से गुजरते तो उनकी कौम कहती कि अल्लाह सालेह के पिता पर रहम फरमाये। इसने कैसे अपने बेटे को बरबाद किया है।

साहले की नसीहत

हज़रत सालेह इसके बावजूद बराबर अपनी कौम को नसीहत करते रहे हैं और अपनी कोशिश से अपनी कौम को अल्लाह की तरफ बुलाते रहे और कहते, "ऐ मेरे भाई– क्या तुम यह समझते हो कि यहाँ हमेशा रहोगे? क्या तुम यह समझते हो कि तुम इन महलों में सदैव रहोगे? क्या तुम समझते हो कि तुम्हारे यह बागात, पार्क और नहरें हमेशा रहेंगी और तुम उनके फल इत्यादि सदैव खाते रहोगे?"

क्या तुम हमेशा पहाड़ों को काटकर मकान बनाते रहोगे। हरगिज, हरगिज ऐसा नहीं हो सकता। बताओ

www.abulhasanalinadwi.org

तुम्हारे माता–पिता फिर क्यों मर गये। वह तो महलों में रहते थे उनके तो बाग वगैरा थे उनके पास तो खेती बाड़ी थी वह भी तो पहाड़ काटकर मकान बनाते और उनमें रहते थे लेकिन यह सब बेकार हुआ इससे उनको कोई लाभ नहीं मिला। उनको जब मौत आयी मर गये पनाह का कोई रास्ता नहीं मिला। ऐसे ही तुम भी मरोगे।

अल्लाह तुम्हें फिर दोबारा जिन्दा करेगा और तुमसे इन नयमतों के बारे में पूछा जायेगा जो तुम्हें दुनिया में उसने दी हैं।

मुझे तुम से कोई बदला नहीं चाहिये

हज़रत सालेह ने अपनी कौम से कहा कि ऐ मेरे भाई! तुम मुझसे क्यों भाग रहे हो तुम्हें मुझसे क्या डर है? मैं न तो तुम्हारा माल हड़प करना चाहता हूँ और न ही मुझे तुम से कुछ चाहिये।

मैं तो केवल तुम्हें नसीहत करता हूँ और अपने रब का पैगाम तुम तक पहुँचाता हूँ मुझे इस का कोई बदला नहीं चाहिये। इसका बदला तो मुझे मेरा पैदा करने वाला देगा।

मेरे भाईयो मेरी बात क्यों नहीं मानते? मैं तो तुम्हें नसीहत करने वाला हूँ। तुम उन लोगों की बात मानते हो जो जुल्म (अत्याचार) करते हैं। दूसरों का माल हड़प कर जाते हैं धरती पर गड़बडी फैलाते हैं और शान्ति भंग करते हैं। सालेह की कौम इस बात पर लाजवाब हो गयी और कोई उत्तर नहीं बन पड़ा तो कहने लगे, ऐ सालेह!

www.abulhasanalinadwi.org

हमें तुम जादूगर मालूम पड़ते हो। तुम तो बस हमारी तरह एक मनुष्य हो कोई अल्लाह की निशानी हमें लाकर दिखाओ यदि तुम सच्चे हो।'

अल्लाह की ऊँटनी

हज़रत सालेह ने कौम से कहा कि तुम कैसी निशानी चाहते हो बताओ। वह बोले कि यदि तुम सच्चे हो तो इस पहाड़ से गर्भवती ऊँटनी निकालर दिखलाओ। कौम यह खूब जानती थी कि ऊँटनी तो ऊँटनी से पैदा हो सकती है। ऊँटनी जमीन से तो नहीं उग सकती है और न पत्थर से पैदा हो सकती है उनको यह पूरा यकीन था कि वह निशानी का सवाल करके कामयाब और सालेह लाचार हैं। लेकिन हज़रत सालेह को अपने पैदा करने वाले पर यकीन मजबूत था वह जानते थे कि अल्लाह हर चीज पर कुदरत रखता है। उन्होंने अल्लाह से उसकी दुआ की जिसको कौम ने चाहा। पहाड़ से हामिला ऊँटनी निकली और उसने बच्चा दिया। लोगों को यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ और डरने लगे और फिर भी एक आध को छोड़कर कोई ईमान नहीं लाया।

बारी

हज़रत सालेह ने कौम से कहा कि यह अल्लाह की निशानी है तुम ने जो चीज माँगी अल्लाह ने उसे पैदा कर दिया। अब तुम इसका आदर करो और इसको कोई

www.abulhasanalinadwi.org

तकलीफ मत देना यदि ऐसा न करोगे तो तुम पर अजाब आयेगा। यह ऊँटनी अल्लाह की धरती पर रहेगी और खायेगी, पियेगी, घूमेगी, फिरेगी तुम पर इसके पानी चारे की कोई जिम्मेदारी नहीं है। अल्लाह की जमीन में चारा और पानी बहुत है यह ऊँटनी काफी बड़ी है और पैदाइश के एतबार से वह अजूबा है। उनके जानवर उस को देखकर भड़क जाते और भाग जाते थे जब वह ऊँटनी आती तो पानी पी जाती। दूसरे जानवर उसको देखकर भड़क जाते और भाग जाते थे। जब यह सूरत हज़रत सालेह ने देखी तो कौम से कहा कि बारी बारी बना लो एक दिन तुम्हारे जानवर पानी पियेंगे और एक दिन यह ऊँटनी पानी पिया करेगी। जब ऊँटनी की बारी आती वह जाती और पानी पीती और जब कौम के जानवारों की बारी आती उनके जानवर जाते और पानी पीते थे।

समूद की सरकशी

कौम बड़ी घमण्ड़ी हो गयी और सरकशी पर आमादा हो गयी थी कहने लगी कि हमारे जानवर रोज पानी क्यों न पियें। लोग परेशान थे इस ऊँटनी से जिस को देखकर उनके जानवर बिदक जाते और भाग जाते थे। हज़रत सालेह ने ऊँटनी को बेइज्जत और परेशान करने से उनको होशियार किया। कौम ने उनकी बात की कोई परवाह नहीं की और ढिटाई से बोले कि इस को कौन मारेगा एक आदमी खड़ा हुआ और कहा कि मैं मारूंगा

www.abulhasanalinadwi.org

एक दूसरा खड़ा हुआ वह बोला मैं इसे मारुंगा यह दोनो अभागे ऊँटनी के निकलने का इन्तेजार करने लगे जब ऊँटनी निकली तो पहले ने उसे नेजा मारा तथा दूसरे ने उसे जब्ह कर दिया।

अज़ाब

हजतर सालेह को जब पता चला कि ऊँटनी जब्ह कर दी गयी है वह बहुत रंजीदा हुये और इस पर बेहद अफसोस किया और लोगों से कहा कि अब केवल तीन दिन और अपने घरों में ऐश कर लो और देखो यह बात झूठी नहीं है। शत प्रतिशत सत्य होगी।

शहर में नौ आदमी ऐसे थे जिन्होने गुण्डागर्दी मचा रखी थी और किसी तरह वह काबू में नहीं आते थे उन्होंने कसम खाई कि सालेह और उनके परिवार को रात में मार डालेंगे और जो कोई हम से पूछेगा हम कह देंगे हमें पता नहीं हम नहीं जानते। जब तीसरा दिन आया और उन पर अजाब आया अजाब अल्लाह की पनाह दहाड़े मारता भूचाल था उसमें इतनी सख्त आवाज व चीख थी जिस ने दिल फाड़ दिये ऐसा भूचाल था जिसने उनके घरों को मिसमार कर दिया वह दिन समूद पर बड़ा कठिन था सारे लोग मर गये पूरा शहर बरबाद हो गया।

हज़रत सालेह और मुसलमानों ने इस मनहूस शहर से हिज़रत की। हज़रत सालेह ने वह शहर छोड़ा और अपनी कौम पर एक नज़र डाली जो मरे पड़े थे उनको

www.abulhasanalinadwi.org

देखकर दर्द भरी आवाज में कहा कि ऐ कौम मैंने अपने पैदा करने वाले का पैगाम तुम तक पहुँचाया और तुमको नसीहत भी की लेकिन तुम पर उस नसीहत का कुछ असर न हुआ।

आज यदि उस शहर को देखो तो खाली महल है और कुएं सूखे और बेकार मिलेंगे। वीरान बस्ती है जिसमें न कोई पुकारने वाला है और न कोई जवाब देने वाला है। 'शाम' जाते हुये जब हूजुर स0 का उस बस्ती से गुजर हुआ फरमाया उन के मकानों में मत दाखिल हो जिन्होंने अपने ऊपर जुल्म किया लेकिन रोते गिड़गिड़ाते और पनाह माँगते वह डरते हुये, कि कहीं तुम्हें भी वह न पहुँचे जो उन्हें मिला। ऐ लोगो! देखो अनजाम अल्लाह ने समूद को भलाई से महरूम कर दिया।

+++

www.abulhasanalinadwi.org

पुनः मिस्र का बयान

नोट : हज़रत नूह, हज़रत हूद, हज़रत सालेह अलैहिमुस्सलाम और उनकी कौमों के बयान के बाद अब फिर मिस्र की ओर आते हैं और याकूब अ0 के निधन से आरंभ करते हैं।

कुछ दिनों के बाद याकूब अ0 का इन्तेकाल (निधन) हो गया। उनके मरने (निंधन) पर मिस्र वालों को बड़ा दुःख और सदमा पहुँचा बड़े गम के साथ उनको दफनाया और यह समझा मानो उनका बाप मर गया।

उनके मरने के कुछ समय बाद युसुफ अ0 का इन्तेकाल (निधन) हो गया। उनके निधन पर पूरे मिस्र ने दुःख मनाया। गम का पहाड़ उन पर टूट पड़ा और वह बहुत रोये।

यूसुफ की ताजियत (पुर्से) में मिस्र वाले उनके भाईयों के पास जाते तो उनके एहसानों का जिक्र करते और रो–रो कर उनसे कहते थे कि आप का भाई नहीं

www.abulhasanalinadwi.org

मरा। हमारा भी चाहने प्यार करने वाला भाई हमसे बिछड़ गया है। आज हमने न्याय करने वाला बादशाह खो दिया है। उसने अपने समय साफ सुथरा शासन दिया, हमें बड़ी परेशानियों से निकाला हमारे आराम का उसने पूरा ख्याल रखा। उसने जुल्म, अत्याचार समाप्त किया अैर कमजोरो की सदैव सहायता की है। जब भूख से हमारे पड़ोसी देश के लोग मर रहे थे उसने हमें खाना दिया, हमारी सहायता की और हमें भूख से मरने नहीं दिया। हम गुमराह थे उसने हमें सही मार्ग दर्शाया। हम अल्लाह को नहीं पहचानते थे उसने अल्लाह का परिचय कराया। हमारा आखिरत (परलोक) पर विश्वास और यकीन नहीं था, उसकी शिक्षा से हम आख़िरत पर यकीन करने लगे। ऐसी विशेषताएं रखने वाले व्यक्ति को हम कैसे भुला दें।

आप उनके परिवार के हैं। आप हमारे लिये वैसे ही इज्जत के हकदार हैं जैसे वह हमारे लिये थे। यह शहर आप का और हम आपके हैं। आप हमारे लिये वैसे ही रहेंगे जैसे आप अपने भाई के जमाने में रहे।

बनी इस्राईल (कनाआनी) मिस्र में

बनी इस्राईल में यह बात कुछ दिन तक बाक़ी रही। वह अपनी बातो पर कायम भी रहे उन्होंने कनानियों के एहसानों को माना और उनको इज्जत भी दी। लेकिन

www.abulhasanalinadwi.org

उनमें और उनके विचारों में तबदीली (परिवर्तन) आन लगी। उनके कर्म खराब हो गये। वह अल्लाह की शिक्षा भुला बैठे, अल्लाह की तरफ बुलाना छोड़ दिया और वह दुनिया में पड़ गये। लोगों को भी वह अच्छी नज़र से नहीं देखते थे। यह भी भूल बैठे कि यह कैसे हैं। और इसके बाप दादा क्या थे। बनी इस्राईल के कर्म बिगड़ गये। अब उनमें नसल (वंश) के सिवा कोई बात नहीं थी जिस पर वह गर्व करते। वह आम लोगों की तरह हो गये अपनी विशेषता खो दी।

उन में ईर्ष्या जलन पैदा हो गइ। किसी को खुश और धनवान देख नहीं सकते थे। गरीबों को जलील समझना, उनको छोटा समझना उनकी आदत बन गयी थी।

मिस्र के पूर्व निवासी भी कनानियों को विदेशी कहने लगे कि मिस्र तो मिस्रियों का है। कनानी मिस्री नहीं हैं। वह तो कनान से आये थे। यूसुफ को तो मिस्र के बादशाह ने खरीदा था। उनको मिस्र पर हुकूमत करने का कोई हक नहीं था। इन मूर्खों ने यूसुफ का प्यार उन का प्रेम उनके एहसानात जो उन्होंने इन पर किये थे बिल्कुल भुला दिये थे।

मिस्र का फ़िरऔन

अब मिस्र पर फ़िरऔन बादशाहों की हुकूमत आ गई। यह बनी इस्राईल से बेहद कीना (शत्रुता) रखते थे और उनसे नाराज रहते थे।

www.abulhasanalinadwi.org

एक सख्त और जालिम बादशह मिस्र पर हुकूमत करने आया। वह यह नहीं समझता था कि बनी इस्राईल नबियों की औलादों में से हैं। यूसुफ के घर के हैं और युसूफ के मिस्र और मिस्रियों पर बड़े एहसानात हैं। इसका बदला यह होना चाहिये था कि इनके साथ न्याय होता और इनको वह स्थान दिया जाता जिसके यह मुस्तहिक हैं।

लेकिन वह बनी ईस्राईल के मुकाबले किबतियों को आदर देता। वह बनी इस्राईल को एक कौम और किबतियों को एक दूसरी कौम समझता था, वह समझता था कि किबती बादशाहों के खानदान से सम्बन्ध रखते हैं और बनी इस्राईल गुलामों की कौमों में से हैं। फ़िरऔन बनी इस्राईल से सेवकों और गुलामों का सा मामला करता। उनको खिदमत करने वाला जानवर समझता था और कहता जैसे जानवरों को रोज़ का रोज़ खाने को दिया जाता है वैसे ही इनको भी मिलना चाहिए। फ़िरऔन बड़ा जालिम बादशाह था। उसको बड़ा घमण्ड था। वह अपने सिवा किसी को कुछ नहीं समझता था। वह अपने को खुदा (भगवान) समझता था। उसके बड़े–बड़े महल थे उसके नीचे बहने वाली नहरें थी और उसको इन पर बड़ा घमण्ड था। वह कहा करता कि यह सब चीजें मेरे लिये हैं, मेरे आराम के लिये हैं।

वह चाहता था उसके देश के वासी उसको भगवान जानें, उसकी पूजा करें। तथा उसे सजदा करें। जैसे वह बाबुल शहर के बादशाह नमरूद का जानशीन हो। वह किसी को अपने से बढ़ते देखता तो उसको क्रोध और गुस्सा आता। बनी इस्राईल के दिल में ईमान और अल्लाह पर यक़ीन था। वह अल्लाह के सिवा किसी और की इबादत तथा किसी के सामने अपने सर को झुकाना स्वीकार नहीं कर सकते थे। इसलिये उन्होंने फ़िरऔन के आगे सर झुकाने से साफ इन्कार कर दिया। उनके इन्कार से फ़िरऔन का क्रोध और बढ़ गया।

बच्चों का कत्ल

एक ज्योतिष किबती ने फ़िरऔन से आकर कहा कि बनी इस्राईल में ऐसा एक लड़का पैदा होगा जो तुम्हारी बादशाहत व सल्तनत की समाप्ति की वजह बनेगा। इस खबर ने फ़िरऔन को पागल कर दिया।

उनसे उसी समय अपनी पुलिस को यह आदेश दिया कि वह शहर में पता लगाये और जैसे ही बनी इस्राईल में किसी लड़के की सूचना मिले, शीघ्र वहाँ जाये और उस बच्चे को मार डाले वह मूर्ख समझता था कि वह भगवान है। उसको इख्तियार है जिसको चाहे मारे और जिसको चाहे छोड़ दे। हजारों बच्चों को उनके

www.abulhasanalinadwi.org

माता–पिता के सामने कत्ल कर दिया। बनी इस्राईल में जिस दिन किसी बच्चे का जन्म होता उस दिन उन पर गम के पहाड़ टूट पड़ते और रोना–पीटना मच जाता। एक एक दिन में सैकड़ों बच्चे कत्ल होते जैसे ईदेअज्हा में भेड़, बकरियाँ और गाय जब्ह होती हैं। फ़िरऔन मिस्र की जमीन पर बहुत बढ़ गया था, वहाँ के लोगो को फिर्कों में बाट रखा था, एक फिर्का बनी इस्राईल को बहुत घटा कर रखा था। उनके बच्चों को कत्ल करवाता और उनकी औरतों को जिन्दा छोड़ देता था। बड़ा फसाद (उतपात) फैलाने वालों में से था।

✦✦✦

www.abulhasanalinadwi.org

मूसा अलैहिस्सलाम का जन्म

अल्लाह ने चाहा कि वह बात होकर रहे जिससे फिरऔन डरता और जिससे वह बचना चाहता है।

उस बच्चे का जन्म हुआ जिसके जरिये अल्लाह ने फिरऔन का राज्य जाना लिख दिया था।

उस का जन्म हुआ जिसके जरिये अल्लाह ने बनी इस्राईल की आज़ादी लिख दी थी।

उस का जन्म हुआ जिसके जरिये अल्लाह ने लोगों की इबादत से निकाल कर अल्लाह की इबादत में लाना लिख दिया था।

फिरऔन और उसकी फौज के न चाहते हुए भी मूसा बिन इमरान का जन्म हुआ।

पुलिस के न चाहते हुए भी उन्हीं के आस–पास मूसा ने तीन माह गुजार दिये और उनको इसकी भनक भी नहीं लगी।

नील में

पुलिस की खोज और फिर उनका पता चल जाने के

www.abulhasanalinadwi.org

बाद उनके कार्यों से मूसा की माँ बड़ी परेशान थीं और डर रही थीं कि यह प्यारा सा बच्चा उनके हत्थे न चढ़ जाये। ऐसी हालत (स्थिति) में उनका ऐसा सोचना स्वाभाविक था। उनको चिन्ता थी कि इस बच्चे को कहाँ और कैसे बचायें।

पुलिस सूंघती फिर रही है, उसको पता चल गया तो क्या होगा? यह सोचकर वह डर जाया करती थी।

अल्लाह ने मूसा की माँ के दिल में यह डाल दिया कि मूसा को एक संदूक में रखकर नील में डाल दें। एक माँ के लिये बच्चे को नील में डाल देने की बड़ी परीक्षा थी। वह सोचने लगी कि संदूक पता नहीं कहाँ जाये। संदूक में बच्चा भूखा–प्यासा रहेगा, कौन उसको दूध पिलायेगा और कैसे वह संदूक में साँस लेगा। ऐसा न हो कि संदूक ही में मर जाये। इस प्रकार की बातें उनके दिमाग में आती रहीं हर माँ अपने बच्चे के लिये ऐसा ही सोचती है।

उन्होंने अल्लाह पर भरोसा किया और सोच लिया कि जो हालात हैं उन में बच्चा घर में सन्दूक से अधिक सुरक्षित न रहेगा। यहाँ तो पुलिस पीछे पड़ी है। वह तो बच्चों की दुश्मन है। मूसा की माँ ने वही किया जिसको करने का अल्लाह ने उनको आदेश दिया था। उन्होंने मूसा को संदूक में रखा और संदूक नील में डाल दिया। मूसा को नील में डालते समय थोड़ी परेशानी हुई लेकिन

www.abulhasanalinadwi.org

अल्लाह पर पूरा भरोसा किया और सब्र किया। यह बयान कुर्आन में इस प्रकार है :–

हमने मूसा की माँ को वह्य की कि "मूसा को दूध पिलाती रहो, और जब डर महसूस करो तो निश्चित हो कर उस को दरया में डाल दो और न डरो न गमगीन हो। हम इनको फिर तुम्हारे पास लौटा देंगे और समय आने पर इनको रसूल बना देंगे।

फ़िरऔन के महल में

फ़िरऔन के समुद्र के किनारे बहुत से महल थे। हर एक में वह बारी–बारी से तफरीह के लिये जाता था। एक दिन वह साहिल (नदी तट) पर तफरीह कर रहा था। उसके साथ उसकी मलिका (रानी) भी थी। दोनों तफरीह कर रहे थे। अचानक उन दोनों की नज़र संदूक पर पड़ी। मौजें उससे खेल रही थीं मानो उस को प्यार कर रही हैं। मलिका ने फ़िरऔन से कहा कि आप वह संदूक देख रहे हैं? फ़िरऔन ने कहा कि नील में संदूक कहाँ? वह तो लकड़ी है जो नील में गिर गयी है। मलिका ने कहा कि नहीं वह तो संदूक ही है। संदूक करीब आया तो लोग बोल पड़े अरे हाँ यह तो संदूक ही हैं बादशाह ने अपने नौकरों में से एक नौकर से उस संदूक को निकालकर लाने को कहा। संदूक लाया गया। उस को खोला तो उस में मुसकुराता हुआ एक खूबसूरत लड़का था। सबको

www.abulhasanalinadwi.org

बड़ी हैरत हुई। हर एक उस को लेने और देखने लगा। फ़िरऔन को भी हैरत हुई। कुछ नौकर बोले कि यह बच्चा इस्राईली मालूम पड़ता है। बादशाह को तो इसे कत्ल करा देना चाहिये।

मलिका ने अब उस बच्चे को देखा तो उसकी ममता दिल में पैदा हुई और मुहब्बत में उस को सीने से लगाया और उसको प्यार करने लगी। बादशाह से कहा कि इसको कत्ल मत कीजिये। यह तो हमारे आप के लिये आँखों की ठंडक होगा। सम्भव है कि यह हमारे लिये लाभदायक हो या फिर हम इसको बेटा बना लें।

इस तरह मूसा–बिन इमरान फ़िरऔन के महल में पहुँच गये। फ़िरऔन और उसकी पुलिस के न चाहने पर भी वह जीवित रहें। कौओं की आँखें और चींटी की सूंघ होते हुए भी पुलिस मूसा तक न पहुँच सकी।

अल्लाह ने चाहा कि बच्चों का दुश्मन फ़िरऔन उस बच्चे की परिवरिश (पालन–पोषण) करे जिसके हाथों उस की हुकूमत जानी है।

बेचारा फ़िरऔन मूसा के मामले में धोखा खा गया। उसके साथ उसके वजीर हामान और उसका लश्कर (सेना) भी धोखा खा गयी। सो फ़िरऔन के लोगों ने मूसा के संदूक को उठा लिया ताकि मूसा उन के दुशमन बने और उनके लिये रंज का सबब बनें बेशक फ़िरऔन, हामान और उन की फौजी चूक गये।

www.abulhasanalinadwi.org

बच्चे को दूध कौन पिलाये

यह नया और खूबसूरत बच्चा महल में सब का खिलौना था। हर आदमी उसको लेता और प्यार करता था। हर एक उसको चाहता और उसकी तारीफ़ (प्रशँसा) करता था इसलिये कि मलिका उस को बेहद चाहती और प्यार करती थी। मलिका के चाहने की वजह से हर एक इस खूबसूरत बच्चे को खेलाता और उसको प्यार करता था। बच्चे को दूध पिलाने के लिये मलिका ने दाई बुलाई, दाई आई और दूध पिलाना चाहा तो वह बच्चा रोता और दूध नहीं पीता था। मलिका ने दूसरी दाई बुलाई। उसका भी बच्चे ने दूध नहीं पिया और रोता रहा। चार पाँच दाई बुलाई गई लेकिन उसने किसी का दूध नहीं पिया और रोना भी बंद नहीं हुआ। सब को हैरत थी उस के दूध न पीने पर। सब परेशान थे कि बच्चा क्यों बराबर रो रहा है। हर दाई ने पूरी कोशिश की दूध पिलाने और मलिका को खुश करने की इनाम (पुरस्कार) की लालच में। लेकिन अल्लाह ने हर दाई का दूध उन पर हराम कर दिया था नये महल में बच्चे ने सुबह की। महल में उसी का जिक्र था एक औरत दूसरी से पूछ रही है बहन तुम ने नये लड़के को देखा जवाब मिला हाँ देखा लड़का बहुत खुबसूरत है। लेकिन वह बच्चा अजीब बच्चा है किसी दाई का दूध नहीं पीता। कोई दाई जब उसको दूध पिलाना चाहती है तो दूध पीने से इन्कार करता और रोता

है। बेचारा बिना दूध पिये कैसे जियेगा। हाँ बहन कितने दिन गुजर गये और बच्चे ने दूध नहीं पिया।

अपनी माँ की गोद में

मूसा की माँ ने मूसा की बहन से कहा कि ऐ! बेटी जा और भाई की खबर ले। मुझे यकीन है कि वह जिन्दा होगा। अल्लाह ने उसको जिन्दा सुरक्षित लौटाने का मुझसे वादा किया है। और अल्लाह का वादा सच्चा है।

मूसा की माँ के कहने पर बहन भाई का पता लगाने घर से निकल पड़ी। उसने रास्ते में लोगों को महल में एक खूबसूरत बच्चे के पहुँचने के बारे में बातें करते सुना।

मूसा की बहन सीधे महल पहुँची और वहाँ खड़े होकर उन औरतों की बातें सुनने लगी जो इस बच्चे के बारे में आपस में बातें कर रही थीं। एक औरत दूसरी से कह रही थी कि बहन मलिका ने असवान से जिस दाई को बुलाया था वह आई? उसने कहा कि हाँ आई थी लेकिन बच्चे ने उसका भी दूध नहीं पिया। हैरत है? कमाल का बच्चा है। फिर वही और बोली कि शायद यह सातवीं दाई थी जिसका मलिका ने तजुर्बा (अनुभव) किया है। लोग तो कहते थे कि उसका दूध अच्छा और दाई भी बड़ी साफ–सुथरी थी। उसका दूध हर लड़का पी लेता है। यह बातें सुनकर मूसा की बहन ने बड़े अदब से उन औरतों से कहा कि मैं इस शहर में एक ऐसी औरत को जानती हूँ जिसका दूध यह बच्चा जरूर पी लेगा। औरत

बोली— मुझे तो विश्वास नहीं। हमने तो छः दाइयों का अनुभव किया है। लड़के ने किसी का भी दूध नहीं पिया। एक दूसरी और औरत बोली कि सातवीं दाई का अनुभव कर लेने में हरज ही क्या है?

इन बातों की खबर मलिका तक पहुँची। उसने शीघ्र उस लड़की को अपने पास बुलाया और कहा कि अभी जाओ और उस दाई को लेकर आओ। मूसा की माँ आई और सेविका ने बच्चे को उसको दे दिया उनसे चिमट गया और दूध पीने लगा गोया उनको वह पहले से जानता है। वह उनका दूध कैसे नहीं पीता आखिर वह उनकी चाहने वाली माँ थी। और कई दिन के भूखे थे। उनके दूध पीने पर मलिका महल वालों और फ़िरऔन का हैरत (आश्चर्य) हुई। फ़िरऔन कहने लगा कि इतनी दाइयों को बुलाया किसी का दूध नहीं पीया। इस औरत को देख कर उससे चिपट गया और दूध पीने लगा। यह इस की माँ तो नहीं? इस पर मूसा की माँ फ़िरऔन से कहने लगी कि बादशाह यह बात है कि मैं बहुत साफ–सुथरी रहती हूँ और मेरे बदन में ऐसी खुशबू आती है कि हर बच्चा पी लेता है। फ़िरऔन उनके जवाब से संतुष्ट हो गया और बच्चा उनके हवाले कर दिया। और मूसा की माँ मूसा को गोद में लिये घर लौट आई।

"हमने उनको उनकी माँ के पास लौटा दिया ताकि

www.abulhasanalinadwi.org

उनकी आँखों को ठंडक पहुँचे और वह गमगीन न हों और यह जान लें कि अल्लाह का वादा सच्चा है लेकिन इस बात को बहुत से लोग नहीं जानते।

फ़िरऔन के महल में

जब दूध पिलाने का समय समाप्त हुआ मूसा की माँ ने मूसा को महल पहुँचा दिया। अब मूसा की परवरिश शहजादों की तरह महल में होने लगी। इस तरह मूसा के दिल से बादशाहों और धन वालों का रोब व दबदवा निकल गया। मूसा अपनी आँखों से देख रहे थे कि वह बादशाह और उनका परिवार किस तरह आराम व राहत से रहते हैं। उनके नौकर चाकर भी आराम से रह रहे हैं। और बनी इस्राईल उनके आराम के खातिर तकलीफें और कष्ट उठा रहे हैं। उनके आराम के खातिर दिन भर भूखे प्यासे गरमी और धूप में काम करते हैं और इस के बदले उनको केवल इतनी मजदूरी मिलती थी जो दिन भर के लिये काफी होती थी।

मूसा अ० बनी इस्राईल का कष्ट उनका परिश्रम देखकर बेचैनी और दुःख महसूस करते थे। उनकी बेबसी और उनके परिश्रम को देखकर अफसोस करते और उनको गुस्सा आता था लेकिन यह सब कुछ खामोशी से बरदाश्त करते थे

मूसा अ० सोचते थे कि आखिर बनी इस्राईल का कुसूर और पाप क्या है? क्या उनका किबती न होना पाप

है? किबती न होना तो कोई पाप नहीं है। यह तो फिरऔन की धाँधली और जुल्म है।

एक क़िबती की मौत

जब मूसा अ० जवान और बलवान हुए तो अल्लाह ने उनको हिकमत और दानाई (बुद्धि और समझ) दी मूसा अ० जुल्म व अत्याचार को पसंद नहीं करते थे। कमजोरों और मजलूमों से मुहब्बत करते थे उनकी मदद करते थे जैसे सभी नबी करते हैं। एक दिन फ़िरऔन के शहर में दाख़िल हुए उस वक्त लोग खेल–कूद में व्यस्त थे। वहाँ उन्होंने देखा कि दो आदमी आपस में लड़ रहे हैं। उनमें से एक इस्राईली और दूसरा उनका दुश्मन किबती है। इस्राईली ने मूसा को देखकर अपनी सहायता के लिये पुकारा और किबती की ज्यादती की उनसे शिकायत करने लगा मूसा अ० को बहुत गुस्सा आया और उसको एक घूंसा मारा और वह मर गया। इस पर मूसा को बहुत अफसोस हुआ और बड़े शर्मिन्दा हुए और कहने लगे कि यह शैतानी काम था। अल्लाह से तौबा की (हर नबी इसी तरह करता है।) और कहा कि "यह शैतानी काम था। शैतान खुला और गुमराह करने वाला दुश्मन है।" अल्लाह ने मूसा की तौबा कुबूल की इसलिये कि उन्होंने जानकर उसको कत्ल के इरादे से घूंसा नहीं मारा था यह अलग बात है कि उसका समय ही आ गया था और अल्लाह को यही मंजूर था। इसीलिये घूंसा

www.abulhasanalinadwi.org

उसकी मौत का कारण बना।

मूसा अ० की दुआ अल्लाह ने कुबूल की तो वह बेहद खुश हुए और अल्लाह की तारीफ और बड़ाई बयान करते हुए कहा कि मैं अब किसी पापी का साथ (सहयाता) नहीं दूँगा।

शहर में रात गुजारी। हर समय डर था फ़िरऔन की पुलिस का जो बहुत चतुर कौओं की तरह देखने वाली और चींटी की तरह सूंघने वाली थी। किस समय वह आ जाये और उनको पकड़ कर जालिम बादशाह के सामने खड़ा कर दे।

पुलिस ने एक किबती जो फ़िरऔन के सेवको में था मुर्दा पाया तो कातिल का पता लगाने की भरपूर कोशिश की लेकिन उसमें वह सफल नहीं हुए और कातिल का कोई सुराग नहीं मिला। कातिल का पता बताने वाला कोई नहीं था कातिल का पता केवल मूसा जानते थे या वह इस्राईली जिसके कारण क़िबती मरा। सुबह हुई तो क़िबती की मौत का पूरा शहर में चर्चा था लेकिन कोई कातिल का नाम नहीं जानता था। कातिल के पता न चलने पर फ़िरऔन को बहुत गुस्सा आया और कातिल का पता लगाने के सख्त आदेश दिये।

राज खुलता है

दूसरे दिन मूसा अ० बाहर निकले तो फिर एक दूसरे किबती और उसी इस्राइली को आपस में लडते देखा।

www.abulhasanalinadwi.org

इस्राईली ने हज़रत मूसा को देखा तो फिर अपनी सहायता के लिये उनको पुकारा। हज़रत मूसा अ० ने उससे कहा कि तू बड़ा फसादी है। लोगों से बराबर लड़ता झगड़ता है और अपनी सहायता के लिये पुकारता है। क्या मैं हर बार तेरी मदद करूंगा। तेरा तो अब यही काम रह गया है।

मूसा अ० आगे बढ़े कि किबती को समझायें बुझायें और मामले को रफा–दफा कर दें।

इस्राइली ने मूसा का गुस्सा देखा और अपनी तरफ आते देखा तो यह समझ बैठा कि कहीं आज मूसा मुझे मारें और मैं मर जाउं जैसे किबती को मारा था और वह मर गया था। वह बोल पड़ा कि "ऐ मूसा तुम मुझे मार डालना चाहते हो जैसे कल तुम ने एक किबती को मार डाला था। क्या तुम जालिम और बलवान बनकर अपना जीवन बिताना चाहते हो। तुम मुझे माफ करो मुझे तुम्हारी सहायता की आवश्यकता नहीं तुम न्याय नहीं कर सकते।" उस समय किबती ने समझ लिया कि कल किबती को मार डालने वाले मूसा थे। वह दौड़ता हुआ गया और पुलिस को इसकी सूचना दी कि किबती का कातिल मूसा है। यह खबर फ़िरऔन को भी गई। फ़िरऔन यह जानकर कि मूसा कातिल है तो गुस्सा से पागल हो गया और कहने लगा कि यह वही लड़का है जिसने मेरे महल में रहकर परवरिश पाई और हमारे साथ रहा। और उसी ने यह जुल्म ढाया। लेकिन अल्लाह ने मूसा अ० को फिरऔन

www.abulhasanalinadwi.org

और उसकी पुलिस की पकड़ से दूर रखने का इरादा कर लिया था।

मूसा अ0 ने किबती को जानकर नहीं मारा था। उसका समय आ गया था वह मर गया। लेकिन फ़िरऔन और उसकी पुलिस यह स्वीकार करने को तैयार नहीं थी और उनको कोई सफाई कुबूल नहीं थी।

अल्लाह ने यह फैसला फरमा दिया था कि फ़िरऔन और उसके मुल्क का जवाल मूसा के जरिये ही हो। बनी इस्राइल की फ़िरऔन और उसके अत्याचार का अंत मूसा के जरिये हो। अल्लाह ने बनी इस्राइल को बंदों की पूजा से निकाल कर अल्लाह की इबादत की तरफ लाने का कार्य मूसा को सौंपा। मूसा के कातिल हो ने की खबर पाकर फ़िरऔन और उसके मंत्री व परामर्शदाता परामर्श करने लगे मूसा को पकड़ने और उनको कत्ल करने को। उस बैठक में एक व्यक्ति जो यह सब बातें सुन रहा था और उनकी पूरी योजना का जानकार था तथा मूसा को जानता और पहचानता था। वहाँ से उठा और सीधे मूसा के पास आया और उनको पूरी बातो से जानकार कराया और कहा कि मेरा मश्वारा है कि आप अभी इस देश को छोड़ दें। इस तरह आप फ़िरऔन की योजना से सुरक्षित हो जायेंगे।

मूसा अ0 ने उसकी बात मान ली और एहतियात के साथ शहर से निकल पड़े और कहते थे "ऐ मौला मुझे जालिम कौम से नजात (छुड़ा) दे।"

www.abulhasanalinadwi.org

मिस्र से मदयन चले

मिस्र से निकलने के बाद सोचा कि कहाँ जायें। मिस्र बड़ा देश है और इस पूरे देश का शासन फ़िरऔन का है। उसकी पुलिस उनको तलाश कर रही है।

अल्लाह ने मदयन जाने का ख्याल उनके (मूसा) दिल में डाल दिया। यह देश फ़िरऔन के देश की सीमा से बाहर था जहाँ फ़िरऔन के आदमी नहीं आ सकते थे। मदयन उन्नतिशील देश नहीं था। यह तो देहात और गाँव थे जिस में मिस्र की सी चहल पहल नहीं थी और ना उस में मिस्र की तरह बाजार और महल थे। लेकिन वहाँ शान्ति थी और फ़िरऔन के आदेश नहीं चलते थे। मूसा को कितनी खुशी हुई उस देहात में आकर जिसमें आजादी है और न्याय है। कितनी बुरी है उन्नतिशील नागरिकता अपमानिता तथा दास्ताँ के साथ। यहाँ फ़िरऔन की पुलिस और उसकी बुराईयों तथा बच्चों के कत्ल होने का डर नहीं था। यहाँ के रहने वाले निडर होकर सोते और जागते थे।

मूसा अ0 ने मदयन आने का फैसला कर लिया फ़िरऔन और उसकी पुलिस मूसा की तरफ से निराश हो गई। जब मदयन की तरफ मूसा अ0 चले तो कहने लगे कि "मेरा परवरदिगार मुझे रास्ता दिखायेगा।"

मदयन आ गये

मूसा अ0 मदयन आ गये। यहाँ वह किसी को जानते

www.abulhasanalinadwi.org

पहचानते नहीं थे मदयन के बासी भी उनको जानते और पहचानते नहीं थे। सवाल उठा रात गुजारने का मूसा अ0 थोड़े परेशान हुए लेकिन अल्लाह की मदद का उनको यकीन था और उस पर उनको भरोसा था। मदयन पहुँचे तो एक कुँए के पास रूके वहाँ लोग अपने जानवरों को पानी पिलाने लाते थे।

उसी जगह दो लड़कियाँ खड़ी थीं जो अपनी बकरियों को पानी पिलाने आई थीं। वह इस इन्तेजार में खड़ी थीं कि लोग अपने जानवरों को पानी पिलाकर जायें तो वह अपनी बकरियों को पानी पिलायें।

मूसा अ0 की नज़र उनपर पड़ी तो दया आई और बड़े प्यार से उनसे पूछा कि तुम पानी क्यों नहीं पिला रही हो।

उन्होंने उत्तर दिया कि लोगों के जाने से पहले हमारा बकरियों को पानी पिलाना सम्भव नहीं है वह सब बलवान और शक्तिशाली हैं इसलिये कि वह मर्द हैं और हम कमजोर हैं इसलिये कि हम औरत हैं। लड़कियों से मूसा अ0 ने पूछा कि क्या तुम्हारे घर मे कोई मर्द नहीं है जो यह कार्य कर सके। लड़कियों ने कहा कि हमारे पिता हैं मगर वह बहुत बूढ़े हैं। मूसा अ0 को उन पर बड़ा तरस आया और उन्होने उनकी बकरियों को पानी पिला दिया।

हज़रत मूसा चिंतित हुए कि अब कहाँ जायें और किसके यहाँ रात गुजारे। वह एक पेड़ के नीचे साये में

www.abulhasanalinadwi.org

बैठ गये और कहा कि "ऐ अल्लाह मुझे तेरी ही सहायता की जरूरत है तू जो भी मुझे देगा उसमें भलाई होगी।"

बुलावा

यह दोनों लड़कियाँ सूर्यास्त से पहले घर पहुँच गई तो बाप को हैरत हुई और उन से जल्दी आने की वजह पूछी और कहा कि बेटियो तुम्हारे वक्त (समय) से पहले आने पर हैरत है। उन लड़कियों ने कहा कि अब्बाजान अल्लाह ने एक शरीफ आदमी को भेज दिया। उसी ने बकरियों को पानी पिलाया।

बुजुर्ग को आश्चर्य हुआ और वह समझ गये कि जरूर यह कोई परदेसी है अब तक तो किसी दिन किसी ने इन लडकियों पर तरस नहीं खाया।

बुजुर्ग ने पूछा कि तुमने उसको कहाँ छोड़ा है। लड़कियों ने कहा कि हम उस को वहीं छोड़कर आये हैं वह तो परदेसी है उसका कोई ठिकाना नहीं है।

बुजुर्ग बोले : बेटियो तुमने यह अच्छा नहीं किया। वह परदेसी है और उसने तुम पर एहसान किया है और उस का शहर में कोई ठिकाना भी नहीं है। रात में कौन उसको पनाह देगा और वह बेचारा कहाँ रात गुजारेगा। उसकी मेहमानदारी हम पर है उस का हम पर एहसान है। तुम में से कोई एक उस को जाकर घर ले आओ।

उनमें की एक बड़ी शर्मो हया (लज्जा) के साथ मूसा अ0 के पास आई और कहा कि बाबाजान ने आपको

www.abulhasanalinadwi.org

बुलाया है ताकि उस एहसान का बदला चुका सकें जो आपने पानी पिलाकर हम पर किया है।

मूसा अ० समझ गये कि अल्लाह ने उनकी दुआ कुबूल कर ली और साधन कर दिया। इसलिये जाने से इन्कार नहीं किया। मूसा अ० आगे–आगे चल रहे थे मतानत से शराफत से ताकि उनकी नज़र उस लड़की पर न पड़े जो उनके पीछे चल रही थी।

बुजुर्ग के पास मूसा अ० पहुँचे तो उन्होंने हाल पूछा। मूसा अ० ने तफसील से अपनी कहानी उनको सुना दी। बुजुर्ग ने बड़े ध्यान से उनकी कहानी सुनी और कहा अब घबराने की कोई बात नहीं हैं तुम जालिम कौम से अब महफूज (सुरक्षित) हो।

शादी

मूसा अ० उनके पास इज़्ज़तदार मेहमान की तरह रहने लगे बल्कि उनको अज़ीज़ बेटे की तरह चाहा जाने लगा। एक दिन एक लड़की ने अपने बाप से कहा कि बाबाजान इनको आप मजदूरी पर क्यों नहीं रख लेते। यह शरीफ हैं और बलवान हैं। बुजुर्ग ने कहा कि बेटी उनकी शराफत अमानत और ताकत की जानकारी तुम्हें कैसे हुई? बेटी बोली उस की ताकत उस दिन देखी जब उसने अकेले कुएं का ढक्कन उठा लिया जबकि दूसरे सब मिलकर उसको उठाते हैं उसकी शराफत यह है कि वह मेरे आगे चल रहा था और पूरे रास्ते उसने मुड़कर नहीं

www.abulhasanalinadwi.org

देखा। मजदूरी और नौकरी के लिये ताकत और अमानतदारी की आवश्यकता है जब ताकत नहीं होगी तो काम क्या करेगा और अगर अमानतदारी नहीं तो उसकी ताकत का क्या लाभ। वह तो फिर बेईमानी करेगा।

बाप ने बेटी की बात से इत्तेफाक (सहमति) किया लेकिन वह सोचने लगे और एक समझदार बाप की तरह हर बात को सोचा और दिल में कहा कि मेरी दामादी के लिऐ इससे अच्छा युवक और कौन हो सकता। कम से कम मदयन में तो इस तरह मुझे नहीं दिखता। शायद अल्लाह ने इस नवयुवक को मेरी दामादी के लिये ही भेजा है। इसके बाद बुजुर्ग ने मूसा अ0 से बड़ी दानाई और प्यार से कहा कि मैं चाहता हूँ अपनी इन दो बेटियों में से किसी एक से तुम्हारा विवाह कर दूं। इस शर्त पर कि तुम हमारे यहाँ आठ वर्ष मजदूरी करो। अगर तुम दस साल पूरे करना चाहो तो तुम्हें अधिकार है। मैं तुम्हें दस वर्ष पूरे करने के लिये मजबूर नहीं करूंगा। मुझको तुम इन्शाअल्लाह अच्छा पाओगे।

इस बुजुर्ग को यह चिन्ता सता रही थी कि शादी के बाद यह नवयुवक अपनी पत्नी को लेकर चला जायेगा और मैं बुढ़ापे में अकेला रह जाउंगा।

मूसा अ0 ने उनकी राय से सहमति दिखाई और यह सोच लिया कि शायद इसी में हमारे लिये भलाई है अल्लाह इसमें बरकत देगा। अल्लाह ने उनको मदयन

www.abulhasanalinadwi.org

पहुँचाया शेख से मिलवाया और उनके दिल में मुहब्बत और प्यार डाला।

मिस्र वापसी

निर्धारित समय (दस साल के बाद) पूरा करने के बाद मूसा अ० ने मदयन छोड़ने का इरादा किया। बुजुर्ग की दुआयें लीं और पत्नी को लेकर उनसे चलने की इजाजत चाही बुजुर्ग ने अल्लाह के भरोसे बेटी और दामाद को रूखसत किया (विदा किया) मूसा अ० ने अंधेरी और ठंडी रात में अपना सफर शुरू (आरम्भ) किया। इस जंगल में ठंडक से बचने तथा तापने के लिये आग कहाँ थी। आग न मिली तो रात कैसे बीतेगी और रास्ते का पता कैसे चलेगा। मूसा अ० यही सोच रहे थे कि उनको आग नज़र आई। आग देखकर अपनी पत्नी से कहा कि तुम यहीं ठहरो मैं आग लेकर आता हूँ। शायद इससे हमारी परेशानी दूर हो जाये।

इसी शौक में मूसा अ० आग लेने गये जब उसके करीब पहुँचे तो आवाज आई 'ऐ मूसा! मैं तुम्हारा परवरदिगार हूँ। तुम अपने पैरों से अपने जूते (खड़ाव) उतार दो। तुम पवित्र भूमि पर हो।'' वहीं अल्लाह ने मूसा अ० से बातें की और उनके दिल में डाला (वह्य की) वहाँ अल्लाह ने उनसे कहा कि ''मैंने तुम्हें नुबूवत के लिये चुन लिया है। वह सुनो जो तुमसे कहा जा रहा है।''

www.abulhasanalinadwi.org

"मैं अल्लाह हूँ– कोई मेरे सिवा बन्दगी के लायक़ नहीं है– तुम मेरी इबादत करो। मेरे लिये नमाज़ पढ़ो और पढ़ाओ– क़यामत आने वाली है।"

मूसा अ0 के हाथ में एक डंडा था जिसको अपनी सहायता के लिये उठाये हुए थे। मूसा अ0 को इस छड़ी के गुण (विशेषतायें) मालूम नहीं थे। अल्लाह ने मूसा अ0 से पूछा कि "तुम्हारे दाहिने हाथ में क्या है?"

मूसा अ0 बोले– कि "यह तो मेरी लाठी है। मूसा उसकी अच्छाइयां बताने लगे। मूसा अल्लाह से देर तक बातें करना चाहते थे कहने लगे कि मैं इससे टेक लगाता हूँ इससे मैं बकरियों के लिये पत्ते झाड़ता हूँ। अल्लाह ने फरमाया "अच्छा मूसा इसे जमीन पर रख दो।" मूसा अ0 ने उसको जमीन पर डाल दिया वह लाठी तो जिन्दा साँप हो गई। अल्लाह ने मूसा अ0 से कहा कि "इसको पकड़ लो और डरो मत हम इसको पहली हालत में लौटा देंगे।" यानी फिर इसको लाठी बना देंगे।"

अल्लाह ने हज़रत मूसा को एक दूसरी निशानी भी दी। और वह थी चमकदार हाथ। अल्लाह ने फरमाया :–

अपना (दाहिना) हाथ अपने (बाईं) बगल में ले जा कर निकालो उस से रौशनी निकलेगी बिना किसी रोग के।"

"फ़िरऔन के पास जाओ वह बड़ा सरकश हो गया है।"

अल्लाह ने हज़रत मूसा को हुक्म (आदेश) दिया कि वह अब उन निशानियों के साथ वापस जायें और वह

www.abulhasanalinadwi.org

काम करें जिस काम के लिये उनको निशानियाँ दी गई हैं। और जिस के लिये पैदा किया गया है। फ़िरऔन ने बड़ा फसाद (दंगा) फैला रखा है। और बहुत जालिम हो गया है कौमे फ़िरऔन अल्लाह का इन्कार करती है और उसने अल्लाह की जमीन में बड़ी गड़बड़ी मचा रखी है। अल्लाह को यह बात बिल्कुल पसंद नहीं कि उसकी जमीन में कोई गड़बड़ी करे।

अल्लाह ने फ़िरऔन और उसकी कौम (जाति) के पास मूसा को भेजने का इरादा फरमाया। वह कौम बड़ी बुरी हो गई थी मूसा अ० सोचने लगे कि फ़िरऔन तक कैसे पहुँचा जाये और उस घमण्डी और जालिम का वह कैसे सामने करेंगे। वह जानते थे कि अभी कल ही तो उन के हाथों एक किबती की मौत हुई है। कल की बात वह अभी भूले न होंगे। उनको मिस्र से डरते हुए निकलना पुलिस का पीछा करना याद है। वह जानते थे कि उनको पुलिस और महल वाले खूब पहचानते हैं। अपना डर (भय) अल्लाह के सामने रखा और कहा कि "ऐ अल्लाह – मैंने उनके एक आदमी को मार डाला है मुझे डर है कि वह पहचान लेंगे और मुझे मार डालेंगे।

मूसा अ० ने कहा कि मेरी जबान में लुकनत भी है। अल्लाह को इन सब बातों की खबर है अल्लाह चाहता है कि इसके बावजूद वह फ़िरऔन के पास जायें। जब अल्लाह ने मूसा अ० से कहा कि जालिम कौम के पास

जाओ (फ़िरऔन की कौम) हम तुम्हारे साथ सुनने वाले है।

अल्लाह से मूसा अ० ने कहा कि "ऐ अल्लाह– वह मुझे झुठलायेंगे मेरी बड़ी दिल शिकनी करेंगे, मेरी जबान में लुकनत है वह मेरी बात सही तरह समझेंगे नहीं। आप मेरे साथ हारून को कर दीजिये। उन का एक पाप मेरे ऊपर है मुझे इस का डर है कि बदले में वह मुझे कत्ल कर देंगे।

अल्लाह ने फरमाया– "कोई हरज नहीं तुम दोनों हमारी निशानियों के साथ जाओ हम तुम्हारी बातों को सुनेंगे।"

वह दोनों फ़िरऔन के पास आये और उससे कहा कि हम दोनों अल्लाह के दूत हैं। तुम बनी इस्राइल को हमारे साथ जाने दो।

अल्लाह ने बड़ी नम्रता से फ़िरऔन से बात करने को मूसा और हारून से कहा अल्लाह एक हद तक दुश्मन से नम्रता से बात करने को पसंद करता है। अल्लाह ने उन दोनों से फ़िरऔन और उसकी कौम से प्रेम और नम्रता से बात करने को कहा। शायद वह उनकी बातों से प्रभावित हों और अल्लाह से डरने लगें।

फ़िरऔन के सामने

मूसा अ० फिरऔन को अल्लाह की दावत देने उसकी सभा में पहुँच गये उनकी इस हिम्मत पर फ़िरऔन को

www.abulhasanalinadwi.org

बहुत गुस्सा आया और बड़े घमण्ड से बोला कि यह कौन नवयुवक आ गया है। क्या यह वही लड़का नहीं है जिस को समुद्र से निकाला गया था। फ़िरऔन ने लड़के (मूसा) से कहा कि हमने तुम्हें लड़के की तरह पाला और तुमने हमारे यहाँ कई वर्ष बिताये और हमने वह सब कुछ किया जो कर सकते थे लेकिन तुम ने किया जो कुछ किया अर्थात एक किबती को कत्ल किया तुम बड़े नाशुक्रे और नाफरमान हो (विद्रोही हो) मूसा अ0 उसकी बात पर गुस्सा नहीं हुए। उसने जो कुछ कहा उसको झुठलाया भी नहीं और न उस पर झगड़ा किया और न आपत्ति जताई बल्कि गंभीर और नम्रता से उस को उत्तर देते हुए उससे कहा कि मैंने जो कुछ किया वह अनजाने में हुआ मैं यहाँ से तो भागा केवल तुम्हारे डर से। अब मैं तुम्हारे पास आया हूँ अपने परवरदिगार के आदेश पर। उसने मुझे तुम्हारे पास रसूल (दूत) बनाकर भेजा है। मूसा अ0 ने फ़िरऔन से कहा कि तुमने मुझे पालकर बड़ा किया बड़ा एहसान किया लेकिन तुमने मुझे कैसे पाला? तुमने यदि बच्चों को कत्ल किये जाने के आदेश न दिये होते तो मेरी माता मुझे नील में न डालती और तुमने मेरी कौम को जानवर और गधा समझा और उनके साथ वैसा ही व्यवहार किया। तुमने उनको बड़े कष्ट दिये और उनको कुत्तों की जन्जीरों से बाँध दिया।

www.abulhasanalinadwi.org

तुमने इस कौम के एक आदमी का पालन पोषण किया क्या एहसान किया? यह तुम्हारी बड़ी भूल है।

हाँ तुम्हारा मुझ पर यह एहसान (उपकार) होगा अगर तुम बनी इस्राइल को छोड़ दो और उनको मेरे साथ जाने दो।

अल्लाह की ओर दावत

फ़िरऔन हज़रत मूसा की बातों का कोई जवाब (उत्तर) न दे सका और जब उनसे बचना चाहा तो सवाल कर बैठा कि "ऐ मूसा हमें बताओ तुम्हारा परवरदिगार कौन है? मूसा अ० ने उस को जवाब दिया कि "मेरा रब वह है जो धरती व आकाश और जो चीज़ें भी इनके बीच हैं उन सब का परवरदिगार है यदि तुम विश्वास करो तो।"

मूसा अ० का यह जवाब फिरऔन को बहुत खला और उसको बड़ा गुस्सा आया। उसने चाहा कि सभा वाले भी इस जवाब पर गुस्सा हों और आश्चर्य करें। उनसे कहने लगा कि तुम इस की बातों को सुन नहीं रहे हो कि यह क्या कहता है। मूसा अ० की बात अभी समाप्त नहीं हुई थी। उन्होंने फिरऔन से कहा कि "मेरा रब (परवरदिगार) तो तुम्हारा भी रब (खुदा) है और तुम्हारे बाप दादा का भी परवदिगार। इसके बाद तो फिरऔन का पारा चढ़ गया और गुस्से में अपने आदमियों से कहा जो रसूल तुम्हारी तरफ भेजा गया है वह पागल है।"

मूसा अ० ने उससे फिर कहा "कि मेरा रब तो पूरब–पश्चिम का भी मालिक है और जो कुछ इसके बीच है उसका भी पैदा करने वाला है।"

फिरऔन ने मूसा को इस कड़वे विषय से हटने के लिये कहा कि अच्छा मूसा यह बताओ हमारे पूर्वज (वंशज) का क्या हाल है फिरऔन ने सोचा कि अगर मूसा कहेंगे कि वह सत्य पर थे तो कहूँगा कि वह तो पत्थर की पूजा करते थे और अगर मूसा कहेगे कि वह गुमराही और हिमाकत में थे तो यह बात सुनकर सभा सदस्यों को गुस्सा आ जाएगा और कहेंगे कि मूसा ने तो हमारे बाप दादा को गाली दी। मूसा अ० फिरऔन से अधिक बुद्धिमान थे। उनको अल्लाह की तरफ से ज्ञान मिल रहा था। मूसा अ० ने फिरऔन से कहा कि इसका ज्ञान और जानकारी तो मेरे परवरदिगार को है और मेरा अल्लाह किसी को न तो गुमराह (भटकाता) करता है और न भूलता है। मूसा अ० समझ गये कि फिरऔन के पास अब कोई जवाब नहीं है। मूसा अ० ने फिर उससे कहा कि मेरे पैदा करने वाले ने तुम्हारे लिये जमीन को बिस्तर बनाया और उसने तुम्हारे लिये जमीन में रास्ते (मार्ग) बनाये और उसने तुम्हारे लिये आकाश से पानी उतारा। मूसा अ० की इन बातों से फिरऔन को बड़ी हैरत हुई और उसको बड़ा तअ़ज्जुब (आश्चर्य) हुआ। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह मूसा की इन

www.abulhasanalinadwi.org

बातो का क्या जवाब दे। बादशाहों की आदत है कि जब उनको कोई जवाब नहीं बन पड़ता है तो उनको गुस्सा आता है। फिरऔन को भी मूसा अ0 की बातो पर गुस्सा आया और कहने लगा कि मूसा "तुमने मेरे सिवा किसी और को उपास्य माना तो मैं तुम्हें सजा दूंगा। और जेल में डलवा दूँगा।"

मूसा अ0 के मोजेजात (निशानियाँ–पहचान)

जब फिरऔन ने जेल की धमकी दी तो मूसा अ0 ने फिरऔन से कहा कि "अगर तुम्हारे सामने अपने मोजेजात (निशानियाँ) दिखालाऊं तो तुम उसको मानोगे (विश्वास करोगे)"? फिरऔन बोला कि "अच्छा दिखलाओ अगर तुम बडे सच्चे हो तो।" मूसा अ0 ने अपनी लाठी जमीन पर डाली तो वह सचमुच का साँप हो गई। फिर मूसा ने अपना हाथ बगल में करके बाहर निकाला तो वह रोशन हो गया। यह देखकर फिरऔन ने अपने सभा सदस्यों से कहा कि "मुझे तो यह जादूगर मालूम पड़ता है" सब ने बादशाह की ताईद की और कहने लगे कि यह तो खुला (स्पष्ट) जादू है। मूसा अ0 ने उससे कहा कि "कितनी बड़ी धाँधली करते हो। जब हमने सच्चाई बताई तो तुम उसको जादू कहते हो। तुम्हें पता है कि जादूगर कभी सफल नहीं होते। अंत में फिरऔन ने एक और चाल चली और कहने लगा कि "तुम चाहते हो कि हम अपने बाप दादा के धर्म को छोड़ दें और बाप दादा को जो करते

www.abulhasanalinadwi.org

देखा उससे हट जायें। यह बात हम तुम्हारी नहीं मानेंगे।" फिर उसने अपने दरबारियों को मूसा का हव्वा खड़ा करके डराया और कहने लगा कि मूसा अपने जादू कि जोर पर तुमको तुम्हारी जमीन से निकालना चाहता है। तुम बताओ इस बारे में तुम्हारी क्या राय है क्या सुझाव है?

दरबारी कहने लगे कि आप अपने देश के बड़े-बड़े जादूगरों को बुलवाकर मूसा से मुकाबला करवा दीजिये। बादशाह ने उनकी राय से सहमति जाहिर की और एलान करा दिया कि जो भी जादू जानता है वह बादशाह के पास आ जाये। मिस्र के कोने-कोने से जादूगर बादशाह के पास आ गये और समय निर्धारित हो गया। लोंगो से कहा जाने लगा कि जादूगर सफल होंगे तो हम उनके साथ होंगे।

मैदान में

लोग सुबह ही मैदान जाने के लिये निकल पड़े और सब उस मैदान में जमा हो गये जहाँ यह मुकाबला होना था। मैदान में बच्चे, औरतें, मर्द बूढ़े और जवान सब आ गये। घर के घर खाली हो गये। घरों मे वही बचे रह गये जो बीमार थे या मजबूर थे।

मतरिया फिरऔन की जमीन में एक गाँव था उस गाँव में केवल चर्चा थी तो जादू और जादूगारों की। असवान, अकसर तथा जीजा शहरों के मशहूर जादूगर

www.abulhasanalinadwi.org

भी आये। आपस में वह बातें करने लगे कि कौन सफल होगा? मिस्र के बड़े से बड़े जादूगर आ गये और सोचने लगे कि हम में एक से बढ़कर एक हैं। कोई तो सफल होगा ही। मूसा की हैसियत ही क्या है। उसने और उसके भाई ने जादू सीखा नहीं है। उनकी सफलता में शक (संदेह) है। उसका पालन–पोषण महल में हुआ है और फिर वह डर कर मिस्र से चला गया था। कुछ वर्ष मदयन में बिताये। उसने जादू कहाँ और किससे सीखा होगा? मिस्र में तो नहीं सीखा यह यकीन है। और मदयन में कोई सिखाने वाला नहीं है यह यकीन है। और मदयन में कोई सिखाने वाला नहीं है यह भी पता है। बनी इस्राईल भी आशा–निराशा के साथ आये। दिल में दुआ माँग रहे थे कि अल्लाह मूसा पर और बनी इस्राईल परं रहम फरमाये और उनकी सहायता करे।

बड़े गर्व और घमण्ड के साथ जादूगर मैदान में पहंचे। रंग बिरंगे कपड़े पहने और अपने लाठी डंडों और रस्सियों के साथ आये। बड़े खुश थे और इतरा कर कहते थे कि आज जौहर दिखाने का दिन है। आज बादशाह हमारा लोहा 'मानेगा आज लोग हमारी कीमत जानेंगे।

जादूगर जमा होने के बाद बादशाह से बोले कि हमारी कामयाबी (सफलता) पर हमको क्या इनाम मिलेगा। बादशाह (फिरऔन) ने कहा कि तुम मुझसे करीब (निकट) हो जाओगे यही तुम्हारा इनाम और पुरस्कार होगा। इस

www.abulhasanalinadwi.org

बात से लोग धोखा खा गये और वह उसके लालच का शिकार हो गये।

झूठ और सच

मूसा अ0 ने उन जादूगरों से कहा कि जो कुछ तुम्हें डालना है डालो। जादूगरों ने फिरऔन की इज़्ज़त की कसम खाते हुए अपनी सफलता की आशा लिये अपने डंडों और रस्सियों को जमीन में डाला। लोगों ने डंडे और रस्सियों को जिन्दा साँप देखा तो उनको बड़ा आश्चर्य हुआ और डरे भी। उनसे बचने के लिये लोग पीछे हटे और शोर मचाने लगे साँप–साँप मूसा अ0 ने भी वह देखा जो लोग देख रहे थे। मूसा अ0 को भी हैरत हुई उनकी रस्सियों और लकडियों को जादू के जोर पर दौडते हुए साँप बन जाने पर। मूसा अ0 ने भी दिल में डर महसूस किया। उनका डरना स्वाभाविक था। आज परीक्षा का दिन था। आज ही की सफलता पर इज़्ज़त व जिल्लत (बेइज़्ज़ती) का दारोमदार था। अगर जादूगर सफल हो जाते हैं तो अल्लाह की (मंशा) मसलेहत और अगर मूसा सफल होते हैं तो अल्लाह की मरजी। मूसा की सफलता एक आदमी की सफलता नहीं है उनकी सफलता दीन की सफलता है।

बादशाह के सामने, उनकी सफलता सत्य की जीत असत्य के सामने। खुदा न करे जादूगर जीतें अल्लाह ने मूसा अ0 को हिम्मत दी और उनसे कहा कि डरने की कोई

www.abulhasanalinadwi.org

बात नहीं। जीतोगे तुम्हीं। तुम्हारे हाथ में जो है उसको डाल दो। वह उन सबको खा जायेगा। जो कुछ उन्होंने जादू के जोर पर बनाया है। यह तो जादूगरों का धोखा है। जादूगरों ने जो पेश किया है उसमें सफल नहीं हो सकेंगे।

मूसा अ0 ने जादूगरों से कहा कि जो कुछ तुमने बनाया है अल्लाह उसको समाप्त कर देगा। अल्लाह गड़बड करने वालों के कार्य को ठीक नहीं समझता सत्य–सत्य ही है। अपराधी चाहे या न चाहे अल्लाह अपनी बात सत्य साबित करके रहेगा। मूसा अ0 ने अपना डंडा डाला। उन्होंने (जादूगरों ने) जो कुछ बनाया था उस को समाप्त कर दिया। सत्य की विजय हुई और जो कुछ उन्होंने किया वह बरबाद हो गया। इससे जादूगर परेशान हुए और दंग रह गये। और कहने लगे कि यह क्या हो गया। वास्तव में जादूगर तो हम हैं हम जादू की हर किस्म जानते हैं। हम तो इस फन के गुरू हैं जो कुछ मूसा ने दिखाया है वह जादू हो ही नहीं सकता। अगर वह जादू होता तो हम जादू से जादू का तोड़ करते हैं। हमारा फन (काम करतब) हमारा अभ्यास और हमारी उस्तादी सब खत्म कर दी। हमारा जादू इसके सामने ऐसा फीका पड़ गया और ऐसा गायब हुआ जैसे सूरज के सामने ओस गायब हो जाती है।

यह चमत्कार कहाँ से आ गया? अवश्य ही यह अल्लाह की ओर से है। जादूगरों को इतमिनान हो गया

कि मूसा नबी हैं और अल्लाह ने उन को मुअजिज़े (चमत्कार) से प्रतिष्ठित किया इस पर वह चीख पड़े और ऊंची आवाज़ बोले :– "हम हारून और मूसा के रब पर ईमान लाए और यह कहते हुए सजदे में गिर गये : हम सारे जहानों के रब पर ईमान लाए जो मूसा व हारून का रब है।

फिरऔन की धमकी

जादूगरों के ईमान लाने से फिरऔन का पागलपन ऽढ़ गया गुस्से से उठता, बैठता गरजता और बरसता था। उसकी सब योजना असफल हो गई। उसने तो जादूगरों के जरिये से मूसा को शिकस्त देना चाहा था। उल्टे जादूगर मूसा के लश्कर में शामिल हो गये। उसने मूसा को आड़ बना कर उनका शिकार करना चाहा और वह सब ईमान ले आये। सब तदबीरें (उपाय) उलटी हो गई। फिरऔन तो समझता था कि वह लोगों की अकल पर वैसे ही शासन करता है जैसे उनके जिस्मों पर करता है लोगों के दिलों पर व उसी तरह हुकूमत करता है जैसे उनकी जबानों पर उसकी हुकूमत है। किसी को यह हक नही कि उससे पूछे बिना कोई किसी पर ईमान ले आये।

फिरऔन ने ईमान लाने वालों से कहा कि तुम मुझ से पूछे बिना कैसे ईमान ले आये। उसने उसी शाहाना घमण्ड में कहा कि वही तुम्हारा बड़ा है। जिसने तुम्हें जादू सिखाया है। यह तुम्हारी साजिश है जो तुमने शहर

www.abulhasanalinadwi.org

में रची है ताकि शहर के रहने वालों को शहर से निकाल दो। तुम्हें तो अब पता चलेगा। फिर फिरऔन ने एक तीर और छोड़ा और बोला कि मैं तुम्हारें हाथ पैर काट दूँगा और तुम सब को फाँसी पर लटका दूँगा।

ईमान लाने वालों ने उसकी हर बात सुनी। हर तीर सहा और कहा कि अब हमें कोई परवाह नहीं। हम तो अपने पैदा करने वाले की तरफ लौटकर आने वाले हैं। हम तो चाहते हैं कि अल्लाह हमारे पाप माफ कर दे और हम प्रथम ईमान लाने वालों में से हैं। उन्होंने ईमानी जोश और दिलेरी के साथकहा कि "हम अपने परवरदिगार पर ईमान ले आये हैं ताकि वह हमारे पापों को क्षमा कर दे और जो जबरन जादू करने पर तूने हमको विवश किया और अल्लाह ही बेहतर और बाकी रहने वाला है कुछ शक नहीं कि जो आदमी अपराधी होकर अपने परवरदिगार के सामने गया उसके लिये जहन्नम है जिसमे वह न तो मरेगा और न जिन्दा ही रहेगा। और जो ईमान वाला होकर उसके सामने हाजिर होगा और उसने नेक काम किये होंगे, यही लोग हैं जिनके बड़े दर्जे होंगे। हमेशा रहने के लिए बाग जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी उसमें हमेशा रहेंगे। यह बदला है उस का जो कुफ्र से पाक हुआ।"

इस बात का फिरऔन पर बहुत असर पड़ा और उसकी रातों की नीदें उड़ गईं। खाना-पीना अच्छा नहीं

लगता। दूसरों ने भी उसके गुस्से को उभारा, उन लोगो ने फिरऔन से कहा क्या मूसा और उन की कौम को इस लिये छोड़ोगे कि वह धरती पर उत्पात मचाए और तुझे तेरे उपास्यों को छोड़ रखे?

फिरऔन का गुस्सा बढ़ गया और कहने लगा कि "मैं इन सबके बच्चों को कत्ल करा दूँगा। इनकी महिलाओं को जिन्दा छोड़ दूँगा और मैं यह कर सकता हूँ।"

फिरऔन ने पूरी कोशिश की बनी इस्राईल और मिस्र वालों को मूसा से दूर रखने की। और कहने लगा कि ऐ मिस्र वालो यह मिस्र जिसमें नहरें बहती हैं क्या मेरी नहीं हैं क्या तुम देख नही रहे हो। अब बताओ मैं अच्छा हूँ या यह जलील।

उसने फिर लोगों को खिताब करते हुए कहा कि "ऐ लोगो मैं नहीं समझता कि मेरे अलावा कोई भगवान है।"

उसने अपनी बेवकूफी और घमण्ड से कहा कि ऐ हामान तुम आग जलाओ ईट पकाओ और एक ऊंचा महल मेरे लिये बनाओ। मुझे तो मूसा झूठे दिखाई पड़ते हैं। हामान ने ईंटे पकाई और ऊंचा महल भी बनवा दिया लेकिन कहाँ तक बनवाता। हामान थक गया कारीगर थक गये और परेशान हुए। मिट्टी खत्म हो गई ईटें खत्म हो गई और वह बादलों तक भी नहीं पहुंच पाया चाँद तो दूर की बात है। वह चाँद तक न पहुँचा तो सूरज तक

www.abulhasanalinadwi.org

क्या पहुँचते, सूरज तक नहीं पहुँचा तो उस से दूर कि सितारों और आकाश तक क्या पहुँचता। वह अपनी नाकामी पर बहुत शर्मिन्दा हुआ और बैठ गया। वह बेवकूफ नहीं जानता था कि अल्लाह ही ने यह धरती और आकाश पैदा किया और चीजों को पैदा किया है और वही आसमान और जमीन में जो भी है उसका पैदा करने वाला है।

फिरऔन की समझ में अब कुछ नहीं आ रहा था सिवाये इसके कि मूसा ही को मार डाला जाये। इससे उसकी शिक्षा और दावत समाप्त हो जायेगी। मूसा ने बड़ा परेशान कर रखा है और बड़ी गड़बड़ी मचा रखी है।

फिरऔन कहने लगा मुझे तो मूसा को कत्ल करना है वह अपनी मदद के लिये अपने रब को पुकारे। मुझे तो मूसा से डर है कि यह तुम्हारा दीन धर्म बदल देगा और जमीन में बड़ी गड़बड़ी पैदा कर देगा।

फिरऔन के परिवार का ईमान लाने वाला

फिरऔन ने मूसा अ0 को कत्ल करने का जब इरादा किया तो एक व्यक्ति फिरऔन के परिवार का खड़ा हुआ जो उस समय तक अपना मुसलमान होना छुपाये हुए था। वह कहने लगा– कि तुम एक ऐसे आदमी को कत्ल करना चाहते हो जो केवल यह कहता है कि मेरा खुदा अल्लाह है और फिर उसने अपने नबी होने की निशानियाँ और प्रमाण दिये। तुम क्यों इसके रास्ते में रोड़ा बनते हो

www.abulhasanalinadwi.org

और उसको कष्ट पहुँचाते हो। तुम अगर उसको उसके हाल पर छोड़ दों। अगर वह झूठ कहता है तो यह उसका कर्म है तुम क्यों चिंतित हो? अगर तुमने उसको कष्ट दिया वह नबी है तो तुम्हारी बरबादी यक़ीनी है।

उस मोमिन की बात का मफ़हूम कुर्आन में

जब फिरऔन ने इरादा किया कि मूसा को क़त्ल करे तो फिरऔन की क़ौम का एक मोमिन खड़ा हुआ जिसने अपना ईमान छुपा रखा था उस ने कहा :–

क्या तुम ऐसे आदमी को क़त्ल करोगे जो कहता है अल्लाह मेरा रब है जब कि वह तुम्हारे रब की ओर से निशानियाँ लेकर आया है।

उस नेक आदमी ने कहा : क्यों मूसा के पीछे पड़ते हो और क्यों उन को कष्ट देते हो?

अगर तुम उस पर ईमान नहीं लाते तो उसे उस के हाल पर छोड़ दो, उस का रास्ता न रोको, यदि वह झूठा है तो उसके झूठ का वबाल उसी पर आएगा और अगर उस को कष्ट दोगे और उसके लिये रुकावट डालोगे और वह तुम्हारा नबी होगा तो तुम्हारी तबाही है।

अगर वह सच्चा है तो तुम को उस में से कुछ पहुँच कर रहेगा जिस से वह डरा रहा है।

मेरे भाइयों अपने राज्य पर घमण्ड न करो न अपनी शक्ति तथा सेना पर गर्व करो।

ऐ मेरी क़ौम आज तुम्हारा राज है तुम इस धरती पर

www.abulhasanalinadwi.org

सत्ता में हो अगर (मूसा के कत्ल के कारण) खुदा का अजाब व आया तो हमारी कौन सहायता करेगा?

फिरऔन ने जवाब दिया : मैं तो तुम को वही बता रहा हूँ जो मैं समझ रहा हूँ (अर्थात मूसा का कत्ल ही उचित है) और मैं तुम को ठीक बात ही बता रहा हूँ।

उस नेक आदमी ने चाहा कि अपनी कौम को बुरे अंजाम और अत्याचारियों के परिणाम से अवगत कराए, उस ने कहा :–

ऐ मेरी कौम मुझे भय है तुम पर पिछली कौमो की तरह अजाब का जैसे कौमे नूह, आद, समूद और वह जो उन के पीछे आए और अल्लाह अपने बन्दो पर किसी तरह का जुल्म नहीं करना चाहता और उस नेक आदमी ने उन को क़ियामत के अजाब से डराया और कहा जानते हो कियामत क्या है, कियामत का दिन वह दिन है जिसमें आदमी अपने भाई से दूर भागेगा इसी प्रकार अपनी माँ से अपने बाप से, अपनी बीवी से, अपनी सन्तान से, हर एक अपने अपने हाल में फंसा होगा।

उस दिन दोस्त बअज के बअज दुश्मन होंगे सिवाए संयमी लोगों के उस दिन रिश्ते नाते भूल जाएंगे। कोई किसी को न पूछेगा।

उस मलिकुल जब्बार अल्लाह पुकारेगा : आज किस का राज है? खुद ही उत्तर देगा एक कहहार (बलवान्न) अल्लाह का।

www.abulhasanalinadwi.org

जिस दिन सब घबरा जाएंगे चीखेंगे एक दूसरे को पुकारेंगे।

जिस दिन पीठ फेर कर लोग भागेंगे और अल्लाह के मुकाबले में कहीं कोई बचाने वाला न होगा।

नेक आदमी ने कहा :

ऐ मेरी कौम मुझे भय है तुम्हारे लिये चीख पुकार के दिन का जिस दिन पीठ फेर कर (जहन्नम की ओर) लौटोगे उस वक्त तुम को कोई अल्लाह से बचाने वाला न होगा, और जिससे अल्लाह भटका दे उसे राह पर लाने वाला कोई नहीं। नेक आदमी ने कहा : अल्लाह ने तुम को एक नेअमत दी, लेकिन तुम ने उसे न पहचाना और उस की जैसी कद्र करना चाहिये थी तुम ने उस की कद्र न की यहाँ तक वह नेअमत तुमसे ले ली गयी तो तुम ने उस पर अफसोस किया वह नेअमत यूसुफ नबी की शक्ल में थी अल्लाह की रहमत हो उन पर सलामती जिसे तुम ने नहीं पहचाना न उसकी कद्र की जैसी कद्र चाहिये थी।

लेकिन जब वह वफात पा गये तो तुम ने कहा यूसुफ जैसा कोई नबी नहीं, यूसुफ जैसा कोई बादशाह नहीं यूसुफ जैसा कोई आदमी नहीं, कौन है? हमारे लिये नबी उन के पीछे, कौन है हमारे लिये उन जैसा?

और इससे पहले तुम लोगो के पास निशानियों के साथ यूसुफ आए, तो तुम लोग जो कुछ वह लाए थे उस में बराबर शक में रहे यहाँ तक जब वह वफात पा गये तो

www.abulhasanalinadwi.org

तुम लोग कहने लगे, अल्लाह उन के पीछे कोई रसूल न भेजेगा। इसी तरह करोगे इस नबी के बाद भी और पछताओगे।

अगर वह सत्यवादी है तो तुम्हें वह सब चीजें मिलेंगी जिनका उसने तुमसे वादा किया है। भाईयों अपनी हुकूमत पर घमण्ड न करो। न अपनी शक्ति तथा सेना पर घमण्ड करो। उस नेक बंदे ने कहा कि "ऐ लोगो! आज तुम्हारी हुकूमत है धरती पर तुम को गल्बा है अगर तुम पर अल्लाह का अजाब आया तो हमारी कौन सहायता करेगा। फिरऔन ने कहा मैं तुमको वहीं बता रहा हूँ जो मैं देख रहा हूँ, मै तुम को केवल सत्यमार्ग दिखा रहा हूँ। उस नेक बन्दे ने कौम को बुरे और जुल्म करने वालों के अनजाम से डराते हुए कहा कि वही होगा जो नूह अ0 और समूद अ0 आदि की कौमों का हुआ। "अल्लाह अपने बन्दों पर कभी जुल्म नहीं करता।" उस नेक बन्दे ने क़ियामत के दिन से उनको डराया।

क़ियामत के दिन हर आदमी परेशान होगा। भाई–भाई से भागेगा बाप, माँ बेटा और दोस्त से भागेगा। हर एक को अपनी चिन्ता और फिक्र होगी। उस दिन बाज, बाज के दुश्मन होंगे। लेकिन अल्लाह से डरने वाले शान्तिपूर्वक होंगे उनको किसी बात का न तो गम होगा और न परेशानी होगी। उस दिन (कयामत के दिन) नाता व रिश्ता कुछ काम न आयेगा और न कोई किसी की

www.abulhasanalinadwi.org

खैरियत लेगा। उस दिन बादशाहों के बादशाह की तरफ से एलान होगा कि आज किसकी बादशाहत है जवाब मिलेगा कि आज केवल अल्लाह की बादशाहत है जो जबरदस्त (सबसे बड़ा) है।

उस दिन सब चीख रहे होंगे दोहाई दे रहे होंगे लेकिन अल्लाह के सिवा किसी को कहीं सुरक्षा नहीं।

उसी नेक सिफत आदमी ने कहा कि "ऐ कौम! मैं उस दिन से तुम्हें डराता हूँ जिस दिन अल्लाह के अलावा कहीं कोई सुरक्षा नहीं पायेगा। और अल्लाह जब किसी को हिदायत देना न चाहे तो उसको कोई भी सीधा रास्ता नहीं दिखा सकता है।"

आदमी की नसीहत

आदमी ने अपनी कौम को नसीहत की और बड़े प्यार से। उस मोमिन बंदे ने कहा कि "ऐ कौम! मेरे पीछे चलो मैं तुम्हें सीधा रास्ता दिखाऊँगा।"

उस नेक आदमी ने जान लिया था कि कौम दुनिया की जिन्दगी में मस्त है और फिरऔन को अपने राज–पाट और ताकत का घमण्ड है। उनको पता होना चाहिये कि यह जीवन एक सपना है और यह संसार समाप्त हो जाने वाला साया है। वह आदमी जानता था कि मूसा की पैरवी से कौम को रोकने वाली चीज केवल दुनिया का नशा है। दुनिया के नशे की चाहत सोचने समझने की ताकत समाप्त कर देती है। इसीलिये वह मूसा की आवाज को

www.abulhasanalinadwi.org

सुनी अनसुनी कर देते हैं। उस आदमी ने उनको सोते से जगाना चाहा। उसने कहा कि :–

"ऐ कौम! यह दुनिया (संसार) तो थोड़े दिन लाभ उठाने की जगह है असल जिन्दगी आखिरत की है।"

उस कौम के जाहिल–बेवकूफ लोग उसको कुफ्र व शिर्क की दावत देते थे और अपने बाप–दादा के धर्म की तरफ उसको बुलाते थे।

वह आदमी जब उनको अल्लाह की तरफ बुलाता तो वह उसको बाप–दादा के दीन धर्म की तरफ लौट आने को कहते। जब उन्होंने पूरी शक्ति से कुफ्र की ओर बुलाया तो उस नेक आदमी ने कहा :–

"ऐ कौम! तुमको क्या हो गया है। मैं तुमको नजात की तरफ बुलाता हूँ तो तुम मुझे आग की तरफ बुलाते हो। तुम मुझे कुफ्र (अल्लाह की नाफरमानी) और शिर्क (अल्लाह के साथ किसी को साझी बनाना) की तरफ बुलाते हो जिसकी मुझे जानकारी नहीं। मैं तुमको अल्लाह की तरफ बुलाता हूँ जो ताकतवर है और क्षमा करने वाला है। वह नेक आदमी उनसे कहता कि बताओ कौन नबी है जो तुम्हारे भगवान की तरफ से आया है। और वह कौन सी तुम्हारी किताब लेकर आया है। तुमने और तुम्हारे बाप–दादा ने बस उनके नाम रख लिये हैं। अल्लाह ने उसकी कोई दलील (सबूत) नहीं उतारी।

जिन की ओर मैं बुला रहा हूँ वह लोग अल्लाह के

www.abulhasanalinadwi.org

रसूल हैं। उन लोगों ने अल्लाह की ओर बुलाया यह इब्राहीम अलैहिस्सलाम है और यह यूसुफ और अल्लाह के नबी मूसा (यह अंबिया जो अल्लाह की ओर बुलाते रहे)।

तुम मुझे जिस की ओर दावत देते हो वह न दुन्या में पुकारे जाने के लाइक है न आखिरत में।

वह आदमी जब उनकी हिदायत (सीधे रास्ता चलने) से निराश हो गया और उन की मूर्खता से उकता गया तो उन को छोड़ दिया। और उनसे कहा कि जो कुछ मैंने कहा है वह याद करोगे। मैंने तो अपना मामला अल्लाह पर छोड़ दिया है अल्लाह अपने बन्दों को देखने वाला है।

इन बातों से लोग क्रोधित हुए और फिरऔन के लोगो ने उसको कत्ल करने का इरादा कर लिया लेकिन अल्लाह ने उसकी हिफाजत (रक्षा) की और उसके दुश्मन को बरबाद कर दिया।

अल्लाह ने उनकी बुरी योजनाओं को विफल कर दिया और अल्लाह ने उनको बचाया और फिरऔन के परिवार को बुरे संकट में डाल दिया।

फिरऔन की बीवी (पत्नी)

फिरऔन यह समझता था कि जिस तरह वह लोगों के शरीर जिस्मों पर शासन करता है उसी प्रकार लोगों के दिमागों पर भी शासन कर सकता है। उसकी बादशाहत लोगों के दिलों पर और उनकी जबानों पर है।

www.abulhasanalinadwi.org

उसकी नज़र मे किसी (मिस्री) को उससे पूछे बिना किसी से अकीदत रखने और ईमान लाने का हक नहीं है।

उसके देश (मिस्र) में कहीं कोई मूसा पर ईमान ले आता तो वह गुस्से में पागल हो जाता। गुस्से में बैठता और खड़ा होता। चीखता–चिल्लाता और गरजता। वह यह बरदाश्त नहीं कर सकता था कि कोई भी उससे पूछे बिना ईमान ले आये। वह यह नहीं देख सकता था कि कोई भी उससे पूछे बिना ईमान ले आये। वह यह नहीं देख सकता था कि कोई उसके देश में रहे और उसकी बात न माने कोई उसका खाये और उसकी नाशुक्री करे, वह कहता मैं मिस्र में हर एक जान से अधिक प्रिय हूँ।

फिरऔन यह भूल गया कि वह अल्लाह की जमीन और उसकी बादशाहत में जीवन बिता रहा है। उसी का दिया हुआ खा रहा है और उसकी नाशुक्री कर रहा है।

अल्लाह ने उसके घर में अपनी निशानी दिखलाई उसकी पत्नी में अल्लाह ने उसको दिखलाया कि वह लोगों की अक्ल और जिस्मों पर हुकूमत करता है। लोगों के दिलों और जबानों पर उसकी हुकूमत है। वह यह नहीं जानता कि अल्लाह इन्सान और उसकी बीवी के बीच रुकावट बन जाता है। अल्लाह इन्सान और उसके दिल के बीच रोक बन जाता है। ईमान फिरऔन के घर में दाखिल हुआ और उसने न जाना। उसके इख्तियार में कुछ न रहा उसकी बीवी अल्लाह पर ईमान लाई। और

www.abulhasanalinadwi.org

फिरऔन की बड़ाई से इन्कार किया। वह मिस्र के बादशाह जो उसका पति था उसके न चाहने पर भी मूसा पर ईमान लाई।

फिरऔन की पत्नी मूसा पर ईमान लाई कि वह फिरऔन को अल्लाह की मख्लूक में सबसे ज्यादा जानती थी। और वह फिरऔन को सबसे अधिक प्रिय थी। फिरऔन की पुलिस कुछ न कर सकी और इस बारे में कुछ न जान सकी। जब की वह च्यूटी की सूँघ और कौवे की आँख रखती थी फिरऔन को इसकी खबर भनक भी नहीं लगी। जब कि वह उसके करीब था। यदि उसको पत्नी के ईमान लाने की खबर हो भी जाती तो वह क्या कर सकता था। बेशक वह जिस्म का तो मालिक था। लेकिन अक्ल पर उसकी हुकूमत न थी वह जबानों पर तो बादशाहत कर रहा था लेकिन दिल पर उसका काबू नहीं था।

फिरऔन या दुनिया के किसी भी व्यक्ति के बस में नहीं था कि वह किसी आदमी और उसके दिल के बीच हायल (रुकावट) हो।

फिरऔन को अपनी पत्नी पर पूरा हक था लेकिन अल्लाह का हक सबसे बड़ा है। पत्नी के लिये अपने पति का आज्ञापालन अनिवार्य है। परन्तु अल्लाह के अवज्ञा सृष्टा का आज्ञापालन नहीं किया जा सकता। बेटे पर फर्ज है कि वह अपने माँ बाप के आज्ञाकारी रहें। उनके साथ भलाई करें परन्तु शिर्क करने में उनका आज्ञापालन

www.abulhasanalinadwi.org

न करें। अल्लाह तआला ने फरमाया :-

अगर तेरे माँ बाप तुझे मजबूर करें की मेरे साथ किसी को शरीक करे जिसके बारे में तू अंजान है। (तू जान ले) तू उनका कहना न मान दुनिया में तू उनके साथ भलाई कर उनकी सेवा में रहे। इताअत (आज्ञापालन) उनका कर जो मेरी ओर झुकते हैं फिर तुमको सब को मेरी ओर लौटना है।

फिरऔन की पत्नी अपने ईमान पर डटी रही और अल्लाह के दुश्मन के घर में अल्लाह की इबादत (पूजा) करती रही। वह अल्लाह से डरती थी और फिरऔन के कुकर्मो से अल्लाह के हुजूर में अपनी बराअत पेश करती थी। अल्लाह फिरऔन की पत्नी से राजी और खुश हुआ और उसको फिरऔन और उसके कर्मों से नजात दी। अल्लाह ने उनके ईमान और बहादुरी को मुसलमानों के लिये बतौर मिसाल बयान किया जिस को कुर्आन में इस तरह बयान किया गया है :-

और मिसाल बयान की अल्लाह ने ईमान वालों के लिये फिरऔन की बीवी की जब उस ने कहा कि "ऐ मेरे परवरदिगार! मेरे लिये बहिश्त (स्वर्ग) में अपने पास एक घर बना और मुझको फिरऔन और उसके बुरे कर्मों से नजात दे। और मुझको जालिम लोगों से बचा।"

बनी इस्राईल की आजमाईश (परीक्षा)

जब आम लोगों को बनी इस्राईल से फिरऔन की

www.abulhasanalinadwi.org

दुश्मनी की जानकारी हुई तो वह भी बनी इस्राईल से दुश्मनी करने और उन को तकलीफ पहुँचाने में फिरऔन के साथी बन गये। (तो हाल यह हुआ कि) बच्चे भी बनी इस्राईल पर जरी थे (यहाँ तक कि) कुत्ते भी उन पर भौंकते थे।

मूसा अ० बनी इस्राईल को तसल्ली देते और सब्र की वसीयत करते। और उनसे कहते कि "बस अल्लाह से मदद (सहायता) माँगो और सब्र करते रहो। अल्लाह की जमीन है वह जिसको चाहे इसका वारिस बना दे। अच्छा अंजाम अल्लाह से डरने वालों के लिये है।"

बनी इस्राईल इन तकलीफों और आजमाईशों से तंग आ गये तो मूसा से कहने लगे कि :–

आप ने हमको कुछ भी लाभ नहीं पहुँचाया और किसी बात में हमारे काम न आये। उन्होंने कहा : आप के आने से पहले हमे कष्ट दिया जाता रहा और आप के आने के बाद भी हमको कष्ट दिया जा रहा है।

लेकिन मूसा अ० निराश नहीं थे और न घबराये थे। वह तो उनको समझाते और कहते कि घबराओ नहीं अल्लाह जल्द ही तुम्हारे दुश्मन को नष्ट कर देगा और तुम्हीं में से किसी को इस जमीन में जानशीन (बादशाह) बना देगा। फिर तुमको देखेगा कि क्या करते हो। मूसा अ० ने कौम को समझाते हुए कहा कि "अगर तुम अल्लाह पर ईमान लाये हो तो अल्लाह पर भरोसा भी करो यदि

www.abulhasanalinadwi.org

तुम मुसलमान हो।"

कौम ने कहा कि हमने अल्लाह पर भरोसा किया है। "ऐ अल्लाह! हमें जालिम कौम के जुल्मों की आजमाईश में न डाल हमें तू अपनी रहमत से काफिर कौम से छुटकारा दिला दे।"

फिरऔन बनी इस्राईल को अल्लाह की इबादत से रोकता था। किसी को अल्लाह की इबादत करते और नमाज पढ़ते देखता तो बेहद क्रोध में आ जाता था। वह इससे भी रोकता था कि उसकी जमीन पर अल्लाह की मस्जिदें हों और उनमें अल्लाह की इबादत हो। मस्जिदों में नमाज और अल्लाह की इबादत उसके गुस्से को बढाती थी। कितना जाहिल था। फिरऔन जमीन अल्लाह की है न कि फिरऔन की।

उससे बड़ा जालिम कौन होगा जो अल्लाह की जमीन पर अल्लाह की इबादत से रोके। फिरऔन में यह ताकत नहीं थी कि किसी को अपने घर में उसके पसन्द का कार्य करने से रोक सके। अल्लाह ने बनी इस्राईल से मूसा के जरिये कहा कि "अपने घरों को किबला बनाकर घरों में नमाज पढ़ो।" फिरऔन और उसकी पुलिस बनी इस्राईल को अल्लाह की इबादत से नहीं रोक सकी। बन्दा और उसके रब के बीच कौन रुकावट डाल सकता है? मुस्लिम और अल्लाह की इबादत के बीच कौन रुकावट बन सकता है?

www.abulhasanalinadwi.org

कहतसाली

फिरऔन की सरकशी और अल्लाह से दुश्मनी बहुत बढ़ गई तो अल्लाह ने उसको सावधान (होशियार) किया और उससे कहा गया कि अल्लाह काफिरों को पसंद नहीं करता अैर वह यह भी नहीं चाहता कि उसकी जमीन में कोई गड़बड़ पैदा करे। फिरऔन बड़ा बेवकूफ था उसकी बुद्धिमानी जाती रही। गधे को जब तक मारा न जाये ठीक से नहीं चलता। अल्लाह ने भी फिरऔन को सचेत करने का इरादा फरमाया। मिस्र उपजाऊ देश है। धनवान देश है, फलों तथा अनाजो का देश है। तुम जानते हो कि यूसुफ अ0 के काल में मिस्र अपने दूर–दराज मुल्को की सूखा काल में कैसे मदद की थी। शाम और कनआन वालो की कैसे मदद की थी। मिस्र कितना जरखेज (उपजाऊ) क्षेत्र था जिसकी जमीन को नील दरया सीचता था दरयाए नील मिस्र की खुशी और दौलत का खजाना है। पर फिरऔन और मिस्र वालों ने नील को रिज़क़ (रोजी–रोटी) की कुन्जी समझ रखा था। वह यह समझने लगे कि नील की वजह से बारिश की भी जरूरत नहीं।

वह नहीं जानते थे कि रोजी की कुंजियाँ अल्लाह के पास है। अल्लाह इस पर कादिर (सामर्थ्य) है कि जिसे चाहे रोजी ज्यादा दे और जिसको चाहे कम कर दे। यह लाभदायक नील अल्लाह के आदेश पर हो बह रही है।

www.abulhasanalinadwi.org

अल्लाह ने जब नील को आदेश दिया उसका पानी कम हो गया और जमीन में चला गया। खेतों की सिंचाई प्रभावित हुई। फलों में कमी आ गई गल्ला कम हो गया। और सूखे पर सूखा पड़ने लगा फिरऔन, हामान, और फिरऔन की पुलिस सब विवश थे कुछ न कर सके अब मिस्र वाले समझे कि फिरऔन उनका रब नहीं, रोजी तो अल्लाह के हाथ में है। फिर भी फिरऔन और अहले मिस्र न जागे, वाज व नसीहत और इबरत से मिस्रियों को शैतान ने दूर कर दिया। वह कहने लगे यह सूखा और यह तंगिया मूसा की नुहूसत से है।

आश्चर्य होता हैं उनकी इस सोच पर। मूसा पहले भी थे और बनी इस्राईल भी एक जमाने से हैं। यह हालत जो हुई वह मूसा के कारण नहीं बल्कि यह तो उनके कुफ्र के और बुरे कर्मों की सजा है। फिरऔन और उसकी कौम मूसा की दुश्मनी पर आमादा रही और कहती रही कि हम इन के जादू के आगे झुकने वाले नहीं हैं। और कहते हमें मरऊब (डराने) करने के लिये जो भी निशानियाँ लाओ उनका हम पर कोई असर (प्रभाव) नहीं होगा और हम तो तुम पर ईमान नहीं लायेंगे।

पाँच निशानियाँ

अल्लाह ने उनपर एक दूसरी निशानी उतारी बारिश खूब हुई नील में बाढ़ आ गई। खेत और खेती डूब गई

www.abulhasanalinadwi.org

और फल बरबाद हो गये। यह बारिश उनके लिये वबाले जान बन गई।

पहले उनको पानी की कमी की शिकायत थी और अब उनको पानी की ज्यादती की शिकायत है। हमने उन पर टिड्डियाँ भेजीं। जिन्होंने उनकी खेती तथा पेड़ों को खा–पी कर बराबर कर दिया। अल्लाह के इस लश्कर के सामने फिरऔन और उसकी पुलिस और सैनिक बेबस थे। उनका मुकाबला वह कैसे कर सकते थे। उनको तलवार और तीर से मारा नहीं जा सकता था। तब फिर मिस्र वालों ने माना कि फिरऔन और हामान कितने बेबस और कमजोर है और उनकी पुलिस नाकारा। लेकिन फिर भी सचेत नहीं हुए और सबक नहीं लिया। इसके बाद अल्लाह दूसरी सेना भेजी और वह खटमल थे। हर जगह खटमल बिस्तरों में खटमल, कपड़ों में खटमल, सर में खटमल उनका जीना हराम कर दिया खटमलों ने। रात भर उनको गाली देकर सुबह करते थे। खटमलों से लड़ने की ताकत उनमें नहीं थी। न वहाँ तलवार चल सकती है और न वहाँ तीर काम आ सकते हैं। फिरऔन, उसकी पुलिस और सेना उन पर काबू नही पा सकती थी। उसके बाद अल्लाह ने उन पर मेंढक भेजे। खाने में मेंढक, पानी और पीने की चीजों में मेंढक, कपड़ों में मेंढक होते, मेंढकों ने उनका जीना हराम कर दिया। पूरे घर में मेंढक ही मेंढक फैल गये। वे एक को मारते दस आ

www.abulhasanalinadwi.org

जाते, गोल के गोल आते गोया घर में पैदा हो रहे हैं। इन मेंढक से पुलिस और गार्ड आजिज आ गये थे।

अल्लाह की पाँचवी निशानी खून थी। उनकी नाको से खून बहता जिसने उनको निढाल कर दिया था। हकीम और डाक्टर आजिज़ और परेशान थे उसके इलाज से कोई दवा काम नहीं कर रही थी। जब भी कोई बला आती तो कहते "ऐ मूसा! यह बला दूर करने के लिये दुआ करो। हम तौबा करेंगे और हम ईमान लाएंगे और बनी इस्राईल को तुम्हारे साथ भेजने को भी तैयार हैं।" जब उनसे मुसीबत टल जाती तो फिर मुकर जाते जिस को पवित्र कुर्आन ने यूं बयान किया है : हमने उनपर तूफान, टिड्डी, मेंढक, खटमल और खून की शकल में अपनी निशानियाँ भेजी लेकिन उन्होने उस पर भी घमण्ड किया वह तो ढीट और फसादी कौम थी।

मिस्र से निकलना

मिस्र की जमीन अपनी फैलाव के बावजूद बनी इस्राईल पर तंग हो गई। मिस्र की उपज तथा हरयाली ले कर वह क्या करते, मिस्र तो उन के लिये जेल था। हर दिन उनको नित नये कष्ट और तकलीफें दी जाती रहीं लेकिन बरदाश्त की भी एक हद होती है। वह भी तो आदम की औलाद थे। उनको भी तकलीफ और कष्ट का एहसास होता था। अल्लाह ने मूसा अ0 को वह्य की कि बनी इस्राईल को ले कर रात में मिस्र से निकल जाएं।

www.abulhasanalinadwi.org

फिरऔन की पुलिस को इसका एहसास हो गया था। एहसास होना भी चाहिये था कि पुलिस कौओं की आँखे रखती थी। और चींटी की तरह सूंघती थी। सुन गुन मिलते ही फिरऔन को इस की सूचना दे दी।

मूसा अ0 बनी इस्राईल को लेकर रात में मुकद्दस (पवित्र) जमीन की तरफ चल पड़े। यह सब 12 ग्रुपों में बटे थे और हर ग्रुप का एक अमीर (आगे चलने वाला) था। शाम का रास्ता मूसा अ0 का जाना बूझा था। वह इस रास्ते पर दो बार सफ़र (यात्रा) कर चुके थे (एक बार वह इसी रास्ते मदयन गये और फिर इसी रास्ते मिस्र लौट आये)। मूसा ने कुछ और सोचा और अल्लाह ने कुछ और चाहा। हुआ वही जो अल्लाह ने चाहा था।

अल्लाह के इरादे से मूसा रास्ता भटक गये। मूसा समझ रह थे कि वह बनी इस्राईल को उत्तर की तरफ ले जा रहे हैं। हालंकि वह रात की तारीकी में उनको मशरिक (पूरब) की तरफ ले जा रहे थे। वहाँ उनको लाल समुद्र मौजें मारता मिला। देखते ही बोल पड़े कि ऐ अल्लाह हम कहाँ पहुँच गये। उनको (मूसा को) जवाब मिला कि हम तो समुद्र के सामने हैं।

मुड़कर देखा तो गर्द उड़ रही थी एक बड़ा लश्कर आ रहा था। उस को देख कर सब चीख पड़े और कहने लगे "ऐ इमरान के बेटे तुमने तो हमें धोखा दिया और हमको मरवाने का पूरा सामान कर दिया। तुम

www.abulhasanalinadwi.org

हमको समुद्र के किनारे फिरऔन से मरवाने के लिये ले आये। वह तो हमें चूहे की मौत मारेगा। भागने और बचने का अब कोई रास्ता भी नहीं है।

हमने तो तुम्हारे साथ क़ोई बुराई नहीं की थी फिर तुम किस बात का बदला हमसे ले रहे हो। हमने तो तुम्हारी खातिर सब कष्ट और मुसीबत बरदाश्त की और तुम्हारे साथ यहाँ तक आये। अब समुद्र हमारे सामने है और दुश्मन हमारे पीछे है। अब तो मौत यकीनी है। बनी इस्राईल की आँखों के नीचे अंधेरा छा गया। दुनिया उनके लिये तारीक (अंधेरी) हो गई। डर से आवाज बैठ गई और जीवन से निराश (नाउम्मीद) हो गये।

ऐसी हालत में बड़े–बड़े अपने हवास खो बैठते हैं और उनकी हिम्मत जवाब दे देती है। लेकिन मूसा अ0 को अपने रब (खुदा) पर पूरा भरोसा और विश्वास था। वह लोगों के शोरोगुल से नहीं घबराये और नबी की शान के मुताबिक कहा : मेरा अल्लाह मेरे साथ है वही मेरा मार्गदर्शन करेगा। अल्लाह ने मूसा को समुद्र में अपनी लकड़ी मारने का आदेश (हुकम) दिया। मूसा अ0 ने लकड़ी मारी। समुद्र फट गया। पानी रूक गया। हर तरफ पहाड़ की तरह। उसमें 12 ग्रुपों के लिये 12 रास्ते बन गये। पूरी कौम शान्ति और सुकून से उससे पार हो कर खुश्की में पहुँच गये।

फिरऔन का डूबना

फिरऔन ने बनी इस्राईल को शान्तिपूर्वक समुद्र पार करते देख लिया तो सोच में पड़ गया। उनके पार करने पर फिरऔन ने अपने लश्कर (सेना) से कहा कि देखो तो समुद्र की तरफ, इसमें मेरे हुकम से रास्ते बन गये। ताकि भागने वालों को पकड़ लें। फिरऔन अपने लश्कर सहित आगे बढ़ा। बनी इस्राईल फिर घबरा गये और कहने लगे अरे दुश्मन तो आ गया। यह जालिम हम तक आ पहुँचा। उसने इरादा कर लिया कि रास्ता पार करे। अब कोई चीज इससे बचा नहीं सकती। हमको यह पकड़ लेगा और मिस्र ले जायेगा। हमें जेल में सख्त तकलीफ देगा या फिर हमें यहीं मार डालेगा।

मूसा अ0 ने अपनी लकड़ी को फिर समुद्र में मारना चाहा ताकि समुद्र अपनी हालत में आ जाये। अल्लाह ने मूसा को वह्‌य की समुद्र को खामोश रहने दो। पूरा लश्कर इसी में डूब जायेगा।

जब फिरऔन और उसका लश्कर समुद्र के बीच (जो उस समय सूखा था) पहुँचा तो समुद्र के रास्तों का रूका पानी मिल गया। फिरऔन ने जब पानी का मिलना देखा तो उसके घमण्ड का नशा उतर गया और उसने समझ लिया कि वह अब डूब जायेगा तो बोला कि "मैं अब ईमान लाता हूँ कि कोई उपास्य नहीं सिवाए उस के जिस पर इस्राईल ईमान लाये हैं। मैं अब मुसलमानों में से

www.abulhasanalinadwi.org

हूँ।" लेकिन उसकी बदबख़ती (दुर्भाग्य) थी। उस समय उन लोगों की तौबा कुबूल नहीं होती जिन्होंने बुरे कर्म किये और मौत को देख लिया तो कहा अब ईमान लाये। जिस वक्त मौत से मुतअल्लिक अल्लाह की कुछ निशानियाँ आ जाएं तो उस वक्त का ईमान लाना कोई लाभ न देगा सिवाय इसके कि उस हालत से पहले ईमान न हो या ईमान के बाद कोई नेकी की हो, चुनाचि फिरऔन से कहा गया अब तुम ईमान ला रहे हो। इससे पहले तो विरोध ही करते रहे, आदेशों की अवहेलना की और तुम तो बड़ी गड़बड़ी मचाने वाले में थे। फिरऔन उसी समुद्र में डूब कर मर गया, वह शक्तिशाली और जालिम जिसने हजारो बच्चों व बूढ़ों को मारा था और गर्दनें उड़ा दी थी।

वह सरकश मारा गया जिसने हजारो मासूमों को कत्ल किया था। मिस्र का बादशाह अपने महल और तख्त (सिंहासन) से बहुत दूर मरा। ऐसी जगह मरा जहाँ कोई हकीम उसकी दवा के लिये नहीं था। और कोई उसका मित्र नहीं था जो उससे हमदर्दी (मदद) करता। वहाँ कोई ऐसा नहीं था जो उसके मरने पर रोता और सोग (गम) मनाता।

बनी इस्राईल को उसके मरने का यकीन ही नहीं आ रहा था वह तो समझते थे कि फिरऔन मर ही नहीं सकता। हमने उसको बगैर खाये पिये कई कई दिन

www.abulhasanalinadwi.org

गुजारते देखा है। समुद्र ने उसका बदन फैंक दिया ताकि लोगों को उसकी मौत का विश्वास (यकीन) हो जाये। अल्लाह ने फिरऔन से कहा कि "हम तेरे बदन को बचाये रखेंगे ताकि तेरे बाद के आने वाले सबक लें और उनके लिये निशानी हो।" उस का बदन इबरत (नसीहत) और लोगों को देखने के लिये सुरक्षित है।"

फिरऔन का लश्कर भी आखिरकार डूब गया और उनमें से कोई जिन्दा नहीं बचा। और मिस्र उनसे छूट गया, वह उस विस्तृत मिस्र में अपने दफन के लिये एक गज जमीन भी न पा सके।

कितने बाग और चश्में छोड़े। कितने खेती और अच्छी जगह छोड़ी और नेयमतें जिनसे वह लाभ उठाते थे। हम इस प्रकार दूसरी कौम को मिस्र की जमीन का वारिस बना दिया उनके चले जाने पर न तो आसमान रोया न जमीन रोयी और उनको मोहलत नहीं दी गई।

खुश्की में

बनी इस्राईल अमनों सुकून (शान्ति) की जगह पहुँच गये और आजाद व शरीफों की तरह खुली फजा में साँस लीं वहाँ फिरऔन और उसकी पुलिस और हामान का कोई डर नहीं था। वह अब सुकून व इतमीनान से चल रहे थे अब उनको खुदा के सिवा किसी का खौफ न था। परन्तु वह शहर की जिन्दगी गुजार रहे थे यहाँ सहराई जंगल में धूप की तेजी में उनको तकलीफ थी। यह सब

www.abulhasanalinadwi.org

अल्लाह के मेहमान थे। उनकी उसी तरह इज्जत और आदर हुआ जैसा बादशाहों का, क्या तुम ने नहीं देखा कि बादशाह अपने मेहमानो का किस तरह आदर करता है। उनके लिये धूप और गरमी से बचने के लिये खेमे लगवाता है। बेशक अल्लाह की दी हुई इज्जत सबसे बड़ी है। अल्लाह ने बादलों को उन पर साया करने का आदेश दिया। वह बादलों के साये में चलते फिरते थे। उनके साथ–साथ बादल चलते थे। जहाँ रूकते बादल रूक जाते थे। उस सेहरा (रेगिस्तान) में न कोई कुआँ था और न पानी का कोई और प्रबन्ध। प्यास लगी तो बनी इस्राईल मूसा अ० से अपने प्यास की शिकायत करने लगे उसी अन्दाज से जैसे एक बच्चा अपनी माँ से पानी और दूध मांगता है। मूसा अ० ने दुआ की तो अल्लाह ने मूसा अ० से छड़ी को पत्थर पर माने को कहा। मूसा अ० ने पत्थर पर छड़ी मारी। 12 चश्में 12 गिरोह के लिये निकल आये। हर एक ने अपना चश्मा जान लिया। उसके बाद बनी इस्राईल ने भूख की शिकायत की और कहने लगे कि "ऐ मूसा तुम हमें मिस्र से ले आये वहाँ तो फल फ्रूट थे और खाने पीने की हर चीज उपलब्ध थी। तुमने यहाँ लाकर डाल दिया जहाँ खाने का कोई इन्तेजाम नहीं है।

मूसा अ० ने अल्लाह से उनके खाने के लिये दुआ की। अल्लाह ने उनके खाने का इन्तेजाम फरमा दिया।

www.abulhasanalinadwi.org

पेड़ों के पत्तों पर मिठाई की तरह एक चीज गिरती थी। उनके लिये चिड़ियाँ भेजी जो पेड़ों पर आकर बैठ जातीं और यह उनको आसानी से पकड़ लिया करते थे। यही मन और सलवा था जो उनकी मेहमानदारी में अल्लाह ने भेजा।

बनी इस्राईल की नाशुक्री

बनी इस्राईल के जौक को और उन के अखलाक (स्वभाव) को लम्बी गुलामी ने बदल दिया था। वह किसी एक बात पर रूकते ही नहीं थे। किसी चीज पर न रुक सकना उनकी आदत बन गई। वह बिल्कुल बच्चों की तरह हरकतें करने लगे थे। नेयमतों पर शुक्र करना कम हो गया और शिकायतें ज्यादा करने लगे। जिस चीज के करने से रोका जाता उसको करते ओर जिसके करने को कहा जाता उसको न करते थे। इस मन्न व सल्वा पर थोड़े ही दिन गुजरे थे कि कहने लगे "ऐ मूसा हम तो एक तरह की चीज खाते–खाते उकता गये हैं। हलवा और गोश्त खाते–खाते उब गये। अब तो हमारा जी सब्जी तरकारी खाने को कर रहा है। ऐ मूसा! हम एक तरह के खाने पर सब्र न कर सकेंगे तू अल्लाह से उन चीजों को देने के लिये कहो जो जमीन में पैदा होती हैं। जैसे :– सब्जी, प्याज, लहसुन और अरहर की दाल इत्यादि।" मूसा अ० को इन मूर्खों की बातों पर बड़ा आश्चर्य हुआ और इन की इस बेवकूफी पर चीख पड़े

www.abulhasanalinadwi.org

और कहने लगे कि अरे बदबख्त अच्छी चीज के मुकाबले बुरी चीजों के लिये क्यों कहते हो। हलवे और चिड़ियों के गोश्त के मुकाबले सब्जी की हैसियत क्या है। कहाँ शाहाना खाना और कहाँ किसानों का। कितने बदजोक हो गये हो तुम और कितनी गलत इन्तिखाब है तुम्हारा। लेकिन वे सब्जी खाने पर जिद पकड़े हुए थे। मूसा अ0 ने उनसे कहा कि जो तुम चाहते हो वह चीज तुम्हें हर गाँव और शहर में खूब मिलेगी। अब तुम कियामकरो किसी शहर में वहाँ तुम्हारे लिये वह सब है जो तुम मांग रहे हो।

बनी इस्राईल में बचपना आ गया था और बच्चों जैसी हरकतें करने लगे थे। जिस काम को करने को कहा जाता उसकी मुखालफत अवश्य करते और उसकी खिल्ली उड़ाते थे। उन्होंने यह तय कर लिया था कि जो कुछ उनसे कहा जायेगा उसका वह उल्टा ही करेंगे। जैसे उजड्डी बच्चा उस से बैठने को कहा जाता है तो वह खड़ा हो जाता है। खड़े होने का कहा जाए तो बैठ जाता है। उससे कहो चुप रहो तो बोलता उन में बच्चा की जिद, बुरों की खबासत, दुशमनों का इस्तिहजा (खिल्ली उड़ाना) आदत बनी इस्राईल में पैदा हो गई और पागलों की हिमाकत आ गई थी। बनी इस्राईल चाहते थे कि वह गाँव में रहें और सब्जी तरकारी खायें। लेकिन जब उनसे कहा गया : "इस गाँव में पड़ाव करो

www.abulhasanalinadwi.org

जहाँ से चाहो जी भर खाओ लेकिन शहर के दरवाजा में झुक कर क्षमा क्षमा कहते हुए दाखिल हो, हम तुम्हारी खताओं को मुआफ कर देंगे और भलाई करने वालों की और बढ़ा कर देंगे।" यह इलाही आदेश सुन कर वह बिगड़ गये और उन में से कुछ शहर के दरवारजे में नामवारी के साथ खिल्ली उड़ाते हुए चूतडों के बल दाखिल हुए। और जो उन से (क्षमा क्षमा) कहते हुए दाखिल होने को कहा गया था उसको अपने अति से बदल डाला (गेहू, गेहूं कहते दाखिल हुए) बस अल्लाह ने ऐसे लोगों पर बलाए और बलाएं भेज दी और वह चूहों की मौत मरे।

बनी इस्राईल को जब किसी काम को करने को कहा जाता तो वह नफरत से सवालों की बौछार कर देते। यह आदमी की आदत है कि जब उसको काम करना नहीं होता तो वह सवाल ज्यादा करने लगता है। बनी इस्राईल में किसी का कत्ल हो गया। बनी इस्राईल ने इसको बड़ी अहमियत (महत्त्व) दी। कातिल का पता नहीं चल पा रहा था। लोगों में उस कत्ल और कातिल पर बड़ी चेमीगोईयाँ (बातें) होने लगी। वह सब मूसा अ0 के पास आये और कहने लगे "ऐ मूसा! इसमें आप हमारी सहायता करें। आप खुदा से दुआ करें कि वह कातिल को जाहिर कर दे।"

गायें

मूसा अ0 ने दुआ की। अल्लाह ने "वह्य" की कि

www.abulhasanalinadwi.org

वह ब्नी इस्राईल से एक गाय जब्ह करने को कहें। बस इस हुक्म पर एक मुसीबत आ गई। अब उन्होंने गाय के बारे में सवाल करना शुरू क़र दिये और उसका मजाक उडाने लगे।

मूसा अ0 ने जब बनी इस्राईल से गाय जबह करने को कहा तो कहने लगे "ऐ मूसा! क्यों हमसे मजाक करते हो मूसा अ0 ने कहा (अल्लाह की पनाह) कि मैं ऐसी जहालत करने वालों में हूँ।

अब उन्होंने सवाल करना शुरू (आरम्भ) कर दिये और कहने लगे कि अपने खुदा से पूछो कि गाय कैसी हो? उनसे कहा गया कि अल्लाह कहता है कि गाय न तो बूढ़ी हो और न बछिया। इन दोनों के बीच की हो। अब तुम वही करो जिसके करने का तुम्हें आदेश दिया जा रहा है। वह इस बात से संतुष्ट नहीं हुए और कहने लगे कि मूसा अपने खुदा से उस के रंग के बारे में पूछ लो कि किस रंग की हो? बनी इस्राईल से कहा गया कि गाय पीले और गहरे रंग की हो जो देखने में अच्छी और भली लगे। अब जवाब न बन पड़ा तो फिर पूछ बैठे और कहने लगे कि मूसा अपने खुदा से पूछो कि स्पष्ट बतायें कि गाय कैसी हो। हम तो गड़बड़ा गये। समझ में कुछ नहीं आ रहा है। खुदा ने चाहा तो अब समझ जाएंगे। मूसा अ0 ने उनसे कहा कि अल्लाह कहता है कि ऐसी गाय जबह करो जो अच्छी किस्म की हो। वह हर तरह

www.abulhasanalinadwi.org

से पूर्ण हो। उसमें किसी किस्म की कमी न हो कोई ऐब व अवगुण न हो। इस बार और सवाल नहीं किया इनशाअल्लाह कहा था इस लिये समझ गये लेकिन सवाल कर कर के तंगी पैदा कर दी। गया ढूंढ़ने में बड़ी मुश्किल पेश आई आखिर कार अल्लाह को रहम आया और ऐसी गाय का अल्लाह ने प्रबन्ध (इन्तेजाम) कर दिया। अब उनको वैसी गाये मिल गयी जैसी जबह करने को उनको आदेश था। उन्होंने उसको बहुत अधिक कीमत देकर खरीदा और उसको जबह कर दिया। मगर बड़ी बेदिली और मजबूरी में ऐसा किया। अल्लाह ने हुक्म दिया कि जबह हुई गाय के किसी हिस्से से मकतूल को मारा जाये तो वह जी उठेगा और कातिल का नाम बता देगा। और फिर ऐसा ही हुआ।

शरीअत (दस्तूर)

अब बनी इस्राईल का जानवरों की तरह से रहना–सहना समाप्त हुआ और आदमियों की तरह जीवन गुजारने लगे। शरीफों की तरह स्वतंत्रता से उस खुश्की में रहने लगे। अब उनको शरीयत की आवश्यकता पड़ी जिसकी रोशनी में सही और सीधे रास्ते पर चलें। इन्सान को सही रास्ते पर चलने के लिये अल्लाह की शरीअत (कानून) और उसकी रोशनी की आवश्यकता पड़ती है। अल्लाह के नूर (रोशनी) के बिना यह संसार अंधकार में है। यही नूर नबियों की शिक्षा है जिससे लोग हिदायत

www.abulhasanalinadwi.org

पाते हैं और जिन्होंने इस नूर और उनकी शिक्षा को नहीं माना, मनमाने ढंग से अपना जीवन बिताया वह पथ भ्रष्टता के अंधकार में रहे।

उस नूर और हिदायत और नबियों की शिक्षा के बिना अकाइद (धार्मिक विकास) औहाम व खुराफात (भ्रम तथा व्यर्थ बाते) जिस पर बच्चे हंसे। क्या तुमने सुना और देखा है कि काफिरों मुश्रिको यहूदियों नसारा के अकायद (श्रद्धा, विश्वास) जाहिलाना और मनगढंत शिक्षा, बिना नबियों की शिक्षा के जहालत, शक और अन्दाजो के सिवा कुछ भी नहीं। यह लोग अपने ख्यालों गुमानों और अन्दाजो पर चलते हैं और बेशक अन्दाजे से हक नहीं मिलता।

नबियों के प्रकाश के बिना आचार अशुद्ध जिस में या आवश्यक बातों की कमी या व्यर्थ बातों की भरमार होगी। क्या तुमने नहीं देखा कि जिसने नबियों की पैरवी नहीं की वह हर चीज में सीमा पार कर जाते हैं। और वह अपनी इच्छा पर अमल करते हैं और दूसरों के हक मार लेते हैं। हुकूमत व सियासत नबियों के नूर के बिना, अत्याचार पागलपन है, लोगो के मालों में उन के अधिकारों में और उन की जानों में माल व दौलत बरबाद होती है। लोगो का हक छीना जाता है। और लोगों का खून बहाना भी बुरा नहीं समझा जाता है।

क्या तुमने नहीं देखा कि जिनके दिल में अल्लाह का डर नहीं है और शरीअत पर नही चलते हैं वह कैसे दी

www.abulhasanalinadwi.org

दादिलेरी (निडर होकर) से अमानत में खयानत करते हैं और कैसे अल्लाह के दिये धन पर ऐश करते हैं और लोगों का हक मारते हैं और खून खराबा करते हैं।

और कैसे लोगों को गुलाम बनाया। और उन को समूह में बाँट दिया। एक समूह के लड़के को कत्ल किया, औरतों को छोड़ दिया। क्या तुम जानते हो कि जंग–ए–अजीम (प्रथम और द्वितीय) में कितने लोग मारे गये।

अतः समस्त संसार अंधेरियों की अंधेरियों मे है उसे छोड़ कर जो विधाता के प्रकाश से प्रकाशित हुआ।

पवित्र कुर्आन ने सूचित किया

अन्धेरियाँ हैं एक के ऊपर एक (इन अंधेरियों का व्यक्ति) यदि अपना हाथ निकाले तो करीब है कि वह न दिखे जिस को अल्लाह रौशनी न दे उस के लिये कोई नूर नहीं।

नबी लोगों को अल्लाह की इबादत का तरीका सिखाते हैं और बाहमी मुआमलात की तालीम देते हैं।

नबी लोगों को दीन के आदाब के साथ जिन्दगी के आदाब सिखाते हैं, खाने, पीने के तरीके बताते हैं, सोने जागने के आदाब मजलिस के आदाब और हर चीज का अदब सिखाते हैं। नबी इस तरह अदब सिखाते हैं जैसे एक शफीक बाप अपने अजीज बच्चों को सिखाता है। लोग छोटे बच्चों की तरह हैं वह अपनी जवानी में अंबिया की तरबीयत के उस से जियादा

www.abulhasanalinadwi.org

मुहताज हैं जितना वह अपने बचपन में अपने बापों की तराबीयत के मुहताज थे।

जिन लोगों ने यह नबवी तर्बीयत नहीं हासिल की और अंबिया अलैहिमिस्सलाम के लाए हुए आदाब नहीं सीखे वह सहरा के दरखतों की तरह हैं जो खुद से उगे खुद से बढ़े कोई टेढ़ा कोई कांटेदार तो कोई खराब।

तौरात

अल्लाह यह नहीं चाहता था कि बनी इस्राईल का अन्जाम (अन्त वह हो जो किताब व हिदायत के बिना उनसे पहले कौमों का हुआ। और इरादा किया कि यह अंधी ऊंटनी की तरह न भटकते फिरें जिसे पहले की उम्मतें फिरीं। अल्लाह ने मूसा अ0 को हूक्म दिया कि वह पाकी हासिल करें और तीस रोजे रखें फिर तूरे सैना पर आएं ताकि अल्लाह तआला उन से बात करें और उन को एक किताब दें जो उनके लिये रहनुमा हो।

मूसा अ0 बनी इस्राईल की आदत से वाकिफ़ (जानकर) थे। इसलिये उन्होंने अपनी कौम के सत्तर आदमियों का चयन (चुनाव) किया कि यह गवाह रहें कि बनी इस्राईल बड़ी झगड़ालू कौम है। मूसा अ0 ने अपने भाई हारून से कहा कि मेरी गैर हाजिरी (अनुपस्थिति) में मेरा काम देखना। बनी इस्राईल को समझाना और उनकी इसलाह (सुधार) करना। बनी इस्राईल कोई बेढंगी बातें तुम से करें तो उनकी बात न

www.abulhasanalinadwi.org

मानना। मूसा अ० ने ऐसा इस लिये किया कि जमाअत के लिये इमाम जरूरी होता है।

मूसा अ० हारून को पूरे निर्देश देकर तूर चले गये और तीस रोजो के पश्चात निर्धारित स्थान पर पहुँच गये। अल्लाह से मिलने और उससे बात करने के शौक में आप ने जल्दी की और साथियों से आगे पर्वत पर पहुँच गये।

अल्लाह ने पूछा "ऐ मूसा! कौम से पहले जल्दी की आवश्यकता क्या थी?" मूसा अ० बोले कि "वह लोग मेरे पीछे आ रहे हैं मैं आपकी रजा (खुशी) के शौक में जल्दी आ गया।"

अल्लाह ने मूसा से चालीस रातें गुजारने को कहा। चालीस रात पूरे करके मूसा अ० तूरे सीना पर मुकर्ररह मकाम पर पहुँचे वहाँ उन्होंने अल्लाह से बात की और करीब हुए और करीब हुए तो दीदार का शौक बढ़ा अर्ज किया : मेरे रब अपना जलवा दिखाईये अल्लाह जानता था कि इनको मुझे देखने का शौक जरूर है लेकिन मुझे देखने का न इनमें साहस है और न शक्ति। अल्लाह को तो निगाहें नहीं देख सकतीं। वह निगाहों को देख रहा है वह तो सूक्ष्मदर्शी सर्वज्ञ है। पहाड़ अल्लाह के कलाम (बात) का बोझ नहीं उठा सकते हम जब उसके कलाम का भार नहीं उठा सकते तो नूर का भार उठाना तो और कठिन है। अल्लाह ने फरमाया कुरआन को पहाड़ पर उतारते तो वह अल्लाह के डर से रेजा–रेजा हो जाता।

www.abulhasanalinadwi.org

अल्लाह ने मूसा अ० से कहा कि तुममें मुझे देखने का साहस नहीं है फिर भी तुम पहाड़ को देखो अगर पहाड़ अपनी जगह कायम रहा तो तो तुम मुझे देख लोगे। जब अल्लाह ने अपनी तजल्ली (नूर–रोशनी) पहाड़ पर डाली तो पहाड़ रेजा–रेजा हो गया और मूसा बे होश हो कर सजदे में गिर गये। जब होश आया तो बोले : "ऐ अल्लाह मुझे माफ (क्षमा) कर दे मैं तौबा करता हूँ। आप पाक हैं हर ऐब से मैं पहले ईमान लाने वालों में से हूँ।

अल्ला ने मूसा से कहा कि हमने तुम्हें अपना रसूल बनाया और हमने पैगाम पहुचाने और बात करने के लिये तुम्हें चुन लिया है। हम जो कुछ भी तुम्हें दे रहे हैं उसको ले लो और उस पर हमारा शुक्र (धन्यवाद) अदा करो।

मूसा अ० ने किताब की पाटयाँ ली उसमें वह सब बयान किया गया है। जिसकी बनी इस्राईल को जरूरत है। नसीहतें, और हर चीज की तफ्सील है। अल्लाह ने हुक्म दिया "ऐ मूसा! तुम इस को लेकर बनी इस्राईल के पास जाओ। और उन से कहो कि इसे अच्छे तौर पर अपनाएं।

मूसा अ० अपने उन सत्तर आदमियों के पास आये जिनका मूसा ने चयन (चुनाव) किया था और उन को अल्लाह के पुरस्कार (किताब) की सूचना दी तो उन लोगों ने इस का इंकार किया और बड़ी बेशर्मी और ढिटाई से कहने लगे "ऐ मूसा हम तुम्हारी बातों पर उस समय तक

www.abulhasanalinadwi.org

यकीन (विश्वास) नहीं कर सकते हैं जब तक हम अपनी आँखों से खुदा को खुले तौर पर देख नहीं लेते। उनकी इस बेशर्मी और ढिटाई पर अल्लाह बड़ा नाराज हुआ और उन पर बिजली ऐसी गिरी कि वह देखते ही रह गये अर्थात बेजान हो गये। समझने की बात है जब वह अल्लाह की पैदा की हुई बिजली को नहीं बर्दाशत कर सकते थे तो अल्लाह के नूर को कहाँ बर्दाश्त कर सकते है? मूसा अ० ने दुआ की कि ऐ रब अगर आप को मेरी और कौम की हलाकत मंजूर होती तो पहले ही हलाक कर देते क्या अब कुछ बेवकूफों की बेवकूफी से हम को हलाक कर देगे? अल्लाह तआला ने मूसा अ० की दुआ सुन ली और उनको मरने के बाद फिर जिन्दा कर दिया।

मूसा अ० जब तूर पर गये और कुछ समय के लिये बनी इस्राईल से दूर हो गये। मूसा की अनुपस्थिति में शैतान ने अपना काम किया और उनको शिर्क के जाल में फाँस लिया। उन्हीं में से सामरी नाम का आदमी सामने आया और उनके सामने एक बछड़े का जिस्म ला खड़ा किया। उसने कुछ ऐसी तरकीब की जिसके कारण बछड़े के जिस्म से आवाज निकलती थी। उसको देख कर मूर्ख लोग कहने लगे। वास्तव में तुम्हारा खुदा यही बछड़ा है। और मूसा का भी उन से तो भूल हो गई।

बनी इस्राईल सामरी की बातों में आ गये और बछड़े को उपास्य मानने में अंधे बहरे की तरह मान

लिया। उसमें तो जवाब देने की शक्ति भी नहीं है। और न उसके इख्तियार में नफा पहुँचाना है न नुकसान। क्या उन्होंने नहीं देखा कि बछड़ा न बाते करता है न उन को सीधा रास्ता दिखाता है। हारून अ0 ने उन को इस शिर्क से रोका और कहा : ऐ मेरी कौम तुम गुमराही में फंस गये हो तुम्हारा रब तो रहमान है। अतः मेरी पैरवी करो और मेरी बात मानो। लेकिन बनी इस्राईल सामरी के जादू में फंस गये थे और उन के दिलों में बछड़े की मुहब्बत बैठ चुकी थी उन्होंने कहा हम बराबर यही करते रहेंगे यहाँ तक कि मूसा (तूर से) हमारे पास लौट कर आ जाएं।

बछड़ा

बहुत जमाने से बनी इस्राईल अपना जीवन मुश्रेकीन के साथ मिस्र में बिता रहे थे। वहाँ किबतियों को बहुतसी चीजों की इबादत (पूजा) करते देख रहे थे। अतः बनी इस्राईल के दिलों से शिर्क की बुराई जाती रही थी। उनके दिलों में शिर्क से लगाव बढ़ गया और उसकी मुहब्बत उनके दिलो में जड़ पकड़ गई थी। वह जब भी मौका पाते शिर्क की ओर दौड़ पड़ते ऐसे जैसे पानी ढाल की ओर दौड़ पड़ता है। उनके दिलों में कजी आ गई थी उन का जौक बिगड़ चुका था चुनाचि वह सीधा रास्ता देखते तो उस पर न चलते, गलत रास्ता देखते तो उसे अपना लेते।

www.abulhasanalinadwi.org

बनी इस्राईल समुद्र पार कर के एक कौम के पास से गुजरे उसे बुतों (मूर्तियों) की इबादत (पूजा) करते पाया ते मूसा से कहने लगे कि "ऐ मूसा हमारे लिये इन्हीं की तरह पूजा के लिये एक उपास्य उपलब्ध कर दो। मूसा अ0 नाराज हुए और कहा तुम लोग जाहिल कौम हो। कितने ताज्जुब की बात है और कितनी जियादती की बात हैं अल्लाह ने तुम पर ईनाम किया, और मेहरबानी की, तुम को वह दिया जो दुनिया में किसी को न दिया क्या तुम अल्लाह के सिवा कोई और उपास्य चाहते हो जब कि उस ने तुम को सारे आलमों पर बड़ाई दी।

सज़ा

अल्लाह ने "वह्य" के जरिये मूसा अ0 को खबर दी कि बनी इस्राईल को सामिरा ने सही रास्ते से भटका दिया है। वह शीघ्र बनी इस्राईल के पास गुस्से और नाराजगी के साथ आए और अपनी कौम पर नाराज हुए। और अल्लाह वास्ते अपने भाई हारून पर नाराज हुए और कहा : "ऐ हारून! तुम ने बनी इस्राईल को गुमराह और बछड़े की पूजा करते देखा तो उनको ऐसा करने से रोका क्यों नहीं? तुम ने मेरी पैरवी न की तुम ने मेरी मुखालफत की। हारून अ0 ने अपनी सफाई में मूसा अ0 से कहा कि मैंने इनको बहुत समझाया। यह नहीं माने। मैं डरा कि कहीं आप कहें कि तुमने बनी इस्राईल में फूट डाल

दी और मेरी बात का लिहाज न किया। बेशक कौम ने मुझे कमजोर कर दिया और करीब था कि मुझे मार डालती। स्थिति जान लेने के बाद मूसा अ0 ने दुआ की :–

"ऐ अल्लाह मुझे और मेरे भाई को माफ (क्षमा) कर दीजिये और हमें अपनी रहमतों में दाखिल कर लीजिये, आप ही सब रहम करने वाले सब से ज्यिादा रहम करने वाले हैं।

फिर सामरी को सम्बोधित करते हुए मूसा अ0 ने कहा कि तुझे ऐसा करने की क्या सूझी थी। सामरी ने अपना पाप स्वीकार करते हुए कहा कि यह चीज मुझे भली लगी और मेरे दिल ने उसको कुबूल किया और फिर मैंने इसकी शिक्षा दी। सामरी से मूसा अ0 ने कहा कि "जा परे हो जा। तेरी यही सजा है कि जब तक तू जिन्दा रहेगा तेरे करीब कोई नहीं आयेगा और तू सब से कहता फिरेगा कि मुझसे दूर रहो और मुझे मत छुओ। किसी को तुम से सहानुभूति न होगी तू (अकेला) अपना जीवन बितायेगा। इससे बड़ी और क्या सजा हो सकती है? जिसने हजारों को शिर्क से नापाक किया। उसकी यही सजा है कि लोग उसे नजिस समझें और फेंक दें। "जिसने अल्लाह और उसके बंदों के बीच दीवार खड़ी की है उसको आदमियों के बीच रहने का कोई हक नहीं है। जिस बदबख्त ने अल्लाह की जमीन पर शिर्क की

www.abulhasanalinadwi.org

दावत दी वह ऐसा पापी है कि उस के लिये सारी दुनिया उसके लिये यह जमीन कैदखाना होना जरूरी है। मूसा अ0 ने बछड़े के जिस्म को जलाने का हुक्म दिया वह जला दिया गया फिर उसको समुद्र में फेंक दिया।

फिर मूसा अ0 ने अपनी कौम (बनी इस्राईल) से कहा "ऐ कौम तुमने बछड़े को पूज कर अपनी आत्मा पर बड़ा जुल्म (अत्याचार) किया है। अब तुम अपने अल्लाह से अपने पापों को माफ करने के लिये तौबा करो। अपनी आत्मा को मार डालो। यही तुम्हारे लिये (उचित) अच्छा होगा और इसी में अल्लाह के नजदीक तुम्हारी भलाई है।"

फिर बनी इस्राईल ने ऐसा किया। बछड़े की पूजा करने वालों को उन्होंने मार डाला। इस तरह उन्होंने तौबा की। अल्लाह ने उनसे कहा कि "जिन लोगों ने बछड़े को भगवान बना लिया उनको अल्लाह का गुस्सा और उसकी नाराजगी तो मिलेगी ही उनको दुनिया में भी जिल्लत व रूसवाई मिलेगी। ऐसे लोगों को ऐसी ही सजा मिलती है।" बछड़े की पूजा करने वालों और अल्लाह के साथ किसी को शरीक करने वालों को भी कियामत तक यह रूस्वाई मिलती रहेगी।

बनी इस्राईल की बुजदिली

बनी इस्राईल का पालन पोषण गुलामी की हालत में मिस्र में हुआ था जहाँ जिल्लत थी रुसवाई थी। उसी

www.abulhasanalinadwi.org

हाल में बच्चे जवान हुए और जवान बूढे हुए और उन की रगों में खून ठन्डा हो गया, वह सरदारी हासिल करने या जिहाद के बारे में कभी सोचते भी न थे। बनी इस्राईल हमेशा अपने दिन अजनबियों मुसाफिरों की तरह गुजारे, न उनका कोई वतन था न उन की कही हुकूमत थी।

मूसा अ0 ने अल्लाह की वह्य के अनुसार मुकददस सर जमीन (फिलिस्तीन) जो उनके बाप दादा की जमीन है उस में आजाद बादशाहो की तरह रहें। लेकिन मूसा अ0 बनी इस्राईल की बुजदिल तबीअत और कमजोरी से वाकिफ थे लिहाजा इरादा किया कि उन में शौक़ पैदा करे और इस काम को उन पर आसान जाहिर करें। इसलिये कि अरजे मुकददस (बैतुल मकदिस) पर हैसीयून और कनआनीयून का कबजा है और वह शक्तिशाली तथा बड़े लड़ाकू हैं और यह बनी इस्राईल उस मुक़ददस जमीन में उस वक्त तक न दाखिल होंगे जब तक यह शक्तिशाली लोग उस से बाहर न हो जाएं। चुनांचि उनको उभारने के लिये उन पर अल्लाह की निअ़मतों और उन को दुनिया वालों पर फजीलत देने के पुरस्कार को याद दिलाया ताकि उन मे जिहाद के लिये चुस्ती पैदा हो और वह इस जिल्लत की जिन्दगी से नफरत (घृणा) करें जो अंबिया और बादशाहों की औलाद के लिये अनुचित है।

www.abulhasanalinadwi.org

मूसा अ० ने अपनी कौम से कहा : ऐ मेरी कौम अपने पर अल्लाह द्वारा की गई नेअमतों को याद करो कि तुम में नबी भेजे, बादशाह बनाए और तुम को वह दिया जो तमाम आलमों मे किसी को नहीं दिया।

फिर उन से कहा बेशक अल्लाह ने अर्जुल मुकददस तुम्हारे लिये लिख दी लिहाजा तुम्हारे लिये जरूरी है कि तुम उठो और अपने दुश्मनों से उस को ले लो। अल्लाह तआला जब किसी के लिये कोई चीज लिख देता है और उस के मुकद्दर में कर देता है तो उस के हासिल करने में आसानियाँ पैदा कर देता है पस अल्लाह के फैसले को कोई रद नहीं कर सकता।

ऐ मेरी कौम अर्जे मुकद्दस में दाखिल हो जाओ जिसे अल्लाह ने तुम्हारे लिये लिख दिया है।

और मूसा अलैहिस्सलाम को अंदेशा हुआ कि कहीं उन पर बुजदिली गालिब न आ जाए लिहाजा फरमाया। और देखो पीठ मत फेरो वरना बड़े घाटे में पड़ जाओगे।

मगर हुआ वही जिस को मूसा अ० डर रहे थे, उन का जवाब वही था जो मूसा अ० ने सोचा था कहने लगे : ऐ मूसा उस में तो बड़े शक्तिशाली लोग हैं, हम हरगिज उस में दाखिल न होंगे जब तक वह लोग उस से बाहर न हो जाएं। और बडे इतमीनान से कहा : "अगर वह बाहर हो जाएं तो हम लोग दाखिल हो जाएंगे।

www.abulhasanalinadwi.org

दो आदमी जो अल्लाह से डरते थे अल्लाह ने उन पर इनआम कर रखा था उन्होंने कहा दरवाजे में दाखिल हो जाओ जब तुम दाखिल हो जाओगे तो गालिब आ जाओगे और अल्लाह पर भरोसा रखो अगर तुम ईमान वाले हो। लेकिन उनपर इसका कोई असर नहीं हुआ और उन्होंने कहा : अगर दाखिल हुए बिना कोई चारा नहीं तो आप मुअजिजे (चमत्कार) की मदद से दाखिल हो जाएं जब हम सुनेगे कि आप दाखिल हो गये हैं तो हम भी आकर सलामती और अम्न के साथ दाखिल हो जाएं गे। कुर्आन मजीद ने इस को यूं बयान किया है :–

उन लोगों ने कहा ऐ मूसा जब तक वह (शाक्तिशाली) लोग उस में हैं हम हरगिज, हरगिज उसमें दाखिल न होंगे आप जाइये और आप का रब, पस दोनों लड़ो हम यहाँ बैठे हुए हैं।

मूसा अ0 को गुस्सा आया और उन से निराश हो गये। अपने रब से मुखातब हुए।

अर्ज किया : मेरे रब! मैं अपने और अपने भाई के सिवा किसी पर इख्तियार नहीं रखता हूँ हमारे और इस फासिक कौम के बीच अलाहिदगी पैदा कर दे। अल्लाह तआला ने फरमाया यह अर्जे मुकद्दस इन पर चालीस वर्षों के लिये हराम (वर्जित) कर दी गई यह धरती पर मारे मारे फिरेंगे तुम इस फासिक कौम पर दुखी मत हो

उस चालीस साल के जमाने में यह नस्ल जो मिस्र में गुलामी और जिल्लत की हालत में पली थी इन्तिकाल

www.abulhasanalinadwi.org

कर गई और दूसरी नस्ल तैयार हुई जो इस इलाके में तंगी व उसरत के साथ पली बढ़ी यह मुस्तक्बिल (भविष्य) की कौम हुई।

शिक्षा के रास्ते पर

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि – "मूसा अ० तकरीर (भाषण) के लिये खड़े हुए तो उनसे पूछा गया कौन सब से अधिक जानकार (ज्ञानी) है? मूसा अ० ने कहा कि मैं सबसे ज्यादा जानकार हूँ। मूसा अ० ने इल्म को अल्लाह की जानिब मनसूब नहीं किया उस पर उन को चेतानवी हुई। अल्लाह ने मूसा अ० को वह्य से बताया कि "मेरे बन्दों में से एक बन्दा दो समुद्रों के मिलने की जगह पर है वह तुम से अधिक जानकार है। मूसा अ० ने अल्लाह से कहा कि "ऐ अल्लाह उससे कैसे मिला जा सकता है। मूसा अ० से कहा गया कि तुम एक मछली अपने थैले में डाल लो। जहाँ तुम उसको खो दो वहीं वह तुम्हें मिलेंगे।"

मूसा अ० ने यूशअ बिन नून नवयुवक के साथ अपने थैले में मछली डालकर चल दिये यहाँ तक कि पहाड़ी के पास पहुँचे और सर रख कर सो गये। इसी बीच मछली जीवित हो कर समुद्र में चली गई जो मूसा और उस जवान के लिये आश्चर्य की बात थी। उन दोनों ने अपना सफर रात और दिन का पूरा किया। सुबह हुई तो मूसा अ० ने उस नौजवान से कहा कि भई खाना लाओ। इस सफर ने तो थका दिया। जिस जगह की

www.abulhasanalinadwi.org

रहनुमाई हुई थी जब तक उससे आगे नहीं निकले मूसा अ० को थकावट बिल्कुल नहीं महसूस हुई थी।

नौजवान ने मूसा अ० से कहा कि आप को ख़्याल नहीं हम लोग जब चट्टान के पास रुके थे तो वहाँ मछली (के समुद्र में चली जाने) की बात तो भूल ही गया। मूसा अ० ने कहा कि हमको वही जगह चाहिये थी फिर दोनों उसी रास्ते चट्टान तक जाने के लिये लौट पड़े। वहाँ जब पहुँचे तो वहाँ एक आदमी को कपड़े में लिपटा देखा तो उसको सलाम किया।

ख़िज्र ने कहा : तुम्हारी इस जमीन पर सलाम कहाँ?

मूसा अ० ने उनसे कहा कि मैं मूसा हूँ।

ख़िजिर बोले बनी इस्राईल वाले मूसा हो?

मूसा अ० ने जवाब दिया हाँ।

मूसा अ० ने कहा कि क्या मैं आपके पीछे चलूं ताकि आप मुझे वह इल्म सिखादे जो आप को सिखाया गया है।

ख़िजिर ने मूसा से कहा कि तुम मेरे साथ रहोगे तो सब्र न कर सकोगे। ऐ मूसा मेरे पास जो भी शिक्षा है वह अल्लाह ने दी है। वह तुम नहीं जानते। और जो तुम्हारे पास शिक्षा और जानकारी अल्लाह की तरफ से मिली है वह मैं नहीं जानता। मूसा अ० ने ख़िजिर से कहा कि मैं इन्शाअल्लाह सब्र भी करूंगा और आपकी बात भी मानूंगा अब मूसा और ख़िजिर समुद्र के किनारे चलने लगे उनके पास कोई कश्ती नहीं थी। एक नाव

www.abulhasanalinadwi.org

देखकर नाव वाले से उनको ले चलने को कहा नाव वाले ने ख़िजिर को पहचान लिया और दोनों को बग़ैर पैसा लिये बिठा लिया।

आगे चले तो नाव पर एक चिड़िया आ बैठी और उसने चोंच से समुद्र से एक चोच पानी पिया। इसको देखकर ख़िजिर ने मूसा से कहा कि :–

मूसा हमारा और तुम्हारा ज्ञान अल्लाह के ज्ञान से उतना ही मिला है जितना समुद्र से चिड़याँ की चोंच में पानी लग गया है।

ख़िजिर ने नाव का तख़्ता निकाल लिया। मूसा अ० बोल पड़े। आपने कितना ग़ज़ब किया नाव का तख़्ता लेकर आपने तो लोगों को डुबाने का इन्तेज़ाम कर दिया। नाव वाले ने तो हम से किराया भी नहीं लिया। ख़िजिर ने कहा कि ऐ मूसा मैंने तुमसे पहले ही कह दिया था कि तुम सब्र न कर सकोगे। मूसा अ० ने ख़िजिर से कहा कि यह मेरी पहली भूल है इस भूल पर मेरी पकड़ न करें। फिर दोनों आगे बढ़े। रास्ते में एक लड़का खेलता हुआ मिला। ख़िजिर ने उस लड़के का सर गुद्दी से पकड़ कर अलग कर दिया तो मूसा अ० ने ख़िजिर से कहा कि :–

आपने एक मासूम निर्दोष का ख़ून कर दिया। ख़िजिर ने मूसा अ० से कहा कि :–

मैंने तुमसे पहले ही कह दिया था कि तुमसे सब्र न हो सकेगा। और तुम मेरा साथ न दे सकोगे। फिर दोनों आगे बढ़े और एक बस्ती "गाँव" में गये। गाँव वालों से

www.abulhasanalinadwi.org

खाने की इच्छा ज़ाहिर की। गाँव वालों ने उनको खाना खिलाने से इन्कार कर दिया। वहीं उन्होंने एक दीवार को गिरते देखा। ख़िजिर अ0 ने दीवार को अपने हाथ से उठा दिया। मूसा अ0 यह देखकर बोल पड़े। आप इस काम की मज़दूरी ले सकते थे। ख़िजिर अ0 ने इसके बाद मूसा अ0 से कहा कि तुम्हारी बेसब्री हम दोनों को अलग करने का सबब बनी है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया। हमारी इच्छा थी अगर मूसा ने सब्र कर लिया होता तो और बहुत सी बातों की जानकारी हो जाती।

तफ़सीर

ख़िजिर अ0 ने मूसा को बताया कि नाव गरीब और मिस्कीन मज़दूरों की थी। वह उससे अपनी रोजी कमाते थे। आगे एक बादशाह था जो अच्छी कश्तियों पर क़ब्ज़ा कर लेता था। मैंने उसमें ऐब (बुराई) पैदाकर दिया ताकि बादशाह उसको न ले सके। जहाँ तक लड़के की बात है। लड़के के माता पिता मोमिन थे। हमें डर हुआ कि कहीं यह सरकश लड़का उनको गलत न कर दे। हमने चाहा कि अल्लाह इन दोनों के लिये इस से अच्छा लड़का दे जो नेक और फरमाँ बरदार हो। जहाँ तक दीवार की बात है तो वह दीवार दो यतीम बच्चों की थी। उसके नीचे ख़जाना (दफीना) था उनके बाप नेक और शरीफ थे। अल्लाह ने चाहा कि यह लड़के जब जवान हों तो वह अल्लाह की रहमत से इस ख़जाने को निकालें और अपने काम में लाएं।

www.abulhasanalinadwi.org

ख़िजिर ने कहा कि मैंने यह सब कुछ अपनी इच्छा और मन से नहीं किया। जो कुछ किया उसके लिये अल्लाह का हुक्म था। यह उसकी तफसील है जिस पर तुम सब्र नहीं कर सके।

मूसा अ0 के बाद बनी इस्राईल

मूसा अ0 का इन्तेकाल (निधन) हो गया और बनी इस्राईल अपने बुरे कामों के कारण मारे फिर रहे थे। अल्लाह ने उनके भाग्य में जिल्लत और रूसवाई (अपमान) लिख दी और वह अल्लाह के ग़ज़ब के शिकार हुए। उन्होंने अपने बुरे कर्मों से अल्लाह के ग़जब के शिकार हुए। उन्होंने अपने बुरे कर्मों से अल्लाह को नाराज किया जब कि अल्लाह ने उनमें नबी भेजे उनमें बादशाह भी हुए और अल्लाह ने उनको अपनी नियमतों से नवाजा जो उस जमाने में और किसी कौम को नहीं मिली। फिरऔनियों के जुल्म और (अत्याचार) से छुटकारा दिलाया जो उनके लड़को को कत्ल कर देते और औरतों को छोड़ देते थे। उनके लिये समुद्र फाड़कर रास्ते बनाये और यह उससे सही सालिम निकल गये। उनके सामने फिरऔन को डुबोया। उनपर अल्लाह ने बादल का साया किया उन पर मन और सलवा उतारा। जमीन से चश्में निकाले उनके खाने पीने में बरकत दी।

इन सब नेयमतों की बनी इस्राईल ने नाशुक्री की और अल्लाह की निशानियों का इन्कार किया। नाफरमानी की और हद से आगे बढ़ गये। मूसा अ0 को अपने

www.abulhasanalinadwi.org

कामों से नाराज किया। वह मूसा जिन्होंने उनको माता–पिता का प्यार दिया वह अल्लाह की मख़लूक में सब से जियादा उन पर मेहरबान थे। वह उन पर इतनी शफकत करते जैसे दूध पिलाती माँ अपने बच्चे से ओर दयालू माता अपने दूध पीते अनाथ (यतीम) बच्चे से। वह मूसा जिन को बनी इस्राईल ने गाली दी तो उन्होंने दुआ दी उन की हंसी उड़ाई तो उन के लिये रोये, जुल्म किया तो आप ने उन के साथ हमदर्दी की।

वह मूसा जिन्होंने बनी इस्राईल को फिरऔन की कैद से छुटकारा दिलाया, मिस्र के कैद खाने से निकाल कर आजाद सहरा में लाये बदबख्त गुलामों की जिन्दगी से आजाद शरीफों की जिन्दगी दिलाई।

बनी इस्राईल ने ऐसे मेहरबान का दिल दुखाया उसकी मुखालफत की और उसका मज़ाक उड़ाया और उसकी तौहीन की जो अल्लाह के नजदीक बड़ा महबूब बन्दा था। क्या ऐसी कौम का अंजाम ज़िल्लत, रूसवाई और बरबादी न होना चाहिये? यह कौम इसी की मुसतहिक थी बल्कि इससे मारा मारा फिरना बल्कि इससे जयादा सजा की मुस्तहक थी।

वास्तव में इन्होंने खुद अपने ऊपर जुल्म किया अल्लाह ने उनपर कोई जुल्म नहीं किया।

✦✦✦

www.abulhasanalinadwi.org

शुऐब अलैहिस्सलाम का क़िस्सा

तुमने इब्राहीम अ0 यूसुफ अ0 के किस्से पढ़े हैं। तुमने नूह अ0 और सालेह अ0 के किस्से भी पढ़े और तुमने हज़रत मूसा क़ा किस्सा कुछ तफसील से पढ़ा है।

यह सब किस्से तुमने बडे शौक और लगन से पढ़े हैं। इन किस्सों ने तुम्हारे दिलों और आत्मा पर अच्छा असर (प्रभाव) डाला होगा। तुम्हारी जबान इससे मानूस हो गई। लोगो ने तुम को देखा कि तुम छोटे अपने भाईयों को यह किस्से सुनाते हो (इन किस्सों को) तुमने यह किस्से बार–बार अपने माता–पिता अपने बड़े भाईयों तथा अपने मित्रों को सुनाते हो और सुनाकर इनका मजा (आनन्द) लेते हो और इन कहानियों के सुनाने मे तुम जोश में आ जाते हो।

किस्सा हक़ व बातिल की जंग क़ा

यह कोई हैरत की बात नहीं है यह किस्से शौक से पढ़ने और सुनने के हैं ही। यह किस्से हक और बातिल (झूठ व सच) के बीच जंग है। यह ज्ञान तथा अज्ञानता

www.abulhasanalinadwi.org

के बीच संघर्ष की कहानियाँ हैं। यह जंग है रोशनी और अंधेरे (प्रकाश और अंधकार) के बीच। यह किस्से जंग है इन्सानियत और हैवानियत (मनुष्यता तथा बन चरता) के बीच। यह किस्से (संघर्ष) हैं अनुमान तखमीन और परिपक्वता के बीच।

यह विजय की कहानियाँ है सत्य की असत्य पर ज्ञान की अज्ञानता पर निर्बल की बलवान पर, अल्प की बहु पर। यह ऐसे किस्से है जिन में ज्ञान है। विज्ञान है। लोगों के लिये उपदेश है अल्लाह ने सच कहा है कि "इन कहानियों में अक्ल रखने वालों के लिये शिक्षा व उपदेश (सबक) है। यह गढी कहानियाँ नहीं है अपितु पुष्टि करने वाले हैं पहलों के यह कुर्आन जिस में वह किस्से हैं इसमें हर आवश्यक बात का विस्तार है। पथ प्रदर्शन है। कृपा है ईमान लाने वालों के लिये।

हज़रत शुऐब अ0 मदयन में

हमने जो नबियों की कहानियाँ तुम्हें सुनाई हैं वह मनगढ़न्त नहीं है। यह कहानियाँ कुरआन से ली गई हैं। जिनको अल्लाह ने बयान किया है। कुरआन में इन किस्सों के अलावा (अतिरक्ति) और भी किस्से बयान किये गये हैं। उन में हज़रत शुऐब अ0 का किस्सा है। जिनको अल्लाह ने मदयन में "एक कौम" में नबी बनाकर भेजा था। "कौमे ऐका" व्यापारी थी और व्यापारिक सामान वाली थी। व्यापार के लिये वह यमन, शाम, इराक, मिस्र

तथा लाल सागर की यात्रा किया करती थी। अपने पूर्वजों की तरह यह भी अल्लाह की इबादत तथा पूजा में दूसरों को शरीक करती थी। बल्कि यह उसमें कुछ अधिक (ज्यादा) थी। यह लोग कम तौलते और कम नापते भी थे। काफिलों को छेड़ते उन को धमकाते डराते। धरती पर गड़बड़ मचा रखी थी। बलवानों तथा धनवानों की भांति ऐसे रहते जैसे इनको किसी चीज का हिसाब नहीं देना है और न ही उनको अजाब का भय है और यह सदैव दुनिया में रहेंगे।

अल्लाह ने हज़रत शुऐब को उन में नबी बनाकर भेजा। वह उनको दीन की दावत देते थे उनको अल्लाह की पकड़ से डराते थे। उनसे कहते : ऐ मेरी कौम अल्लाह की इबादत करो। अल्लाह के अतिरिक्त तुम्हारा कोई उपास्य नहीं है। उनसे कहते थे कि कम मत तौलो, कम मत नापो। मैं तुम को धनवान देख रहा हूँ परन्तु मुझे भय है तुम पर अल्लाह के व्यापक प्रकोप का। अल्लाह के अजाब से डराता हूँ। और वह कहते "ऐ मेरी कौम नाप–तौल में बराबर रखो। लोगों को उनकी चीजें बराबर दो और जमीन में गड़बड़ी मत करो।"

शुऐब अ0 की दावत

हज़रत शुएब ने कौम से विस्तृत बात की और जो विचार उन की मन इच्छा में छुपा था उसे खोल दिया और वह था धन तथा उस के वृद्धि का प्रेम और कहा :

कि पूरे नाप–तौल के बाद व्यापार में जो लाभ होगा वह तुम्हारो लिये ज्यादा लाभदायक है उस माल से जो जुल्म व ज्यादती (अत्याचार) से प्राप्त हो।

"तुम उन लोगों को देखो जिन्होंने अत्याचार व बेईमानी की तथा कम नाप–तौल कर लोगों का हक मार कर धन कमाया वह धन उनके काम नहीं आया। वह धन बरबाद हो गया खो गया चोरी चला गया ऐसा धन फसाद या मुसीबंत (परेशानी) का सबब बना या ऐसी जगह खर्च हुआ जहाँ अल्लाह नहीं चाहता। या फिर अल्लाह ने किसी ऐसे को मुसल्लत कर दिया जिस ने उस धन को खा–पी कर बरबाद कर दिया थोड़ी चीज जो लाभ पहुँचाये उससे अच्छी है जो अधिक है लेकिन लाभ हीन है। कुर्आन कहता है कि कह दीजिये कि अच्छा और बुरा बराबर नहीं हो सकता भले ही बुरे की अधिकता रोचक हो।" मैं तुम्हें हृदय से निष्ठा के साथ नसीहत करता हूँ कि तुम्हारा निगेहबान (रक्षक) एक अल्लाह ही है। हज़रत शुऐब ने बड़ी दानाई दूर अन्देशी ज्ञान तथा सहानु भूति के मन से कहा कि अल्लाह के दिये हुए से जो बच रहे वही तुम्हारे लिये भला है अगर तुम ईमान वाले हो अगर तुम मेरी बाते नहीं मानते हो मैं तुम्हारा पहरेदार तो हूँ नहीं तुम आप भुगतोगे।

www.abulhasanalinadwi.org

दयालू पिता तथा ज्ञानी शिक्षक

भिन्न–भिन्न तरीकों व अन्दाज़ों से हज़रत शुऐब कौम को समझाते थे और नसीहत करते थे। शफीक बाप, दादा अध्यापक की तरह उनको बताते थे अतएव उन्होंने कहा कि :–

"ऐ लोगो! उस अल्लाह की इबादत करो जिसका काई शरीक व साझेदार नहीं है। तुम्हारे लिये तुम्हारे रब की ओर से स्पष्ट आदेश आ चुका है। सही तरीके से पूरा नापो–तौलो, लोगों को चीजें कम मत दो। सुधार के पश्चात जमीन पर फसाद मत फैलाओ यह तुम्हारे लिये बहुत भला होगा यदि तुम ईमान रखते हो। हर रास्ते पर मत बैठो जो ईमान वाले है उन को धमकिया मत दो और उनको अल्लाह की राह से मत रोको, तुम सीधी राह में टेढा पन ढूढंते हो। याद करो तुम कितने कम थे अल्लाह ने तुम्हारी संख्या (तादाद) बढ़ाई। उनका अन्जाम देखो जिन्होने जमीन पर फसाद बरपा किया। वह बरबाद हो गये।"

कौम का जवाब (उत्तर)

कौम के बुद्धिमान लोग हज़रत शुऐब की दावत तथा उनकी शिक्षा का अर्थ निकालने में जुट गये जैसे उन्होंने कोई भेद खोल लिया हो या यह कहानी बूझ ली हो, घमण्ड तथा गर्व से बोले :–

www.abulhasanalinadwi.org

"ऐ शुऐब क्या तुम्हारी नमाज हमको यह आदेश देती है कि हम उनकी पूजा करना छोड़ दें जिनकी पूजा हमारे बाप–दादा करते आये हैं और हम अपनी दौलत अपनी इच्छानुसार खर्च (व्यय) न करें। तुम तो बड़े समझदार और नेक हो। फिर तुम ऐसी बात क्यों करते हो?

शुऐब अ0 ने अपनी दावत को स्पष्ट किया

कौम के जवाब पर शुऐब अ0 ने न उन पर सख्ती की न ख़फा हुए बल्कि नर्मी व इन्किसारी से समझाया और उनकी गलत फहमी दूर करने की गरज से कहा कि शऊरी जिन्दगी की लम्बी खामोशी और उन के बुरे स्वभाव और अत्याचार पर सहन करने और कुछ न कहने ने उनको इस दअवत व नसीहत पर नहीं उभारा है। बल्कि इस का सबब अल्लाह का वह करम है जिस के तहत अल्लाह ने वह्य व नबुव्वत से नवाजा और आप का सीना खोल दिया और अपनी जानिब से एक नूर (नूरे नुबुव्वत) अता फरमाया।

नीज कौम की अच्छी माली हालत देख कर हसद व कीना ने भी इस दअवत पर नहीं उभारा है कि अल्लाह तआला ने हलाल व तय्यिब चीजों से आपको गनी कर रखा था जिस के सबब वह खुश नसीब थे आसूदा खतिर फ़ारिगुल बाल जबान व कल्ब से अल्लाह

www.abulhasanalinadwi.org

का शुक्र करने वाले थे अर्थात परसन्ताप भी इस उपदेश का कारण नहीं।

ऐसा भी नहीं था कि शुऐब अ० किसी काम के करने से कौम को रोकते हो और खुद अपनाए हुए हों, वह उन लोगों में से नहीं थे कि कहते तो हों मगर करते न हो। इस दअवत व नसीहत से शुऐब अ० का मक्सद कौम की इस्लाह, उन की बेहतरी, अजाबे इलाही से छुटकारा जो उन के सरों पर मंडला रहा है, बेशक फज्ल व बड़ाई तो अल्लाह तआला की जानिब लौटती है उसी पर उन का भरोसा, कौम के जवाब पर उन से जिस तरह शुऐब अ० मुखातब हुए कुर्आन ने उस को यूं बयान किया है :–

"कहा ऐ मेरी कौम जरा ध्यान दो अगर मैं अल्लाह की दी हुई दलील अर्थात नुबुव्वत के पद पर हूँ जिस को मेरे रब ने मुझे अता कर रखा है जो बेहतरीन अता है। तो फिर मैं तुम को दअवत व नसीहत क्यों न करूं, मैं तुम को जिस का आदेश देता हूँ उस के विरोध का मैंने इरादा भी नहीं किया कि जिस पर तुम एअतिराज कर सको मैं तो अपनी शक्ति भर तुम्हारा सुधार चाहता हूँ मुझे जो दअवत व नसीहत की तौफीक मिली है वह अल्लाह ही की जानिब से है, उसी पर मेरा भरोसा है और उसी से रुजूअ करता हूँ अर्थात हर काम में उसी की ओर झुकता हूँ और उसी से सहयोग माँगता हूँ।

www.abulhasanalinadwi.org

हज़रत शुऐब उनके सामने जो भी बात रखते वह (कौम) उससे ऐसे अनजान (अज्ञात) बन जाते जैसे हज़रत शुऐब किसी और भाषा में बात कर रहे हैं। जबकि वह उन्हीं के देश के सपूत तथा उनके भाई थे। मगर जैसे वह वाजेह बात न कर पाते हों अच्छी जबान न बोल पाते हों जब कि वह फसीह तर जबान बोलते थे और उनकी नसीहत की भाषा बहुत ही उचित तथा स्पष्ट होती थी।

हज़रत शुऐब अपनी कौम के इस रवय्ये से चकित थे वह लोग हज़रत शुऐब को कमजोर जानते और समझते कि वह अकेले पड़ गये हैं। वह हमारे उपास्यों का विरोध कर रहे है, वह कहते कि यदि शुऐब उन के करीबी और खानदान के न होते तो वह उन को पत्थरों से मार मार कर मार डालते। हज़रत शुऐब को जब इस बात की जानकारी हुई तो बड़ा आश्चर्य हुआ कि जो अल्लाह अजीज है कादिर है कवी है काहिर है वह इनके नजदीक उनके खानदान वालों से भी गया गुजरा है। यही सोच सबब होगी उनकी बीमारी हलाकत तथा निर्बलता एवं विवशता को कौम की इस बात को कुर्आन ने इस तरह बयान किया है।

कौम ने कहा : ऐ शुऐब जो कुछ तुम कहते हो उसका अधिकांश हम नहीं समझते हम तुम को अपने बीच कमजोर पाते हैं। अगर तुम्हारे खान्दान का लिहाज न

होता तो हम तुम को पत्थरों से मार मार कर मार डालते और तुम हम पर सरदार नहीं।

शुऐब अ0 ने कहा : ऐ मेरी कौम क्या मेरा खान्दान तुम को अल्लाह से अधिक प्रिय है और अल्लाह को तुमने पीठ पीछे डाल रखा है, तुम्हारे कुकर्मों को मेरा रब घेरे में लिये हुए हैं।

अंतिम तीर (आखरी तीर)

जब कौम की दलील कट गई तो कौम ने अन्तिम तीर चलाया जो हर उम्मत के घमण्डी लोग नबियों और उनके मानने वालों पर चलाते हैं। कौम के घमण्डियों ने कहा कि ऐ शुऐब हम तुम को और जो ईमान लाये उनको अपनी बस्ती से निकाल देंगे या फिर तुम हमारे साथ हो जाओ और हमारी मिल्लत में आ जाओ।

कतई दलील (अकाट्य तर्क)

उनका उत्तर अपने दीन पर गर्व के साथ था। अपने अकीदे (विश्वास) और अपने जमीर (अंतरात्मा) पर हिकमत के साथ शुऐब अ0 ने जवाब दिया कहा चाहे हम तुम्हारे मिल्लत को नापसन्द करते हों तब भी हम उस की जानिब लौटे? अगर हम तुम्हारी मिल्लत में लौट आए तो हम अल्लाह पर झूठ बांधने वाले होंगे जब कि अल्लाह ने हमको उससे छुटकारा दे रखा है ऐसा नहीं हो सकता कि हम तुम्हारे बातिल मजहब की तरफ लौटें, सिवा इसके कि हमारा रब ही चाहे हमारा रब

www.abulhasanalinadwi.org

अपने इल्म से हर चीज को घेरे हुए हैं। हम अल्लाह पर भरोसा करते हैं ऐ हमारे रब हमारे और इस कौम के बीच फैसला कर दीजिये। आप अच्छा फैसला करने वाले हैं।

उन्होंने भी वही कहा जो उनके पहलों ने कहा था

शुऐब की बातों ने उनको कोई लाभ नहीं पहुँचाया। इस कौम के लोगों ने बीती भटकी कौमों की तरह जवाब दिया। उन लोगों ने कहा : वह कहने लगे कि तुम तो जादूगर हो, तुम तो हमारी तरह आदमी हो। हमें तो तुम झूठे नज़र आ रहे हो। कहा कि अच्छा तुम बड़े सत्यवादी हो तो हम पर आकाश का एक टुकड़ा ही गिराओ।

उम्मत का अनजाम (परिणाम) जिसने अपने नबी को झुठलाया

उन सब कौमों का नतीजा एक ही सा रहा है जिन्होंने अपने नबी को झुठलाया, अल्लाह की नेयमतों को झुठलाया तथा उनका इन्कार किया। पस मदयन वालों को भूचाल ने आ पकड़ा और वह अपन घरों में औंधें पड़े हुए थे जिन्होंने हज़रत शुएब को झुठलाया। वह बड़े ख़सारे (घाटे) में रहे।

हज़रत शुऐब ने पैगाम (संदेश) पहुँचाया और अमानत अदा की

सभी नबियों की तरह हज़रत शुऐब भी थे। उन्होंने

www.abulhasanalinadwi.org

कौम को अल्लाह का पैगाम पहुँचा दिया और अमानत अदा कर दी और अपना कर्त्तव्य पूरा कर के हुज्जत काइम कर दी। हज़रत शुऐब ने कौम से कहा कि "ऐ कौम! मैंने तुम तक अपने रब का सन्देश पहुँचा दिया तुम्हें नसीहत भी की। फिर मैं काफिर कौम पर क्या रंज करूं।"

कहानी हज़रत दाऊद व हज़रत सुलैलमान की

जिन कौमों में अल्लाह ने नबी और पैगम्बर (दूत) भेजे तथा उन कौमों ने उनकी खिल्ली उड़ाई उनको झुठलाया कत्ल किया उनका अपमान और उनको जलील किया। इसके बदले उनको जो अजाब आया हलाकत व बरबादी हुई इसका कुरआन ने बड़ी तफसील से बयान किया है।

कुर्आन अल्लाह की निशानियों व नेयमतों को बताता है

बड़ी तफसील से कुर्आन ने अल्लाह की नेयमतों व उसकी निशानियों को बतलाया है कहीं संक्षेप में तो कहीं तफसील से उन नेयमतों का उल्लेख किया है जो अल्लाह ने अपने नबियों पर किया है उनमें विशेषकर हज़रत दाऊद व सुलैमान हैं इन्हीं में हज़रत अय्यूब व यूनुस, जकरिया और हज़रत यह्या हैं।

हज़रत दाऊद व सुलैमान को जमीन पर मजबूत सलतनत दी। उनके राज्य को विस्तृत किया। उन को विस्तृत ज्ञान दिया उनको वह ज्ञान दिया (जानकारी दी)

www.abulhasanalinadwi.org

जिसको लोग नहीं जानते थे। बलवानों तथा उददण्डों (जंड़ पदार्थ) की भी उन का वंशीकृत किया। अल्लाह फरमाता है और हमने ही दाऊद और सुलैमान को इल्म (ज्ञान) दिया। और दोनों ने कहा कि अल्लाह का शुक्र है जिसने हमको अपने बहुत से ईमान वाले बन्दों पर बुजुर्गी (श्रेष्टता) दी और सुलैमान दाऊद के वारिस हुए और कहा कि "ऐ लोगो! हमको (अल्लाह की तरफ से) उड़ते पखेरुओं की बोली सिखाई गई है और हमको हर प्रकार के सामान मिले बेशक (अल्लाह की) यह खुली कृपा है।"

अल्लाह की नेयमतें दाऊद पर

हज़रत दाऊद के काबू में पहाड़ों व चिड़ियों को किया जो उनके साथ दुआ व तसबीह में शरीक रहती हैं हमने उनको दिरअ कवच बनाने की कला बताई और लोहा उनके लिय नर्म किया। और हमने दाऊद को अपनी तरफ से बड़ाई दी (हमने हुक्म दिया) ऐ पहाड़ो और परिन्दो दाऊद के साथ (अल्लाह के) गुण गाओ। और दाऊद के लिय हमने लोहे को मुलायम किया और हुक्म दिया कि ए दाऊद पूरी–पूरी जिरह बकतर बनाओ और कड़ियों के जोड़ने में सहीह अन्दाजा रखो। और तुम सब भले काम करो। जो कुछ तुम करते हो मैं सब देखता हूँ और अल्लाह कहता है कि हज़रत दाऊद के अधीन पहाड़ों को कर दिया कि उनके साथ अल्लाह की तसबीह करते थे और हम ही (यह सब) करने वाले थे।

www.abulhasanalinadwi.org

और दाऊद को हमने तुम लोगों के लिये एक पहनावा (यानी बकतर) बनाना सिखा दिया ताकि लड़ाई में तुम को बचाये तो क्या तुम (इस पर) शुक्र करते हो?

इन नेयमतों पर उनका शुक्र

इस फैले हुए राज–पाट तथा शक्तिशाली होने एवं ज्ञान तथा कला में निपुण होने के बावजूद वह अल्लाह से डरने वाले और उसके फरमाबरदार (आज्ञाकारी) बंदे थे। सदैव अल्लाह का जिक्र करते थे। देर तक अल्लाह से दुआ करते और उसकी तसबीह करते थे। लोगों के बीच न्याय करने वाले थे और सही निर्णय (फैसला) करते थे। अल्लाह फरमाता है कि :–

"ऐ दाऊद हमने तुम्हें जमीनपर ख़लीफ़ा (नायब) बनाया है तुम लोगों के साथ सच के साथ फैसला करो अपनी इच्छा की बात न मानो वह तुम्हे अल्लाह के रास्ते से हटा देगी। वह लोग जो अल्लाह के रास्ते से भटक गये उनके लिये सख्त अजाब है इस लिये कि उन्होंने हिसाब के दिन को भुला रखा है।

अल्लाह की नेयमतें हज़रत सुलैमान पर

अल्लाह ने हज़रत सुलैमान के काबू मे हवाओं को किया जो उनकी आज्ञा पर चलती थीं और उनको एक स्थान से दूसरे स्थान पर बहुत कम वक्त में पहुँचा देती थीं। हमने अनुभवी तथा बलवान जिनों और सरकश शैतानों को उनके काबू में किया था। जो उनके आदेशों

www.abulhasanalinadwi.org

का पालन करते थे तथा उनकी योजनाओं को पूरा करते चाहे वह निर्माण से सम्बन्धित हो या आबादकारी से। इसको कुर्आन ने इस तरह बयान किया है :– और हमने तेज हवा को सुलैमान के काबू में किया कि वह उनके हुक्म (आदेश) से उस जमीन की तरफ चलती थी जिसमें हमने तरह–तरह की बरकतें दे रखी थीं। और हम सब चीजों के जानकार हैं। और कितने शैतानों (की जमाअत) को उनके अधीन किया जो सुलैमान के लिये गोते लगाते (ताकि समुद्र से जवाहरात इत्यादि निकाल लाये) और दूसरे कार्य भी करते थे। और हम ही उनको (इस फर्ज पर) थामे रहते थे। हमने सुलैमान के अधीन हवाओं को किया जिनका सवेरे आना एक माह और शाम को जाना एक माह के बराबर था हमने उनके लिये पिघले तांबे के चश्मे जारी किये। और जिन, जो उनका कार्य करते (अल्लाह की आज्ञा पर) और जो भी हमारे आदेश का उल्लंघन करेगा वह हमारे अजाब को चखेगा। वह सब वह करेंगे जो सुलैमान चाहेंगे बड़े बड़े भवन तस्वीरें बड़े प्याले और एक जगह पर रहने वाली बड़ी देग। ऐ दाऊद के परिवार तुम इन नेअमतो पर शुक्र करो। हमारे बन्दों में से बहुत कम हैं जो शुक्र करते हैं।

गहरा ज्ञान और गहरी सूझबूझ

एक झगड़े में जो उन के वालिद दाऊद के सामने पेश हुआ था सुलैमान अ० की बुद्धिमानी तथा झगड़े के निर्णय पर निपुणता (महारत) जाहिर हुई।

www.abulhasanalinadwi.org

एक कौम का अंगूर का बाग था उसमें अंगूर के खोशे आ गये थे कि उसमें एक शख्स की बकरियाँ आ गई और बाग को बरबाद कर दिया। हज़रत दाऊद ने बकरियाँ बाग वाले को देने का फैसला किया। हज़रत सूलेमान ने हज़रत दाऊद से कहा ऐ अल्लाह के नबी इसके अतिरिक्त फैसला होना चाहिए। हज़रत दाऊद ने पूछा वह क्या है? हज़रत सुलैमान ने कहा कि बाग बकरियों वाले को दिया जाये वह उसको सिचाई कर के जैसा था वैसा कर दे और बकरिया बाग वाले को दे दी जायें वह उनसे लाभ उठाए जब बाग अपनी असली हालत में आ जाये तो बाग वाले को बाग दे दिया जाये और बकरियों वाले को उसकी बकरियाँ लौटा दी जये।

बुद्धिमानी तथा ज्ञान में सुलैमान अ0 को विशेषता दी थी चुनांचि अल्लाह ने फ़रमाया "और दाऊद व सुलैमान जब कि वह एक खेती के बारे में जिसमें लोगों की बकरियों ने चर लिया था (और खेती को नुकसान पहंचा दिया था) फैसला करने लगे और हम उनके फैसले को देख रहे थे। हमने सुलैमान को इसकी समझ दी ओर हमने ही हिकमत और ज्ञान दोनों को दिया।

सुलैमान चरिन्द–परिन्द की जबान जानते थे।

कुरआन ने हज़रत सुलैमान की दानाई का किस्सा बयान किया है कि किस प्रकार उन्होने अपनी सूझबूझ व बुद्धिमानी से अपना राज–पाट चलाया। और कैसे

www.abulhasanalinadwi.org

दीन व दुनिया की सआदत एक साथ अल्लाह ने उनके लिये जमा की। और किस तरह राज–पाट का चलाना और उसके साथ नबूव्वत तथा रिसालत दीन जमा रही। वह चरिन्द–परिन्द की जबान समझते थे। उनके लश्कर में जिन इन्सान तथा चरिन्द सब शामिल थे। एक बार उन सब के साथ बड़ी शान व शौकत से रवाना हुए, फौज पूरे नज्म व जब्त के साथ थी। वह सब अपने सरदारों की कयादत में थे। इसी हाल में हज़रत सुलैमान का चीटियों की वादी से गुजर हुआ। एक चींटी अपने कबीले के लिये डरीं कि कहीं सुलैमान के घोड़े अपने टापों से हमें कुचल न दें और सुलैमान तथा उनके लश्कर को इसकी खबर भी न हो। उसने अपनी जमाअत को बिलों में जाने को कहा हज़रत सुलैमान उसकी बात समझ गये। इस पर हज़रत सुलैमान को घमण्ड नहीं हुआ इसलिये कि वह नबी थे बल्कि उन्होंने अल्लाह से अच्छे कर्म करने और अच्छों की राह चलने की दुआ माँगी।

हुद हुद का किस्सा

हुद हुद सुलैमान अ० राइद और ऐन (फौज के आगे चलने वाला फौजी था) पानी की जगह आगे उड़ कर बताता था, सुलैमान अ० ने उसको मौजूद न पाया, नागवारी हुई, हाज़िर होने पर सजा की धमकी दी? थोडे समय गायब रहने के बाद हुद हुद आया तो हज़रत

www.abulhasanalinadwi.org

सुलैमान से उसने कहा कि मैंने वह देखा जिसे न आप ने देखा न आप के लश्कर ने। हुद हुद ने कहा कि मैं आपके पास सबा तथा उसके राज्य की सही सूचना लेकर आया हूँ। मलका सबा का मुलक बड़ा है और उसका राज–पाट बड़ा और फैला हुआ है। इस बुद्धि तथा ज्ञान और राज–पाट के साथ उसकी प्रजा बड़ी कम अक्ल और मूर्ख है वह अल्लाह की पूजा को छोड़कर सूरज को सज्दा करती है। और इस मूर्खता को समझ नहीं पा रही है अल्लाह जो एक है उसकी इबादत का रास्ता नहीं पा रही है।

मलका सबा को हज़रत सुलैमान ने दीन की दावत दी

हज़रत सुलैमान को इस बात से तकलीफ पहुँची कि उनका पड़ोसी मुल्क और उसके बासी उनकी दावत से महरूम हैं। वह अल्लाह की इबादत के बजाय सूर्य की पूजा करते हैं। उनकी दीनी गैरत जोश में आई और उन्होंने सबा को पत्र लिखने तथा इस्लाम की दावत देने का फैसला किया। इसके पूर्व कि उसपर अपने लश्कर के साथ हमला करते। उस पत्र में इस्लाम की तबलीग तथा आज्ञापालन स्वीकार करने का नबियों की जबान में दावत थी। पत्र–लेख करूणा, दृढ़ता, तथा नबियों की नम्रता और राजाओं के आत्म सम्मान से परिपूर्ण था। कि सुलैमान अ० बादशाह भी थे और अल्लाह के नबी भी।

www.abulhasanalinadwi.org

मलिका का अपने सभासदों से परामर्श

मलिका को राजपाट चलाने का अनुभव था। वह बुद्धिमान थी। वह अपने फैसलों में जल्दबाजी नहीं करती थी। उसके सामने जंगों में सफल बादशाहों का इतिहास था लेकिन उसकी बुद्धिमानी ने अल्लाह को समझने तथा उसकी पूजा करने में उसका साथ नहीं दिया। उसने राजाओं बादशाहों की हमीयत व गैरत से काम नहीं लिया। उस ने अपनी राय को आगे नहीं रखा। सबा ने हज़रत सुलैमान के पत्र पर गौर (विचार) करने के लिये सभासदों को बुलाया। उसने उन लोगों से कहा कि यह पत्र साधारण नहीं है। यह पत्र अपने समय के एक बड़े बादशाह का है। यह पत्र अल्लाह की ओर बुलाने वाले अल्लाह के नबी की ओर से आया है।

जब सभासदों ने मलिका को खुश करते हुए अपनी शक्ति तथा सेना की अधिकता की बात कि वैसे ही जैसे बादशाहों तथा शासको के सभासद हर काल तथा हर राज्य में करते आए हैं तो मलिका ने उन की बातों को स्वीकार न किया उन की बातों से सहमत न हुई उसने टकराव के बुरे अन्जाम से डराया और विजयी राजाओं के स्वभाव से अवगत कराया और हारी कौम का अन्जाम बताया और कहा यही हाल होगा हमारे मुल्क की प्रजा का उसने अपने सभासदों से कहा कि मैं कुछ उपहार भेजूंगी ताकि उनकी परीक्षा ली जा सके। यदि वह उपहार स्वीकार कर लेते हैं तो वह बादशाह हैं

www.abulhasanalinadwi.org

उनसे जंग की जायेगी और यदि उन्होंने उपहार अस्वीकार न किये तो फिर वह नबी हैं। उनकी बात मानो और उनकी पैरवी करो। (अनुसरणकर्ता बन जाओ)।

कीमती उपहार

एक अजीम व बड़ा शानदार जो राजाओं के लायक उपहार हो सकता था हज़रत सुलैमान को सबा ने भेजा। जब हज़रत सुलैमान को उपहार पहुँचा तो उन्होंने उससे मुंह फेर लिया और कहा कि उपहार भेजकर मुझसे भाव–ताव कर रही है कि मैं उसके देश (राष्ट्र) को शिर्क करने के लिये छोड़ दूं। अल्लाह ने मुझ दौलत, राष्ट्र तथा लश्कर उनसे अच्छा और अधिक दिया है। यह मामला संजीदा (गंभीर) है, हंसी मजाक नहीं है। बात इताअत और दावत की है। इसमें लेन–देन का कोई प्रश्न नहीं है न मानने पर उन पर आक्रमण की धमकी दी।

मलिका का ताबेदारी के साथ आना

जब यह पैगाम मलिका को पहुँचा और उसको स्थिति बताई गई तो उसने और उसकी कौम ने बात सुनी और अधीनता स्वीकार की। उसने अपने लश्कर के साथ फरमांबरदारी कबूल करते हुए सुलैमान की जानिब रवाना हुई। जब हज़रत सुलैमान को ख़बर हुई कि वह आ रही है तो प्रसन्न हुए इस बात पर अल्लाह का शुक्र अदा किया और चाहा कि अल्लाह की एक कोई निशानी

www.abulhasanalinadwi.org

उसको दिखायें। ताकि वह अल्लाह की कुदरत व ताकत तथा उसकी बखशिशों का सुबूत (प्रमाण) हो जो उसने हज़रत सुलैमान पर किया। हज़रत सुलैमान ने उसका तख़्ता (सिंहासन) मंगवाने का इरादा किया। यह ऐसा तख़्त था जिसकी बलवान तथा भरोसे के लोग सुरक्षा कर रहे थे। हज़रत सुलैमान ने अपनी जमाअत के सरदारों को बुलाया और उनको सबा के तख़्त को उसके और उसके लश्कर के पहुँचने से पहले लाने को कहा शीघ्र ही वह तख़्त आ गया और यह उनका मुअजिज़ा था। हज़रत सुलैमान ने तख़्त में कुछ तबदीली करा दी वह यह देखें कि सबा अपने तख़्त को आने के बाद पहचानती भी है कि नहीं। यदि वह उसको पहचान लेती है तो यह बात साबित करेगी कि उसकी नज़र मामलात में गहरी है वरना उसमें उससे अधिक मुशकिल मुआमलात में फैसला करने की क्षमता कम है।

शीशों का एक बड़ा महल

हज़रत सुलैमान ने आदमी तथा जिन्नात मेयमारों (राजगीरो) को एक शीशे का बड़ा महल निर्माण करने को कहा जिसके नीचे पानी बह रहा हो जब कि चलने की राह तथा पानी के बीच शीश था। मलिका को यह गुमान होगा कि यह पानी है और जब व उस पर चले तो कपड़े भीगने के डर से पिण्डलियों तक उठा ले। यही उसकी गलती होगी। और उसकी आँखों को धोखा होगा जाहिरी चीजों के देखने में वह और उसकी कौम

सूरज की पूजा केवल इसी लिये तो करती हैं कि सूरज नूर और हयात का बहुत बड़ा मजहर है। हालांकि यह अल्लाह की एक निशानी है। उस समय उसको सच्चाई का ज्ञान होगा और आँख से परदा उठेगा और वह जान लेगी कि शीशे और पानी के मामले में उससे कितनी बड़ी गलती हुई है और उसने कितना बड़ा धोखा खाया है। और ऐसा ही हुआ। उसने पानी समझकर पिण्डलियाँ खोली। उसने ऐसी ही गलती की है सूरज को खालिक बनाने में। इसीलिये वह अल्लाह की इबादत की जगह सूरज की पूजा करती थी। उसको यदि सौ बार समझाया जाता और हजार दलीले दी जाती तो शायद समझ में नहीं आता लेकिन इस तदबीर से वह आसानी से अपनी गलती को समझ गई।

सुलैमान के जरिये सबा का अल्लाह पर ईमान लाना

शीशे को उसने बहता पानी समझा और अपनी पिण्डलियों तक कपड़ों के भीगने के डर से कपड़े उठा लिये। और पानी समझ कर उसपर चलने लगी। सच्चाई के पता चलते ही उसे अपनी गलती का एहसास हुआ। इस गलती ने उसकी जिहानत चेतुरता तथा बुद्धिमानी को चौपट कर दिया। हज़रत सुलैमान ने सबा को उसकी गलती का एहसास दिलाया और उन्होंने सबा से कहा कि यह महल तो शीशे का है। इसको इसकी हक़ीक़त और अपनी मूर्खता का पता चला। और उसकी समझ में आया कि इसी तरह सूरज की उपासना में भी मैं गलती पर हूँ और बोल पड़ी "ऐ अल्लाह मैंने अपनी

www.abulhasanalinadwi.org

आत्मा पर बड़ा जुल्म किया। मैं सुलैमान के साथ अर्थात उनके तरीके पर अल्लाह पर ईमान लाती हूँ जो तमाम जगत का पालनहार है।

कुरआन हज़रत सुलैमान का किस्सा बयान करता है।

इस दिलचस्प कहानी को कुर्आन में पढ़ो– अल्लाह फरमाता है कि "एक चिड़िया गायब हो गई। हज़रत सुलैमान ने कहा कि हुद हुद नज़र नहीं आ रहा है। वह कहाँ गायब हो गया उसके गायब होने पर मैं उसको सख्त सजा दूँगा या फिर मैं उसको जिबह कर दूँगा। या फिर वह अपने गायब होने का ठोस कारण बताये। थोड़ी देर बाद वह आ गया और बोला कि मैं सबा की सच्ची ठोस सूचना लेकर आया हूँ। मैंने उस औरत को राज करते पाया। उसका एक बड़ा शानदार तख्त है और उसके पास सब कुछ है। परन्तु मैंने उसको और उसकी कौम को सूरज की पूजा करते पाया है शैतान ने उनके गलत कामों को उनके सामने बड़ा अच्छा कर के रखा है। उनको सही रास्ते से हटा दिया है वह सही रास्ते पर नहीं हैं। वह अल्लाह की पूजा नहीं करते जो आकाश और धरती की छुपी हुई चीजों को जाहिर करता है। (आकाश से वर्षा का होना और धरती से चीजों का उगना) वह हर चीज का जानकार है जिसको तुम छिपाते और जाहिर करते हो। अल्लाह के अलावा कोई भगवान नहीं और वह मालिक है अर्शे अजीम का सुलैमान ने कहा कि मैं देखूंगा कि तुमने यह झूठ कहा है कि सच। अच्छा तुम मेरे पत्र को लेकर उसके पास जाओ और उसके सामने डाल दो

www.abulhasanalinadwi.org

फिर जरा हट जाओ और देखो वह क्या मशवरा करती है। वह क्या जवाब देती है। पत्र पाकर सबा ने अपने दरबारियों से कहा "मुझे एक महत्त्वपूर्ण पत्र मिला है। वह सुलैमान की ओर से है। वह अल्लाह के नाम से शुरू है (उसमें है कि बहुत बड़ाई मत दिखाओ और मेरे पास आज्ञापालक होकर आ जाओ) ऐ दरबारियो मुझे इस मामले में परामर्श दो। मैंने अभी कोई कतअई फैसला नहीं किया है। तुम इस बारे में क्या कहते हो?" उन्होंने कहा हम बलवान हैं। फैसला तो आप को करना है। जैसा आप अच्छा समझें। सबा ने कहा कि देखो कोई बादशाह जब किसी बस्ती में विजयी हो कर आता है तो उसको बरबाद कर देता है। वहाँ के इज्ज़तदार लोगों का अपमान करता है। और यह भी ऐसा ही करेंगे। मैं उनको अपनी तरफ से उपहार भेजती हूँ देखें कि वह क्या जवाब देते हैं? जब दूत सुलैमान के पास उपहार लेकर आया तो हज़रत सुलैमान ने कहा कि क्या मेरे माल (धन) को बढ़ाना चाहती है। हालांकि अल्लाह ने जो मुझे दिया है वह उससे अच्छा है जो उन्होंने भेजा है। तुम अपने उपहार पर इतराते हो। इसे वापस ले जाओ, हम लश्कर सहित आयेंगे और उन को जिल्लत के साथ निकाल बाहर करेगे। हज़रत सुलैमान ने अपने दरबारियों से कहा कि उसके आज्ञापालक होकर आने से पहले उसका तख़्त कौन ला सकता है।" एक जबरदस्त जिन्न ने कहा कि मैं उस तख्त को आप के उठने से पहले ला सकता हूँ मैं इस पर पूरी कुदरत (ताकत) रखता हूँ और अमानतदार हूँ

www.abulhasanalinadwi.org

एक दूसरे ने जिसको किताब की एक विशेष जानकारी थी बोला कि मैं उसको पलक झपकते ही ला सकता हूँ। पस जब सुलैमान ने तख्त अपने सामने रखा देखा तो हज़रत सुलैमान ने कहा कि यह अल्लाह की कृपा है। वह मुझे आजमाता है कि मैं इन कृपाओं पर शुक्र अदा करता हूँ या उसकी ना शुक्री करता हूँ। जो अल्लाह का शुक्र अदा करता है वह अपने लिये शुक्र करता है और जा नाशुक्री करता है तो मेरा मालिक गनी और करीम है।

हज़रत सुलैमान ने कहा कि इस तख्त में तबदीली कर दो हम देखेंगे कि वह इसको पहचानती है या नहीं। जब सबा आई तो उससे पूछा कि तुम्हारा तख्त ऐसा ही है? उसने कहा कि गोया ऐसा ही है हमें आप के हक पर होने की जानकारी पूर्व हो गई थी और हम आज्ञापालक हैं। वह अल्लाह के अलावा की पूजा जो कर रही थी। उसने उसको ईमान लाने से रोक रखा था क्योंकि वह काफिर की कौम में से थी। वह जब आई तो उससे महल में प्रवेश को कहा। जब उसने देखा तो उसको पानी का हौज समझा और अपनी पिण्डलियों को खोल दिया। हज़रत सुलैमान ने कहा कि यह तो महल है जिसमें शीशे जड़े हैं। सबा ने कहा कि मैंने अपनी आत्मा पर बड़ा जुल्म किया है। मैं सुलैमान के साथ होकर (उनके तरीके पर) अल्लाह पर इस्लाम लाई जो तमाम जगत का पालनहार है।

www.abulhasanalinadwi.org

यह अल्लाह के नबी सुलेमान हैं जिनका दृढ़ नियम तुमने देखा अल्लाह की ओर दावत में और उसकी वहदानियत में और उनकी दानाई उनकी समझने की शक्ति तथा दीन व अकीदे के विषय में उन की गैरत।

हज़रत सुलैमान अ0 ने नाशुक्री नहीं की लेकिन शैतानों ने नाशुक्री की

यहूद ने एकेश्वरवादी ईमान वालों के लिये, जिनके दिल अल्लाह ने ईमान के लिये खोल रखे थे। ना मुनासिब बातें उनकी तरफ मनसूब कर रखी हैं। यहाँ तक कि अल्लाह के भेजे हुए नबी जिनको अल्लाह ने दानाई दी, नबुववत से इज़्जत दी हुकूमत और नियाबत अता फरमाई उनको जादूगर कहा उनकी ओर कुफ्र मन्सूब किया शिर्क के मामले में आलस्य (मुदाहनत) का आरोप लगाया और तौहीद के विषय में उनकी बीवियों के कारण उनको खराबी पैदा करने वाला बताया। अल्लाह ने उनके इससे बरी (पाक) किया और कहा कि :–

"सुलैमान ने कुफ्र नहीं किया बल्कि शैतानों ने कुफ्र किया जो जादू लोगों को सिखाते थे।"

और अल्लाह ने कहा कि :–

"हमने दाऊद को सुलैमान जैसा बेटा दिया। वह बहुत अच्छा और तौबा करने वाला बन्दा है।"

अल्लाह ने फरमाया कि :–

"वह हमारे बहुत करीब है और उसका अन्जाम अच्छा है।"

www.abulhasanalinadwi.org

हज़रत अय्यूब व हज़रत यूनुस की कहानी पहले हज़रत अय्यूब का किस्सा

हज़रत अय्यूब का किस्सा किस्सों में दूसरा ही रूप रखता है।

हज़रत अय्यूब का किस्सा कुर्आनी कहानियों में से एक अलग कहानी है यह कहानी अल्लाह की उन नेयमतों को बताती है जो अल्लाह ने अपने मोमनीन, सब्र करने वाले तथा शुक्र (धन्यवाद) करने वाले बन्दों और अपने प्रिय नबियों पर की है। उनके पास जानवर व चौपाए तथा खेती बाड़ी और बहुत सी चीजें (वस्तुएं) थीं और पसंदीदा संतान थी। उनकी आजमाईश (परीक्षा) हर चीज में हुई और हर चीज उन से ले ली गई, फिर अजमाइश हुई। उनके बदन में यहाँ तक कि उन के बदन का कोई अंग सुरक्षित न रहा सिवाए जबान और दिल के जो

www.abulhasanalinadwi.org

अल्लाह के जिक्र (बयान) में मशगूल (व्यस्त) रहते थे। इस कारण उनके साथियों ने उनका साथ छोड़ दिया और वह शहर के एक किनारे बिल्कुल तनहा रह गये लोगों में कोई व्यक्ति ऐसा नहीं था जो उनसे हमदर्दी करता। केवल उनकी पत्नी थी जो उनकी बात मानती थी। वह उनकी सेवा के खर्च के लिये लोगों की सेवा करती थी।

हज़रत अय्यूब का सब्र

वह इस सब के बावजूद सब्र व शुक्र करने वाले थे। उनकी जबान अल्लाह के शुक्र में मशगूल रहती थी। उन्होंने अपनी बीमारी पर न तो किसी से शिकायत की और न कभी झुंझलाये न कभी वह गुस्सा हुए उन्होंने इस हालत में एक लम्बा समय गुजार दिया। बनी इस्राईल के कूड़े पर पड़े रहने से उनके जिस्म में कीड़े पड़ गये।

इम्तिहान (परीक्षा) और इनाम

अल्लाह ने जब तक उनकी परीक्षा चाही ली और वह जब अपने इम्तिहान में सफल हो गये तो अल्लाह ने उनके दरजात बुलन्द (ऊँचे) किये और अल्लाह ने अपनी पसंदीदगी का फैसला उनके लिये फरमाया। उनके दिल में कुबूल होने वाली दुआ डाली जिसे आजिजी इनकिसारी (नम्रता, सच्ची लगन) टपकती है और जिससे यह एहसास हो कि अल्लाह के अलावा कहीं पनाह (सुरक्षा) नहीं है

www.abulhasanalinadwi.org

और अल्लाह ही हर चीज पर कादिर (सामर्थ्य) है। अल्लाह ने उनको सेहत दी और उनके घर वालों को और उनकी हर चीज में बरकत दी और उसमें इजाफा (बढ़ोत्री) कर के कई गुना कर दिया। अल्लाह फरमाता है :–

"और अय्यूब ने जब अपने रब (भगवान) को पुकारा और कहा कि मुझे कष्ट पहुँचा है और तू बड़ा रहम करने वाला है। हमने उनकी दुआ स्वीकार की और उनको जो कष्ट पहुँचा दूर किया और हमने उनका परिवार लौटा दिया, और उन जैसे उनके साथ अपनी रहमत से और दिये उनको नवाजा। ताकि यादगार हो इबादत (पूजा) करने वालों के लिये।"

हज़रत यूनुस और उनकी दानाई

हज़रत अय्यूब के किस्से से जुड़ा हज़रत युनूस का किस्सा है जो इस बात की ताईद (पुष्टि) करता है कि अल्लाह हर चीज पर कादिर है वह अपने बन्दों पर बड़ा शफीक व मेहरबान है जब उम्मीद (आशा) टूट जाती है आशा निराशा में बदल जाती है हर दिशा अंधकार ही सब रास्ते बन्द न रौशनी न हवा न उम्मीद न तवक्कुअ और मौत की चक्की तेजी से चलती है जिसमें जिन्दगी का दाना पीसकर बारीक आटा बन जाता है वहाँ अल्लाह की कुदरत नज़र आती है तब अल्लाह की रहमत और उसकी दानाई का पता चलता है। उस समय यही कमजोर इन्सान (मनुष्य) खूंख्वार शेर के मूंह से और मौत

www.abulhasanalinadwi.org

के चंगुल से ऐसा सही सलामत और सुरक्षित निकलता है जैसे वह अपने परिवार के साथ अपने घर के बिस्तर पर अपने घर वालों के बीच महफूज (सूरक्षित) था।

यूनुस अ० अपनी कौम के बीच में

यह हज़रत यूनुस की कहानी है। अल्लाह ने उन्हें नेनवा बस्ती में नबी बनाकर भेजा था। उन्होंने अपनी कौम को अल्लाह की तरफ बुलाया लेकिन कौम ने उनकी दावत को अस्वीकार किया और नाफरमानी (कुफ्र) पर डटी रही इस बात पर वह नाराज होकर उनके बीच से चले गये और तीन दिन बाद अजाब आने की उनको सूचना दी कौम ने जब यह जान लिया कि नबी झूठ नहीं बोलता वह जो बताता है वह सत्य होता है। तो कौम भी अपने बच्चो जानवरों सहित जंगल की तरफ निकल पड़े। अपने माता–पिता और अपने परिवार से अलग होकर अल्लाह से गिड़गिड़ा कर दुआ करने और फरयाद करने लगे। ऊँट अपने बच्चों के साथ बल ल्लाये, गायें अपने बछड़ों के साथ बम्बाई और बकरियाँ अपने बच्चों के साथ मिम्याई तो अल्लाह की रहमत जोश में आई और अजाब उनसे टल गया। अल्लाह फरमाता है :–'कोई बस्ती ऐसी नहीं गुजरी कि अजाब दिखाई देने पर ईमान लाती और उसका ईमान को लाभ देता केवल यूनुस अ० की कौम और बसती वाले ऐसे मौके पर ईमान लाये तो हमने बदतरीन अजाब उनसे हटा दिया और दुनिया की जिन्दगी

www.abulhasanalinadwi.org

में एक समय तक लाभ उठाने के लिये उनको छोड़ दिया।"

यूनुस मछली के पेट में

जब यूनुस अ० वहाँ से चले गये और एक कौम के साथ कश्ती में सवार हुए तो कश्ती किसी ऊँची जमीन से लग गई। कौम को अपने डूबने का डर लगा। उन्होंने अपने में से एक आदमी को समुद्र में डालने के लिये कुरा (परची) डाला। यह काम वह शीघ्र करना चाहते थे। कुरा यूनुस अ० के नाम निकला लेकिन कौम ने उनको समुद्र में डालने से इन्कार किया। दोबारा फिर कुरा डाला। इस बार भी यूनुस के नाम ही का कुरा निकला। फिर उनको डालने से इन्कार किया। तीसरी बार जब कुरा डाला तो फिर उन्हीं का नाम निकला। अल्लाह फरमाता है :—

"उन्होंने कुरा डाला तो यूनुस अ० के नाम कुरा निकला, यूनुस खड़े हुए और कपड़े उतार समुद्र में कूद गये अल्लाह ने एक मछली को भेजा जो समुद्र को चीरती फाड़ती उन तक पहुँची और उनको निगल गई अल्लाह ने मछली को उनका गोश्त न खाने उनकी हड्डियों को न तोड़ने के आदेश दिये।"

अल्लाह ने यूनुस की दुआ कुबूल की।

वह मछली के पेट की तारीकी में थे उस तारीकी के साथ समुद्र का अंधकार और रात की तारीकी थी। घटाटोप अंधेरा था। तारीकी और बढ़ती गई। अल्लाह ने जितने समय उनको मछली के पेट में रखना चाहा उनको

रखा। अल्लाह ने हज़रत यूनुस पर इलहाम किया ऐसा शब्द अदा करने को जिससे तारीकी घट जाये और कष्ट दूर हो जाये और सातों आकाश के ऊपर से रहमत (अल्लाह की कृपा) उन पर उतरे कुर्आन को सुनो जो इस अजीब व गरीब कहानी को बयान करता है जिसमें तसल्ली (इतमिनान) है हर निराशाजनक मजलूम (उत्पीड़ित) के लिये है। आशा है ना उम्मीद और परेशान हाल के लिये जिस पर जमीन (धरती) कुशादगी के बावजूद उस पर तंग हो और उस पर जिन्दगी तंग हो गई हो। उसने अपनी आँखों से देख लिया हो कि अल्लाह को छोड़कर कहीं पनाह नहीं मिल सकती। और मछली वाले जब वह गुस्से में चले गये और उनको यह गुमान (आशंका) हुआ कि हम उन पर कुदरत नहीं रखते (फिर वह मछली के पेट में पहुँच गये) तब उन्होंने अंधकार में मुझको पुकारा कि कोई माबूद (पूजा के योग्य) नहीं सिवा आप के आप पाक हैं। मैं तो जुल्म (अत्याचार) करने वाले में से हो गया। तो हमने उनकी दुआ कुबूल की और हमने उनको ग़म (दुःख) से नजात (छुटकारा) दी। हम इसी तरह ईमान वालों को छूटकारा देते हैं।"

हज़रत ज़करिया की कहानी

जकरिया अ0 की दुआ नेक बेटे के लिये

अल्लाह ने अपने महबूब बन्दों पर जो निअमतें और

www.abulhasanalinadwi.org

अपनी कुदरत की निशानियाँ दिखाई इन सब में हज़रत जकरिया अ0 पर ईनआम की अलग ही किस्म है। जकरीया अ0 ने नेक, फरमांबरदार तकवे वाले बेटे की दुआ की जो उनका और आले आकूब का वारिस बने। जो दअवत इलल्लाहि का काम करे।

यह उस समय की बात है जब वह बहुत बूढ़े हो गये थे। हड्डियाँ कमजोर हो गई थीं जवानी ढल चुकी थी। और वह उस अवस्था को पहुँच गये थे जिसमें मनुष्य और स्त्री की संतान होने की आशा समाप्त हो जाती है इस हालत में अल्लाह ने उनकी दुआ स्वीकार की। उन सब लोगों का यह सोचना था कि इस अवस्था में संतान का होना असम्भव है। अल्लाह ने उनकी दुआ कुबूल करके सब के मुंह बन्द कर दिये और यह साबित किया कि अल्लाह हर चीज पर कादिर है अल्लाह ने उनको एक नेक बेटा (पुत्र) दिया अल्लाह ने जल्दी की उनको बुद्धिमान, समझदार, तथा संजीदा बनाने में और उनको बचपन ही में किताब दी और उनको नर्म दिल नेक मुत्तकी, वालिदैन का फरमाबरदार मुतवाज़ि और मुनकसिरूल मिजाज (विनीत) बनाया। बचपन ही से नर्म दिल, सुलहों, शान्ति, अल्लाह से डरने वाला लोगों के साथ अच्छा व्यवहार उसकी विशेषता बन गई अल्लाह ने हज़रत जकरिया का दिल मजबूत किया और उनकी इस अवस्था और निराशा में उनको सन्तान देकर अपनी कुदरत और निशानी

www.abulhasanalinadwi.org

दिखलाई। और बताया कि अल्लाह सब चीज पर कादिर है और वह जो चाहे कर सकता ह। मनुष्य के शरीर (जिस्म) उसके अंग–अंग पर उसका क़ब्जा है। वह जिस अंग को हरकत देना चाहे दे ओर जिसको रोकना चाहे रोक दे। यह वास्तविकता है। वह जिन्दा को मुर्दे से निकालता है और मुर्दों को जिन्दा से निकालता है।वही जिसको चाहे बे हिसाब रिजक देता। वही मारता है और जिलाता है और वही जगत का पालनहार है।

इमरान की औरत की मन्नत

इमरान की औरत ने यह मन्नत मानी (यह हज़रत जकरिया के परिवार में से थी नेक और इबादत गुजार थीं, उसको अल्लाह और उसके दीन से मुहब्बत थी) कि यदि उसने लड़का जना तो उस लड़के को अल्लाह और उसके दीन की सेवा के लिये वक्फ कर देगी। उसने अल्लाह से उसको स्वीकार करनेकी दुआ मांगी कि ऐ अल्लाह! "वह दीन का लाभ पहंचाने वाला हो अल्लाह के दीन की तरफ लोगों को बुलाये और उसका कार्य करे। और वह इमाम हो दीन की रहनुमाई करने वाले इमामों में से।

उन्होंने कहा कि ऐ अल्लाह मैं ने तो लड़की जनी

अल्लाह की उस नेक बन्दी ने क्या चाहा और अल्लाह ने कुछ और चाहा। अल्लाह अपने बन्दों की मसलेहत (मक़सद) अच्छी तरह जानता है। लड़की के जन्म पर उसको बड़ा रंज और अफसोस हुआ और दिल टूट गया।

www.abulhasanalinadwi.org

हालांकि यह लड़की साधारण लडकियों की तरह नहीं थी। उस में अल्लाह की इबादत के लिये बड़ी ताकत थी और नेकी के कामों में बहुत से जवानो से जियादा हिम्मत वाली थी। अल्लाह ने यही मुकद्दर किया (जिसकी मसलहत से वह खुद वाकिफ थी) कि लड़की पैदा हो नुबुव्वत तो अपनी जिम्मेदारियों के लिहाज से केवल मर्दों को मिलती है, परन्तु अल्लाह ने यह मुकद्दर कर दिया था कि वह एक नबी की माँ बनें जिन की एक शान हो। कुर्आन मजीद बयान करता है :–

जब इमरान की औरत ने कहा कि "ऐ मेरे परवरदिगार मेरे पेट में जो बच्चा है उसको दुनिया के कामों से आजाद करके तेरी भेंट करती हूँ। तू उसको मेरी तरफ से स्वीकार कर ले। तू सब कुछ सुनने और जानने वाला है। फिर जब उन्होंने बेटी को जन्म दिया तो कहने लगी कि ऐ मेरे परवरदिगार मैंने तो लड़की को जन्म दिया है। अल्लाह जानता था कि उन्होंने बेटी को जन्म दिया है। और लड़की लड़के की तरह नहीं हो सकती। मैंने इस का नाम मरियम रखा है। मै इसको और इसकी औलाद को शैतान से दूर रखने के लिये इस को तेरी पनाह (शरण) में देती हूँ।

अल्लाह की मेहरबानी लड़की के साथ

वह हज़रत जकरिया की किफालत में थीं करीबी रिश्ते के सबब अल्लाह की हिफ़ाज़त तथा इन्तेजाम में

थीं। अल्लाह ने उनके लिये गैर मौसम में देश विदेश के फल उपलब्ध कराये। इससे उनका आदर किया और उनसे कहा कि इसमें से जितना चाहे खाये और जितना चाहे दूसरे को दे। कुर्आन कहता है :–

उनके परवरदिगार ने हज़रत मरियम को स्वीकार किया और उनकी अच्छी तन्दुरुस्ती दी और किफालत की हज़रत जकरिया ने वह जब मरियम के पास मेहराब में आते तो उनके पास खाना पाते। हज़रत जकरिया ने मरियम से पूछा कि यह खाना तुम्हारे पास कहाँ से आता है। हज़रत मरियम कहतीं कि यह खाना अल्लाह की तरफ से मिलता है। अल्लाह जिसको चाहता है बेहिसाब रिज्क देता है।

अल्लाह की तरफ से उनको इलहाम

अल्लाह ने जकरिया पर वह्य भेजी (हज़रत जकरिया नबियों में से एक बुद्धिमान और जहीन नबी थे) कि जब अल्लाह इस पर कादिर है कि वह एक लड़की को इ़ज्ज़त (आदर) और सम्मान दे। अल्लाह ने उनकी माता की मिन्नत तथा दुआ के लिये मरियम को चुन लिया। अल्लाह ने मरियम के लिये ऐसे फलों का इन्तेजाम किया जो समय से पहले या मौसम के बाद नहीं मिलते यह उसकी कुदरत औरनियंत्रण का प्रमाण है। वह अल्लाह इस पर भी कादिर है कि ऐसे बूढ़े को संतान दे दे जिसकी ताकत समाप्त हो चुकी हो। बुढ़ापे के कारण संतान होने की

www.abulhasanalinadwi.org

आशा खत्म हो चुकी हो। उसकी पत्नी भी बच्चा पैदा करने की सलाहियत (ताकत) खो चुकी हो (यानी बांझ हो) और अल्लाह का नियम है कि इस अवस्था पर पहुँच जाने के बाद मर्दों की संतान पैदा करने की सलाहियत खत्म हो जाती है। लेकिन इस अवस्था में अल्लाह औलाद दे तो यह उसकी कुदरत तथा हर चीज पर उसके नियंत्रण का प्रमाण है।

उनकी आत्मा में जोश आया उनकी हिम्मत बढ़ी, उनकी आशा ने सर उठाया और अल्लाह पर आत्म विश्वास पैदा हुआ और अल्लाह से बड़ी गिड़गिड़ा कर व आजिजी से संतान के लिये दुआ मांगी और फरिशतें ने उस पर आमीन कही। जिससे अल्लाह की रहमत जोश में आई। यह सब कुछ अल्लाह की तरफ से हुआ अल्लाह ने उनके लिये मुकद्दर कर दिया था। अल्लाह बड़ा बलवान तथा हर चीज का जानकार है। कुर्आन कहता है :– "जकरिया ने दुआ की और कहा : मेरे रब अपनी रहमत से अच्छी औलाद दे आप दुआओं के सुनने वाले हैं।

पुत्र की खुशखबरी

अल्लाह ने उनकी दुआ कुबूल की और उनको निकट जिन्दगी में नेक लड़के के होने की खुशखबरी दी। इन्सान की पैदाइश मिट्टी से हुई। और वह बड़ा जल्दबाज है। जकरिया ने इस अदभुत घटना के घटने और बच्चे का पैदाइश का समय करीब होने की निशानी चाही। और

www.abulhasanalinadwi.org

कहा "ऐ रब (परवरदिगार) मेरे लिये कोई निशानी बना दे।"

अल्लाह ने फरमाया :–

निशानी यह है कि तीन दिन तक तुम किसी से बात न कर सकोगे सिवाए इशारे के। और तुम अपने रब का रात दिन जिक्र करो और उसकी तसबीह बयान करो।"

जो अल्लाह इस पर कादिर है कि वह चीजों (वस्तुओं की खासियत समाप्त कर दे वह इस पर भी कादिर है बोलने वाली जबान को गूंगा कर दे कि एक शब्द जबान से कहने की उसमें क्षमता न हो वही अल्लाह इस पर भी कुदरत रखता है कि अपने बन्दों में से जिसको जो चाहे दे और जिससे जो चाहे ले ले।

अल्लाह की निशानियाँ और उसकी कुदरत (शक्ति)

अल्लाह की निशानियाँ और उसकी शक्ति उनके जिस्म में फिर उनके घर और फिर उनके परिवार में जाहिर (प्रकट) हुई। हज़रत यहया का जन्म हुआ। उनके जन्म से हज़रत जकरिया की आंखों को ठंडक पहुँची उनसे उनको शक्ति मिली, उनकी दावत में जान पड़ गई, कुर्आन को सुनो जो इस कहानी को कभी तफसील से तो कभी संक्षिप्त में बताता है कुर्आन कहता है कि :–

"और जकरिया जब उन्होंने अपने खुदा (भगवान) से दुआ की ऐ मेरे अल्लाह मुझे तन्हा न छोड़ना तू ही अच्छा वारिस है हमने उनकी दुआ कुबूल की और उनको (यहया) बेटा दिया और हमने उनके लिये उनकी पत्नी

www.abulhasanalinadwi.org

को आलंद के लिये ठीक किया। वह भलाई के कामों (पुण्य इत्यादि) में बढ़ चढ़ कर भाग लेते और हमसे बड़ी लगन से दुआ करते। वह हमसे डरने वाले थे।"

हज़रत यहया में दावत देने की ताकत (शक्ति)

हज़रत यहया का जन्म हुआ और वह अपने माता–पिता की आंखों की ठंडक बने और अपने महान पिता के जानशीन बने। वह दअवत इलल्लाह की ताकत रखते थे। बचपन ही से उन में शराफत के आसार नुमायाँ थे, वह ज्ञान प्राप्त को ओर बढ़े जब क वह अभी बच्चे ही थे, उन में नेकी और तकवा पैदा हो चुका था जब कि अभी वह अपने हम उम्रों से आगे थे, इस विषय में उन की ओर इशारा किया जाता। अल्लाह उनको सम्बोधित करते हुए फरमाता है :–

"ऐ यहया किताब को खूब मजबूती से पकड़ लो (पालन करो)। और हमने उनको लड़कपन ही में (दीन की) समझ दी और अपनी तरफ से उनकी शफकत (अनुकम्पा) और पवित्रता दी और वह परहेजगार था और वह अपने माँ बाप के साथ नेकी करने वाला था वह सरकशी करने वाला नाफरमान (अवज्ञाकारी) न था। और सलाम है उस पर जिस दिन पैदा हुआ और जिस दिन वफात पायेगा और जिस दिन (दोबारा) जिन्दा उठाया जायेगा।

www.abulhasanalinadwi.org

हज़रत ईसा बिन मरियम की कहानी

आदत व रीति के खिलाफ़ (विपरीत) कहानी है।

हज़रत ईसा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पूर्व आख़री नबी हैं। इन की कहानी में अल्लाह की इच्छा तथा अल्लाह की कुदरत जाहिर हाती है। उनका जन्म इस बात का प्रमाण है कि अल्लाह हर चीज पर कादिर है और हर चीज उस के क़ब्ज़े में है। हज़रत ईसा का पूर्ण मामला आदत तथा रीतियों के खिलाफ है। उनका जन्म तथा उनकी कहानी अचम्भे में डालती है और जो तबई (प्राकृतिक) नियम हैं उनको रद्द करती है। जिनको नियम व तबई आदतों पर यकीन व भरोसा है उनके विश्वास को हज़रत ईसा के जन्म तथा जिन्दगी को मान लेने में कठिनाई आती है। वह यह समझते हैं कि जो रीत चली आई है कि माता–पिता के बिना किसी का जन्म असम्भव है इस रीत में किसी प्रकार का परिवर्तन

www.abulhasanalinadwi.org

नामुमकिन है। वह यह नहीं मानते कि हर चीज अल्लाह के नियंत्रण में हैं। और वह हर बात पर कादिर है।

अल्लाह जब किसी चीज के करने का इरादा कर ले तो उसके इरादे के पूरा होने में कोई चीज रूकावट नहीं बनती और कोई चीज उसके इरादे को पूरा करने में बाधा नहीं डालती वह जब किसी बात के करने का इरादा करता है तो कहता है कि हो जा तो वह चीज तुरन्त हो जाती है।

उस शख्स पर ईसा के जन्म पर विश्वास सरल हो जाता है जो यह जानते हैं कि अल्लाह हर चीज पर कुदरत रखता है। उस में इरादे की सिफत है, वह है। वह जन्मदाता है, कुर्आन कहता है : "वह अल्लाह है, खालिक है, वह ठीक ढाक बनाने वाला है वह अच्छी सूरत का बनाने वाला है और उस के अच्छे–अच्छे नाम हैं। आकाश और धरती पर जो कुछ भी है उसकी माला जपती है। अल्लाह बड़ा शक्तिशाली और बलवान है।

उन पर भी ईसा के अदभुत जन्म को मान लेना सरल है। जो इस बात पर विश्वास रखते हैं। कि अल्लाह ने आदम को मिट्टी और पानी से तथा बिना माता--पिता के पैदा किया। उसके लिये यह केवल माँ बिना बाप के जन्म देना अधिक सरल है बिना माँ बिना बाप के जन्म देने से इसी लिये अल्लाह ने कहा कि ईसा की मिसाल अल्लाह के निकट आदम के समान है।

www.abulhasanalinadwi.org

आदम को मिट्टी से बनाया और फिर कहा कि हो जा और वह जिन्दा इन्सान हो गया।

हज़रत ईसा कमाल आश्चर्यजनक है

हज़रत ईसा का जन्म तथा उनका जीवन अचम्भे की बात है हज़रत ईसा का जन्म ऐसे समय में हुआ जब यूनान में विद्या रियाजी (गणित) तथा बुद्धिमानी अपने अन्तिम चरण पर थी। उस समय जिस्मानी इलाज यूनानी तिब का जोर तथा चलन था।

जाहिरी दिखावे वाला उपकरण तथा असबाब पर यहूद का झुकाव

यहूद जिन में बहुत से नबी आयें हैं। वह यहूद अपने जमाने के विशेष विज्ञान के आगे झुक गये उनमें से रूह और इससे सम्बन्धित बातों का यकीन उठ चुका था। वह जिस बात को देखते उसकी तशरीह तथा व्याख्या भौतिक तथा मन्तिक के रूप में करते थे। उनके नजदीक किसी चीज का वजूद तथा नशवर का अस्तित्व कारण के बिना सम्भव नहीं। वह यह समझते थे कि हर चीज जो पायी जायेगी उसका कोई सबब (कारण) होगा। यह मुअजिजात की भौतिक बुद्धि का इलाज था।

यहूदियों का जाहिरी चीजों पर बड़ा यकीन और विश्वास था। वह गूदा छोड़ते और छिल्लका लेते। वह जाहिर से चिमटते हकीकत को न पाते। उनमें तत्व तथा

उनमें माल तथा माददे की बहुत बढ़ ख्याल बढ़ गयी थी। वह अपनी जिन्दगी में अत्यन्त व्यस्त हो गये वह सख्त दिल हो गये थे। उनके स्वभाव में अति आ गया। अतः वह निर्बल पर दया न करते, फकीरों पर तरस न खाते, और उस से ऐसा बरताव करते जिस में इस्राईली रक्त न हो उन निर्बलों के साथ पशुओं, कुत्तों बेजान पत्थरों जैसा मुआमला करते। शक्ति वालो तथा धनवानों के आगे झुकते और छोटो पर निर्धनो पर अत्याचार करते, बल होता तो सख्ती करते विवश हो तो तो नर्मी करते उन के अन्दर जिल्लत की जिन्दगी और गुलामी ने जन्म लिया जिस में उन्होंने रूमानी काल में गुजारा था जिन का राज्य शाम तथा फिलिस्तीन में एक लम्बे काल तक रहा। उनका शासन शाम और फिलिस्तीन तक पहुँच गया था उनमें नफरत, बहानेबाजी, लोगों के साथ चालबाजी, झगड़ा, षड़यंत्र छुप कर हानि पहुँचाने की आदतें पड़ गई थीं।

खिलवाड़

उनमें नबियों के साथ मजाक उनकी नाफरमानी तथा उनके साथ खिलवाड़ करने की आदत पड़ गई थी। उनको जलील समझते तथा उनपर झूठे इल्जाम लगाते थे यहाँ तक कि उनके कत्ल के भी मुरतकिब होते। वह सूदी कारोबार करने लगे थे। वह धार्मिक शिक्षा की खिल्ली उड़ाने लगे थे। उनसे अच्छे व्यवहार, मनुष्यता का व्यवहार तथा नम्रता की आशा समाप्त हो गई उनके

दिलों से अल्लाह की मोहब्बत जाती रही। उन्होंने मनुष्य का आदर करना छोड़ दिया था। इनमें बहुत से नबी आये। उन पर किताबें भी उतरीं। यह उन पर ईमान व यकीन भी रखते थे लेकिन उस समय किताबों के उस भाग को मानते तथा स्वीकार करते थे जो उनके मुआफिक (अनुकूल) होता और जो उनके स्वभाव की पुष्टि करता। लेकिन जो उनपर आलोचना करता, उनको सही रास्ते पर चलने की दावत देता तथा उनसे अपने कर्मों को सुधारने के लिये कहता, तो उसके वह दुश्मन हो जाते थे। तथा उससे झगड़ते और लड़ते थें। उन में झूठा इल्जाम लगाने, झूठ गढ़ने हक छुपाने और झूठी गवाही देने की आदतें पैदा हो गई थी।

बनी इस्राईल पर अल्लाह की नेयमतें और बख़शिशे

बनी इस्राईल हर जमाने में अपने जमाने की कौमों में श्रेष्ठ रहे, तौहीद के अकीदे के सबब अकीदे मुमताज और मान्यवर रही है। इसी लिये इन को दूसरी कौमों पर फ़ज़ीलत प्रधानता दी गई थी। अल्लाह फरमाता है कि :–

"ऐ बनी इस्राईल हमारी नेअमतों को याद करो जो हमने तुम पर की और हमने तुम्हें सारे जहानों में फ़ज़ीलत दी है।"

एहसानात की नाशुक्री

लेकिन दूसरी कौमों की तरह इनमें भी बुत परस्ती

www.abulhasanalinadwi.org

तथा मुशरिकाना बातें आ गई थीं और नबियों की शिक्षा को अधिक समय बीत जाने के कारण तौहीद का अकीदा कमजोर पड़ गया था। जाहिलियत की आदतें उन में पड़ गई थीं और वह मिस्र में बछड़े की पूजा करने लगे हज़रत उजैर की तकदीस (पवित्रता) और मान में इस हद तक आगे बढ़ गये कि उनको मनुष्य से ऊपर स्थान दे दिया। शिर्क, बुत परस्ती तथा जादू और बुरे कार्य कुछ नबियों के नाम से सम्बन्धित करने लगे और इस पर न तो उनको लज्जा आई और न ही इसको बुरा समझते और न इस बात पर अल्लाह से डरते थे।

घमण्ड और गर्व

ख़्याली बातों व यकीन तथा वंश घमण्ड बहुत बढ़ गया था वह कहते थे कि हम तो अल्लाह की संतान हैं। उसके महबूब हैं हमको आग नहीं पकड़ेगी यदि आग पकड़ेगी भी तो चन्द दिनों के लिये।

हज़रत ईसा का जन्म

हज़रत ईसा का जन्म, उन का जीवन उनकी दावत तथा उनका जीवन यापन चुनौती थी माददीयत और जाहिर परस्ती को चुनौती थी। रस्मो–रिवाज तथा सामाजिक नियमों अर्थात उर्फ को, चुनौती थी मानवी विधान को और उस आदर्श को जिस पर यहूद को ईमान था, चैलेंज था उन रस्मीयात को जिन में एक दूसरे से आगे बढ़ाने की

www.abulhasanalinadwi.org

कोशिश करते थे और परस्पर लड़ पड़ते थे। ईसा का जन्म हुआ साधारण विधि से हट कर। उन्होंने गोद ही में लोगों से बात की। निर्धन माँ की गोद में सबसे अलग थलग उनका पालन–पोषण हुआ और वह परवान चढ़े। तअ़ व तशनीअ (निन्ध) के वातावरण (माहौल) में धन दौलत से बहुत दूर रह कर उनकी परवरिश हुई। गरीबों और मिस्कीनों के साथ उनकी बैठक होती वह उनके साथ खाते पीते और उनके साथ सहानुभूति दिखाते थे। फकीरों और कमजोरों से हमदर्दी करते। उनकी नज़र में धनवान और निर्धन में कोई फर्क नहीं था। उनकी निगाह में उच्चधिकारी तथा सज्जन तथा नीचे के लोगों के बीच कोई अन्तर नहीं था।

हज़रत ईसा के मोजिज़ात (चमत्कार) (कुदरत का करिश्मा)

अल्लाह ने हज़रत ईसा को नबुव्वत दी और उनका मान बढ़ाया। उनको इन्जील (किताब) दी और बैतुलकुद्दूस से ताईद की उनको खुले हुऐ चमत्कार दिये। अल्लाह ने उनके द्वारा ऐसे रोगियों की निरोग किया जिन के इलाज से तबीब लोग आजिज आ चुके थे। वह बर्स (सफेद दाग) पैदाइशी अन्धें ठीक करते थे और अल्लाह के आदेश से वह मरे हुए लोगों को जिन्दा करते थे। लोगों के लिये मिट्टी से परिन्दे बनाते फिर उसमें फूक मारते तो वह जीवित परिन्दे हो जाते। लोग जो कुछ खाते थे और जो

www.abulhasanalinadwi.org

घरों में जमा करते थे, उसको वह बता देते थे।

अपने मुअजिजात से तौरात में बयान मुअजिजात की तस्दीक की और खुदाई कुदरत की खबरो की पुष्टि का और इस सब पर ईमान का नवीकरण किया। पस जो लोग अल्लाह की कुदरत और उस के इरादे की कुव्वत के मुन्किर थे वह मुकाबले पर खड़े हुए और तय किया कि जो कुछ वह जानते हैं जिस का उनको तजरबा बमुशाहदा है उस से जियादा कुछ नहीं और कोई नई बात सही नहीं।

हज़रत ईसा का दीन की तरफ बुलावा और यहूदियों को झुठलाना

यहूदियों ने अपने ख़्यालों से जो फलसफा बना रखा था और उस में बड़ा गुलू कर रखा था, अल्लाह की हलाल की हुई चीजों को हराम और अल्लाह की हराम की हुई चीजों को हलाल कर रखा था हज़रत ईसा अ0 ने उस सब की तकजीब की उस को गलत करार दिया। हज़रत ईसा ने उनको सही दीन की दावत दी उसकी सत्यता तथा वास्तविकता की ओर बुलाया उन्होंने अल्लाह की उस मुहब्बत का पाठ दिया जो मुहब्बत सब पर गालिब हो उन्होंने इन्सानियत पर दया तथा गरीबों के साथ हमदर्दी की दावत दी। और उनको तौहीदे खालिस की दअवत दी और जो बातें अंबिया के दीन में खिलाफ हो गई जैसे जाहिली आदतें और गलत अकाइद उन सब

www.abulhasanalinadwi.org

से इन्कार की दअवत दी।

यहूद का हज़रत ईसा से लड़ना

हज़रत ईसा की शिक्षा उनकी दावत तथा उनकी बातें यहूद को बहुत बुरी लगती थी। अतः उन्होंने ने हज़रत ईसा के खिलाफ लड़ाई छेड़ दी वह एक ही कमान से मुखतलिफ तीर फेकते थे वह उन पर इल्जाम लगाते उन को बदकार बताते, और बहुत बुरा कहते बहुत ही घटिया बातें कहते उन की माँ पर बदकारी का इल्जाम लगाते, उन की मुखालफत करते उन पर हमला करते, औबाशों को उनके पीछे लगाते और उन का रास्ता रोकते।

हज़रत ईसा की कहानी कुरआन में

यहूदियों ने हज़रत ईसा से पीछा छुड़ाने के लिये उनको कत्ल करने की योजना बनाई अल्लाह ने उनकी योजना को असफल कर दिया और हज़रत ईसा को आसमान पर उठा कर उनका आदर बढ़ाया और उनको मान दिया। कुरआन में उनकी कहानी पढ़ो कुरआन कहता है कि :–

"जब फरिश्तों ने हज़रत मरियम से कहा कि अल्लाह अपने कलमें से तुमको खुशखबरी देता है कि उसका नाम ईसा बिन मरियम होगा वह खुश–रू (सुन्दर) तथा रोब दाब वाला होगा और वह हमारे करीब वालों में से होगा। वह माता की गोद में ही लोगों से बात करेगा। और वह

www.abulhasanalinadwi.org

अच्छे लोगों में से होगा। हज़रत मरियम ने कहा कि :–

" ऐ अल्लाह मेरे औलाद कैसे हो सकती है मुझे तो किसी आदमी ने छुआ तक नहीं है। तो उनसे कहा गया कि :–

"अल्लाह चाहे तो ऐसे भी पैदा कर सकता है। वह जब किसी बात को करने का इरादा करता है तो कहता है "हो जा" और वह चीज हो जाती है। हज़रत ईसा को दानाई दी, तौरात व इन्जील का ज्ञान दिया तथा शिक्षा दी। और बनी इस्राईल में उनको रसूल बनाकर भेजा। उन्होंने बनी इस्राईल से कहा कि मैं तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से निशानी लेकर आया हूँ मैं तुम्हारे लिये मिट्टी के परिन्दे से जीवित परिन्दा बना देने की निशानी लेकर आया हूँ मैं उसमें फूंकता हूँ। तो वह अल्लाह के हुक्म से जानदार परिन्दा हो जाता हैं। मैं बर्स (सफेद दाग़) तथा, पैदाइशी अन्धे को ठीक कर देता हूँ। मैं अल्लाह के आदेश से मुर्दों में जान डाल देता हूँ जो कुछ तुम खाते हो और जो कुछ तुम जमा करते हो उसकी खबर दे देता हूँ। इस सब में तुम्हारे लिये निशानी है (मेरी नुबुव्वत की) यदि ईमान लाना चाहो। और तौरात जो मेरे समय से पहले उतरी उसकी तसदीक करता हूँ और मैं इस गरज़ से भी आया हूँ कि कुछ चीजें जो तुम पर हराम हैं, तुम्हारे लिये उनमें से कुछ हलाल कर दूं। मैं तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से (नुबुव्वत की) निशानी लेकर

www.abulhasanalinadwi.org

तुम्हारे पास आया हूँ। तो तुम अल्लाह से डरो और मेरा कहना मानो। बेशक अल्लाह मेरा परवरदिगार है और तुम्हारा भी परवरदिगार है तो उसी की इबादत करो, बस यही सीधी राह है। फिर ईसा ने उन यहूदी लोगों का कुफ़्र (अपने कत्ल करने की उनकी नियत) देखा तो पुकार उठे कि कोई है जो अल्लाह वास्ते मेरी मदद (सहायता) करे। हवारी बोले कि हम हैं अल्लाह के दीन के मददगार । हम अल्लाह पर ईमान लाये और आप गवाह रहिये कि हम मुस्लिम (फरमांबरदार) हैं। "ऐ परवरदिगार इन्जील जो तूने उतारी है, हम उस पर ईमान लाये और हमने पैगम्बर यानी ईसा अ0 की पैरवी कर ली सो तू हमको गवाही देने वालों में लिख ले। और इन यहूद ने ईसा अ0 के कत्ल के लिये साजिश की और अल्लाह ने भी यहूद से ईसा अ0 को बचाने के लिये चाल की, अल्लाह चाल करने वालों में सबसे अच्छा चाल करने वाला है।

(वह़ भी याद करो) जब अल्लाह ने कहा कि :–

"ऐ ईसा दुनिया में तुम्हारे रहने की मुद्दत पूरी करके मैं तुमको अपनी ओर बुला लूंगा। और (इस वक्त) तुम को अपनी ओर उठा लूंगा। और काफिरों की सोहबत से तुम को पाक कर दूँगा। और जिन लोगों ने तुम्हारी पैरवी की है उनको कियामत के दिन तक काफिरों पर गालिब (प्रबल) रखूंगा। फिर तुम सब को मेरी तरफ लौटकर

www.abulhasanalinadwi.org

आना हैं फिर जिन बातों में तुहारे बीच मतभेद है उसके बारे में तुम्हारे बीच उस दिन फैसला कर दूँगा। और जिन्होंने तुम्हारी पैगम्बरी से इन्कार किया तो उनको दुनिया व आखिरत में बड़ी सख़्त मार दूँगा और कोई उनका मद्दगार न होगा। और जो लोग ईमान लाये और उन्होंने नेक काम किये तो अल्लाह उनको पूरा–पूरा बदला देगा। अल्लाह जालिमों को पसन्द नहीं करता।"

यह आयतें और हिकमत (ज्ञान) भरी नसीहतें हम तुमको सुना रहे हैं बेशक अल्लाह के नजदीक इंसान की मिसाल आदम की सी है कि अल्लाह ने मिट्टी से आदम के शरीर को बनाकर फिर उसको हुक्म दिया कि "हो" और वह हो गया। यह तो (जो बताया गया है) तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से यह सत्य प्रकट है तो कहीं तुम भी शक करने वालों में से न हो जाना।

हज़रत ईसा का चरित्र और उनकी दावत (कुर्आन) में

उनका गुण उनके चरित्र और दावत से सम्बन्धित अल्लाह ने जो बताया है उनको तुम पढ़ो अल्लाह फरमाता है :–

"बच्चा बोल पड़ा कि मैं अल्लाह का बन्दा हूँ। उसने (अल्लाह) मुझको किताब (इन्जील) दी है और मुझको नबी बनाया है और मुझ को आदेश दिया कि जब तक मैं जिन्दा रहूँ नमाज पढ़ूं और जकात दूं। और मुझे माँ के साथ नेक सुलूक करने वाला बनाया है और मुझको

www.abulhasanalinadwi.org

सरकश और अभागा नहीं बनाया। और मुझ पर सलाम है, जिस दिन मैं पैदा हुआ और जिस दिन मरूंगा। जिस दिन दोबारा जिलाकर उठाया जाऊँगा।

पुरानी लड़ाई

हज़रत ईसा के साथ भी उनकी कौम ने वही किया जो पिछली कौमों ने अपने नबियों के साथ किया था। ईसा अ० से सरदार और हुक्काम दूर हो गये और उनको धनवानों और ताकतवर लोगों ने छोड़ दिया। उनको उन पर ईमान लाने और उनकी पैरवी करने वालों में जिल्लत नज़र आई। और उसमें बुराई नज़र आई। और उन के लिये यह कठिन हुआ कि वह अपनी रियासत, सरदारी, लीडरी और दुनियावी बुलन्दी जिस पर वह थे नीचे आएं। अल्लाह ने सत्य कहा है कि :–

"हमने जब भी किसी बस्ती में डराने वाला भेजा तो उस बस्ती के खुशहाल लोगों ने उन पैगम्बर से कहा तुम जिस के साथ भेजे गये हो। हम उस का इन्कार करते हैं। कि हम तो धनवान हैं हमारा परिवार है हमारा परिवार बड़ा और हमारी संतान अधिक है हमें अजाब नहीं हो सकता।

आम लोगों का ईमान और उनके गरीब लोग

जब ईसा अ० धनवानो आदि से ना उम्मीद (निराश) हो गये और उनमें कुफ्र और सरकशी व दुश्मीन देखी और उन्होंने देखा कि जिस चीज को वह लेकर आये हैं

www.abulhasanalinadwi.org

उसके वह खिलाफ करते हैं। उन खुली निशानियों, आयतों मोजिजात जिस को उन्होंने देखा और विश्वास भरोसा किया उसका इन्कार कर रहे हैं और उस को घटिया बता रहे हें इस लिये कि वह धन पद वालों में नहीं है तो वह आम लोगों की तरफ बढ़े, गरीबो क तरफ बढ़े तो उनके दिल नर्म हो गये उन के दिल साफ हो गये। इस लिये कि वह अपनी मेहनत से कमाते और खाते थे। वह अपने वंश (नसल) पर गर्व नहीं करते थे न अपने जाह व मंसब पर घमण्ड करते थे। उन्हीं में से एक गिरोह ईमान लाया। उनमें शिकारी और मछली पकड़ने वाले थे। उनमें मेहनत व मजदूरी करने वाले कारीगर लोग थे।

हम अल्लाह के मद्दगार (सहयोगी) हैं

यह लोग हज़रत ईसा पर ईमान लाये वही उनके इर्द–गिर्द रहे और उन्होंने उनके हाथ में हाथ दिया। और उन्होंने कहा कि हम अल्लाह के सहयोगी हैं अल्लाह कहता है कि :–

"जब हज़रत ईसा ने उनकी नाफरमानी को महसूस किया तो कहा कि अल्लाह के लिये मेरी कौन मदद करेगा। उन साथियों ने कहा कि हम मदद करेंगे, हम अल्लाह के दीन के सहयोगी है। हम अल्लाह पर ईमान लाये। और गवाह (साक्षी) रहिये कि हम मुसलमान हैं "ऐ परवरदिगार हम ईमान लाये उस सब पर जो तूने

www.abulhasanalinadwi.org

उतारा और हम ने रसूल की पैरवी की । पस हमको तस्दीक करने वालो में लिख लीजिये।"

इबादत तथा दावत के लिये शहरों में चलना फिरना

हज़रत ईसा अपना अधिक समय शहरों–शहरों घूम कर बनी इस्राईल को अल्लाह की तरफ बुलाते थे। और अपने रब से भटके हुओं को उन के रब से मिलाते थे। एक स्थान से दूसरे स्थान जाते थे। उसमें उनको तकलीफ भी होती कभी तंगी कभी आसानी लेकिन यह सब बातें बड़े सब्र से बरदाश्त करते। रास्ते में भूख व प्यास का कष्ट सहन करते थे और उतना ही खाते जिस से जिन्दगी बाकी रहे।

हज़रत ईसा के हवारी (अन्सार)

आकाश से खाना उतरने का मुतालबा करने लगे।

हज़रत ईसा के हवारी सब्र, हिल्म, तकश्शुफ, जुह्द और कष्ट सहने में हज़रत ईसा अ0 के बराबर के न थे। इन सिफात से कुछ हिस्सा मिला था। उन्होंने हज़रत ईसा अ0 से मांग की कि वह अल्लाह से हमारे लिये आसमानसे खाना उतरने की दुआ करें। हम उस को खाकर अपनी भूख मिटायेंगे और तकलीफ के बाद उस नअमत से राहत पाएं।

उनकी बद्तमीज़ी

वह (यहूद) अपनी इस मांग में संजीदा नहीं थे। वह कहने लगे कि ऐ मूसा क्या तुम्हारा परवरदिगार हमारे लिये आसमान से खाना भेजने पर कादिर है? उनकी इस बेअदबी से मांग पर हज़रत ईसा को बुरा लगा उनके मांगने का ढंग उनको पसन्द नहीं आया। सब नबी अपनी कौम से ईमान, बिलगैब की मांग करते हैं और

www.abulhasanalinadwi.org

उस का मुकल्लफ बनाते हैं। मुअजिजात खिलोने तो नहीं जिनसे बच्चों को बहलाया जाए और न तजरिबेकार लोग उस से खेलें। यह तो अल्लाह की निशानियाँ है। जिन को वह जब चाहता है अपने नबियों के हाथों जाहिर करता है। और वह निशानी बन्दों पर हुज्जत होती है। निशानी जाहिर हो ने के बाद इन्कार करने वालों को ढील नहीं मिलती अर्थात अजाब आ जाता है।

कौम को उनके बुरे अन्जाम से डराना

हज़रत ईसा उनके प्रति बहुत डरे और उनको उनके बुरे परिणाम (अंजाम) से उनको डराया। और उनको अल्लाह की परीक्षा से रोका और मना किया। अल्लाह बहुत बुजुर्ग है उत्तम है उससे जो उन्होंने समझा है।

यहूद का इसरार (ज़िद)

हज़रत ईसा के सहयोगियों ने अपने सवाल व मुतालबे पर जमे रहे। वह कहने लगे कि हम परीक्षा नहीं चाहते हैं। हम तो केवल दिल का इत्मिनान चाहते हैं ताकि वह अगली पीढ़ी के लिये यादगार हो। कहानी होगी जो बरसों सुनाई जाती रहेगी और यह दीन के सत्य होने का प्रमाण हो और ईमान वालों और सत्यवादी व सहयोगियों का स्थान बताएगी।

www.abulhasanalinadwi.org

कुर्आन इस कहानी को बताता है

कुर्आन यह किस्सा बयान करता है। जब सहयोगियों ने कहा कि ऐ ईसा मरियम के बेटे क्या तुम्हारे परवरदिगार में यह क्षमता (ताकत) है कि वह हमारे लिये आसमान से खाना उतारे। हज़रत ईसा ने कहा कि यदि तुम मोमिन हो तो अल्लाह से डरो। वह कहने लगे, हम तो चाहते है कि उस में से खाएं और हमारे दिल संतुष्ट हों और जान लें कि तुम जो कुछ कह रहे हो सत्य कह रहे हो, और हम उस पर गवाह हों। हज़रत ईसा ने दुआ की "ऐ मेरे परवरदिगार तू हमारे लिये आकाश से खाना उतार वह हमारे अगले पिछलों के लिये खुशी की बात होगी। और वह तेरी निशानी होगी। हमें रिज़क़ दे। तू तो सबसे अच्छा रिज़क़ देने वाला है। अल्लाह ने कहा कि :–

"मैं तुम पर खाना उतारता हूँ। इसके बाद तुममें से जिस ने कुफ्र किया तो मैं उसको ऐसा अजाब दूँगा कि दोनों जहान में किसी को नहीं मिला होगा।

यहूद हज़रत ईसा से छुटकारा पाने का इरादा करने लगे।

यहूद के सब्र का पैमाना लबरेज हो गया, और उन की दुश्मनी का प्याला बह पड़ा। उन्होंने हज़रत ईसा से छुटकारा पाने का इरादा कर लिया। उन्होंने रोम के हाकिम के सामने अपना मामला रखा। उन्होंने उससे कहा कि यह (ईसा) गुमराह आदमी है, हमारे दीन से

निकल चुका है, खून खराबा करने वाला हंगामा करने वाला आदमी है, हमारे जवानों को बहकाता है, वह इस के फित्ने में मुबतला हो गये हैं। हमारे बीच मतभेद (फ़र्क़) डालता है। हमारे बुद्धिमानों को बेवकूफ बताता है और हमारे दिलो को मशगूल कर रखा है।

बदला लेने वालों और सयासी लोगों का अन्दाज

वह (यहूद) कहते कि हज़रत ईसा राष्ट्र के लिये खतरा है। यह किसी कानून को मानने वाले नहीं हैं। किसी शासन के आगे झुकने वाले नहीं हैं। किसी बड़े का सम्मान और पुरानों का आदर करना उसके यहाँ नहीं है। यह बागी है। इस को यदि इस की हरकतों से रोका नहीं गया तो यह हमारे सर चढ़ जायेगा और यह सैलाब फिर काबू में नहीं आयेगा। और बड़ी मुसीबत पैदा कर देगी। चिंगारी चाहे जितनी छोटी हो उस का छोटा न समझना चाहिये।

यहूद का मकरो फरेब (दगाबाजी)

उनकी सारी बातें छल कपट, दगाबाजी व मक्कारी की थीं। और उन पर राजनिति की पालिश होती थी। वह खूब जानते थे कि दीनी बातें उच्चाधिकारियों को प्रभावित नहीं कर सकेंगी और उनको जोश न दिलायेगी। शासन की राजनीत यह थी कि यहूद के दीनी कार्यों में रूकावट न डालें। इसी कारण उन्होने अपनी बातो में राजनीति को दाखिला कर लिया।

www.abulhasanalinadwi.org

कठिनाई

गुशरिकीन की तरफ के उच्चाधिकारियों के लिये वास्तविकता (सच्चाई) जानना तथा उसकी सही जानकारी प्राप्त करना बड़ा कठिन प्रश्न था। वह यहूद के उद्देश्य न जानते थें वह उनकी दुश्मनी का कारण नहीं जानते थे। वह संस्थाओं के कार्यों में व्यस्त थे लेकिन यहूद की जिद थी हज़रत ईसा की दुश्मनी पर और हर हाल में हज़रत ईसा से पीछा छुडाना चाहते थे।

हज़रत ईसा न्यायालय (अदालत) में

जुमा (शुक्रवार) का दिन असर के बाद का समय तथा शनिवार की रात थी। शनिवार को यहूद कोई कार्य नहीं करते थे। वह दिन काम से अवकाश का दिन होता था वह चाहते थे और इन्तिहाई कोशिश में थे कि जुमे के दिन सूरज गुरूब (सूर्यअस्त) होने के पूर्व आदेश पारित हो जाये तो वह शनिवार को हज़रत ईसा के मामले में निश्चित हो जाएं और वह बेफिक्र होकर सोएं और इस हाल में सुबह करे कि उनके दिल पर कोई असर न हो और कोई बात उनको परेशान न करे। उच्चाधिकारियों ने इसका निर्णय करने में कोई रूचि नहीं ली और न ही उनके नजदीक कौम की इस में भलाई थी। उस दिन यहूद फैसला सुनने के लिये जमा हुए। समय बहुत थोड़ा था, यहूद वह हंगामा कर रहे थे, आवाजे कस रहे थे,

www.abulhasanalinadwi.org

खिल्ली उड़ा रहे थे उच्च अधिकारी फ़ैसला सुनाने में मुशकिल महसूस कर रहा था, वक्त तंग था सूरज गुरूब होने के करीब था कि उसने हज़रत ईसा को सूली पर लटकाने का फैसला सुना दिया।

उस समय के फौजदारी (अपराधी) कानून

उस समय के क्रिमिनल कानून में था कि जिस को फांसी की सजा सुनाई जाये वह फांसी की सलीब लेकर फांसी घर तक ले जाए, और फांसी घर दूरथा जैसा कि उस वक्त के तरक्की याफ्ता मुल्कों का तरीका था। फैसला सुनाने के बाद भीड़ जमा हो गई और वह एक दूसरे पर गिर रहे थे। पुलिस के अधिक कार्यकर्ता विदेशी थे। जो केवल ड्युटी कर रहे थे। उनको इस फैसले से कोई दिलचस्पी नहीं थी। वह एक दूसरे से सूरत शक्ल में मिलते थे उनको इस बात ने परेशानी में डाल दिया था, वह आपस में फर्क नहीं कर पा रहे थे। शाम का समय हो गया, अंधियारा फैल गया और कुछ बेवकूफ यहूदी जवानी के जोश में हज़रत ईसा को गाली दे रहे थे। उनकी बेइज़्ज़ती कर रहे थे और उनको कष्ट पहुँचाने का इरादा कर रहे थे।

ईसा ने हर कष्ट बरदाश्त (सहन) किया

ईसा अ० न्यायालय में देर तक खड़े रहने से बेहद थक गये थे और कष्ट सहन करने से कमजोर हो गये

www.abulhasanalinadwi.org

थे। सलीब (सूली) वजनी थी उसको उठाने पर उनको बाध्य होना पड़ा उनमें तेज चलने की ताकत नहीं थी।

अल्लाह की तरफ से उसका उपाय

इस कार्य के लिये पुलिस ने जल्दी के लिये एक इस्राईली युवक को लकड़ी उठाकर लाने को कहा। वह अपने साथियों ने सब से अधिक जोशीला था और मुर्खता में सब से आगे था और वह हज़रत ईसा को कष्ट पहुँचाने में सब से बढ़ा हुआ था उस को सलीब ले चलने को इसलिये कहा ताकि मामला शीघ्र समाप्त हो जाये। और इस फांसी के कार्य से जल्दी छुट्टी मिल जाये।

लेकिन वह शक में पड़ गये उनके पहचानने में

जब यह भीड़ फांसी घर के दरवाजे पर पहुँची तो जल्लाद आगे बढ़ा और उसने शहरी पुलिस से आदेश प्राप्त किया उन्होंने नवयुवक को सलीब उठाये हुये देखा मुआमला गडमड हो गया शोर बढ़ गया था फांसी देने वालो ने सलीब उठाने वाले का हाथ पकड़ लिया । यह देखकर उसको इस में शक नहीं रहा कि फांसी का आदेश उस के लिये हुआ है। मगर वह चीख रहा था चिल्ला रहा था और अपनी बेगुनाही का एअलान कर रहा था और कह रहा था के फैसलेऔर फांसी से उस का कोई तअल्लुक नहीं उससे तो सलीब बेगार में जुल्मन उठवाई गई थी लेकिन फांसी के सिपाहियों ने

www.abulhasanalinadwi.org

कोई तवज्जुह न की उन की ज़बान समझ नहीं रहे थे इस लिये कि वह रोम व यूनान के रहने वाले थे हुकूमत वालों की कौम से थे।

आदेश का पारित होना

हर अपराधी अपने जुल्म से इन्कार करता है और अपने को बेगुनाह समझता है। हर अपराधी अपने बचाव के लिये चीखता चिल्लाता है लेकिन उसको पकड़ लिया जाता है और उस पर आदेश पारित होता है। यहूद बहुत दूर खड़े यह तमाशा देख रहे थे और रात के अंधेरे में यह समझ रहे थे कि जिसको सूली पर लटकाया गया है वह ईसा ही है।

हज़रत ईसा अ0 को अल्लाह ने ऊपर उठा लिया

रही बात ईसा अ0 की तो उनको यहूद के मक्र छल कपट से अल्लाह ने इ़ज़्ज़त, आदर और मान के साथ पाक व साफ ऊपर उठा लिया काफिरो के बीच से।

इस कहानी को कुर्आन बयान करता है। अल्लाह तआला यहूद के विषय में बताता हैं :–

"उन्होंने (यहूद) ने हज़रत मरियम पर आरोप लगाया उनको कुसूरवार ठहराया और कहते हैं कि हमने तो ईसा बिन मरियम को कत्ल कर दिया हालांकि न तो हज़रत ईसा को कत्ल किया और न ही उनको सूली पर लटकाया उन्होंने तो उनको पहचानने मे ही गलती की इसलिये

कि वहां सबकी सूरतें मिलती जुलती थीं। और जिन लोगों हज़रत ईसा अ0 के बारे में इख्तिलाफ किया वह शक में पड़ गये उनको सही बात की जानकारी नहीं। वह तो अपने अनुमान के पीछे चल रहे हैं। सत्य यह है कि उन्होंने हज़रत ईसा को कत्ल नहीं किया लेकिन अल्लाह ने उनको अपने पास बुला लिया अल्लाह बड़ा बलवान और बुद्धिमान है।

हज़रत ईसा आसमान पर हैं। जैसा कि अल्लाह ने उनके साथ चाहा। अल्लाह हर चीज पर कादिर है। हज़रत ईसा का जन्म, उनका जीवन प्रारम्भ से अन्त तक आश्चर्यजनक है और नियमों के विपरीत है और यह सब बातें प्रमाण हैं अल्लाह के शक्तिशाली होने पर और इस बात पर कि उसको इख्तियार है हर चीज पर।

कयामत के करीब हज़रत ईसा का आसमान से उतरना

जब अल्लाह हज़रत ईसा को उतारना चाहेगा आसमना से उतार देगा यह सुबूत होगा यहूद व नसारा के खिलाफ जो हज़रत ईसा से सम्बन्धित उल्टी सीधी घटा बढ़ा कर बातें करते हैं। वह हक की हिमायत करेगे। और गलत बाते करने वालों को जलील करेंगे जैसा कि हमारे नबी ने हमको बताया और आप की अहादीस से हमें इसकी जानकारी हुई और सभी मुसलमानों को हर जमाने में इस बात पर यकीन रहा है। अल्लाह ने सच फरमाया:—

www.abulhasanalinadwi.org

अहले किताब उनके मरने से पूर्व ईमान लायेंगे। वह उस पर कियामत में गवाह होंगे।

हज़रत ईसा अ0 की शुभ सूचना सय्यिदुना मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की बिअसत के विषय में

हज़रत मसीह अ0 अपनी दअवत का अभियान पूरा न कर सके जिस का कारण यहूद का विरोध उनका बल तथा स्वयं उनकी निर्बलता व सहयोगियों कि कमी थी अतः उन्होंने लोगों को विदा कही और रब के आदेश का पालन किया और लोगों को शुभ सूचना दी कि उन के पीछे एक रसूल का आगमन होगा वह उसे पूरा करेंगे जो कुछ उन्होंने (ईसा अ0) ने आरम्भ किया है और उसे व्यापक करेगे (आम करेगे) जिसे उन्हें विशिष्ट (खास) रखा है, और उन के द्वारा अल्लाह का विशेष पुरस्कार (निअमत) उसके बन्दों पर पूरा होगा तथा वह सृष्टि (मख्लूक) पर हज़रत (तर्क) होगी। कुर्आन बयान करता है :—

"उस समय को याद करो जब मरियम के बेटे ईसा ने कहा ऐ इस्राईल की सन्तानो! मैं तुम्हारे लिये अल्लाह का रसूल हु पुष्टि करने वाला अपने से पहले उतारी गई तौरात की तथा शुभ सूचना देने वाला हूँ इस बात की किमेरे पीछे एक रसूल आएंगे जिनका शुभ नाम अहमद होगा।"

शुद्ध एकेश्वरवाद से अंधविश्वास की ओर

धर्म (अदयान) के इतिहास की आश्चर्य जनक बातों में जिस पर नेत्र आंसू बहाएं तथा हृदय पानी हो जाएं हज़रत मसीह अ0 के शुद्ध एकेश्वरवाद के आवाहन (तौहीद खालिस की दअवत) का तथा उलझाव रहित सरल शुद्ध धर्म (गुमूज व रुमूज से पाक आसान और सहीह दीन) का बदल जाना तथा दूर का अर्थ लेना। तथा एक अल्लाह की उपासना वंश आवाहन (दअवत) और उसी से मांगना, उसी से विनय् करना, उससे शुद्ध प्रेम रखना इन सब स्पष्ट तत्वो को छोड़कर अस्पष्ट विश्वास (गामिज अकीदा) धारण करना। फिर इन अशुद्ध विश्वासों पर चलने वाले इतना बढ़े कि कुछ अल्लाह के बन्दों को मानव स्तर से उठा कर उपास्य के स्तर पर पहुँचा दिया और उन्होंने कहा : मसीह अल्लाह के बेटे हैं।" और कहा "उन लोगों ने कि अल्लाह तआला सन्तान रखता है।" और कहा : निःसन्देह अल्लाह तो यही मरियम के बेटे मसीह हैं" और एक कामना रहित उपास्य जिस को न किसी ने जना न उसने किसी को जना उस को तो दीन पर आधारित परिवार वाला बना लिया और कहा स्वामी (रब) उस का बेटा, तथा पवित्र आत्मा (रुहुलकुदस) इन तीनों को उपास्य माना, और मरियम को मसीह की माँ माना और उनके साथ वह व्यवहार किया कि

www.abulhasanalinadwi.org

श्रद्धा तथा उपासना के स्तर पर पहुँचा दिया उन को (अल्लाह की शरण) अल्लाह की माता कहा तथा उन की मूर्तियाँ और चित्र कनीसो में रखी और लटकाई गई, जिन के सामने मसीही झुकते तथा उन से प्रार्थना करते हैं उन के सामक्ष नतमस्तक होते हैं। अल्लाह तआला ने उनके इस कर्म को अप्रिय बताते हुए तथा उस को बुरा बताते हुए कहा मरियम के बेटे केवल रसूल हैं उससे पहले बहुत से रसूल जा चुके हैं। तथा उनकी माँ सत्यवती (सिद्दीक) है दोनों आहार खाते हैं देखो हम किस प्रकार उनके समझने के लिये खोल कर बयान करते हैं फिर देखो वह कहाँ जा रहे हैं। आप कह दीजिये क्या तुम अल्लाह के सिवा किसी को पूजते हो जो तुम को न हानि पहुँचा सकता है न लाभ और अल्लाह (जिसे तुम छोड़ रहे हो वह तो) तो सब कुछ सुनने तथा जानने वाला है।

ईसा अ० की दावत

अल्लाह की इबादत के लिये जिस प्रकार दूसरे अन्य नबियों ने "अल्लाह की इबादत की" अपनी कौम को दावत दी वैसे ही हज़रत ईसा ने अल्लाह की इबादत के लिये अपनी कौम को बुलाया इंजील में स्पष्ट लिखा है कि "अल्लाह तुम्हारा रब है उसी को सजदा करो वह एक है उसी की पूजा करो।"

अल्लाह ने कुर्आन में फरमाया कि :–

www.abulhasanalinadwi.org

"किसी मनुष्य को यह शोभा नहीं देता अपितु उस को अधिकार नहीं है कि अल्लाह उसको किताब और हिकमत और पैगम्बरी दे, फिर वह लोगों से कहने लगे कि अल्लाह को छोड़कर मेरे बन्दे बन जाओ।" बल्कि (यह तो कहेगा कि "ऐ किताब वालो) तुम अल्लाह वाले बन जाओ इस लिये कि तुम लोग दूसरों को किताब पढ़ाते हो। और तुम खुद भी पढ़ते हो। और वह तुम से यह भी नहीं कहेगा कि तुम फरिश्तों और पैगम्बारों को पालनहार मानो। न तुम्हें कुफ्र करने को कहेगा। जब कि तुम उसके आज्ञाकारी हो।

हज़रत ईसा की दावत को कुर्आन जाहिर करता है

अपने से पहले की किताब की पुष्टि करता है और उनका संरक्षन है उसने हज़रत ईसा के इस ऐलान को नकल किया है। जो उन्होंने खुले और साफ–साफ उस्लूब में शुद्ध तौहीद और दीन की दावत दी है। कुरआन कहता है कि उन लोगों न कुफ्र किया जिन्होंने कहा कि अल्लाह मरियम के बेटे मसही है। अल्लाह मानते थे। हज़रत ईसा ने कहा कि "ऐ बनी इस्राईल तुम उस रब की पूजा करो जो तुम्हारा और मेरा परवरदिगार है जिसने अल्लाह के साथ किसी को उसकी इबादत में शरीक किया अल्लाह ने उस पर जन्नत हराम कर दी उसका ठिकाना जहन्नम है। और जालिमों की कोई सहायता नहीं करता।

www.abulhasanalinadwi.org

हज़रत ईसा की दावत में तौहीद का मुकाम (स्थान)

हज़रत ईसा ने जिस सुन्दर सरल तथा बलीग अन्दाज में दावत दी। उससे वह सभी लोग आनन्दित होते है जिन्हों तौहीद को पहचाना नबियों और पैगम्बरों की सीरत (चरित्र) को भली प्रकार जाना और अल्लाह को पहचाना और उस पर अमल भी किया। उसी के आगे झुके उससे भयभीत रहे। हज़रत ईसा ने अपने अल्लाह के बन्दे होना को बुरा न माना और न मुकरब।

फिरिश्तो ने बन्दे होने को बुरा माना और जो अल्लाह की बन्दगी को अपने लिये बुरा समझेगा और करेगा उन सबको अल्लाह जहन्नम में डाल देगा। लेकिन जो लोग ईमान लाये अच्छे कार्य किये हम उनको पूरा पूरा बदला देगे और अपने फज्ल से और अधिक बदला देंगे। और जिन्होने इबादत को बुरा जाना और घमण्ड किया उनको हम बड़ा कष्ट वाला अजाब देंगे। और वह अल्लाह के अलावा किसी को अपना न सहायेगी व हमदर्द नहीं पायेंगे।

क़ियामत का मंजर

कुर्आन ने अपनी बलागत, फसाहत और अपने अन्दाजे ब्यान में कयामत की मन्जरकशी की है जिसमें हज़रत ईसा अपनी बराअत (बचाव) करेंगे। उन सब गलत बातो से जो लोग उन के बारे में कहते रहे हें और उन गलत बातों पर अमल करते रहे है। हज़रत ईसा अपनी दावत

www.abulhasanalinadwi.org

को बड़े खुले शब्दों में खोलकर रख देंगे। अपनी स्थिति स्पष्ट करेंगे। उस मुआमले में जो उन की कौम शिर्कया कौम इख्तियार किये कि यह शिक्षा मैंने नहीं दी, इस उत्तरादायी वह स्वयं है। कुर्आन को पढ़ो और कुरआन विरामथल और कयामत की उपस्थितिकी मंजरकशी को देखों और महसूस करो। कुर्आन बताता है :–

"ऐ ईसा बिन मरियम क्या तुमने लोगों से कहा था, कि मुझे और मेरी माता को अल्लाह की जगह उपास्य मानना हज़रत ईसा कहेंगे कि "ऐ अल्लाह तेरी ही बड़ाई है। ऐसी बात मैं कैसे कह सकता हूँ जिस का मुझे अधिकार नहीं है। यदि मैंने ऐसी बात कही होती तो वह तेरी जानकारी में होती मेरे दिल में जो भी है। उसकी तुझे खबर है। लेकिन तेरे मन की जानकारी मुझे नहीं तू तो छुपी चीजों का भी जानकार है मैंने तो वही बात कही जिसका तूने मुझे आदेश दिया कहा कि अल्लाह की इबादत करो जो मेरा और तुम्हारा परवरदिगार हैं। और जब तक मैं उन की खबर रखता रहा। और जब मुझे उठा लिया तो मेरे बाद उनका तू ही निगराँ था। तू हर चीज का गवाह है। यदि तू उनको सजा देना चाहे तो वह तेरे बन्दे हैं और यदि तू उनको माफ कर दे तो तू बड़ा प्रभुत्व शाली तत्वदर्शी है" अल्लाह कहेगा आज के दिन सच्चों को उनकी सच्चाई का लाभ मिलेगा उनको

www.abulhasanalinadwi.org

जन्नत मिलेगी। जिसके नीचे नहरें बह रही होंगी उनमें वे सदैव रहेगे। अल्लाह उनसे राजी हुआ और वह अल्लाह से राजी हुए। वह बड़ी सफलता होगी यह धरती और यह आकाश तथा इसमें जो भी चीजें हैं वह अल्लाह के लिये है और वह हर चीज पर कादिर है।"

विश्वास से स्पष्ट मूर्ति पूजा की ओर कदम

मसीही प्रचारको ने अपने सोच विचार के मुताबिक और अपने हज़रत ईसा की तालीम, उनकी दावत को यूरोप में मुन्तकिल किया। एक जमाने वहा बुतपरस्ती फैली हुई थी यूरोप बुत परस्ती में डूब हुआ था। यूनान के लोग भी बुत परस्त थे उन्होंने अल्लाह के गुणों को अलग अलग उपास्य कल्पित कर रखा था और उनके बुत गढ़ रखे थे और उनके लिये कलीसा और गिरिजा घर बनाए और अल्लाह की सिफात पर बुतों के अलग–अलग नाम रख लिये कोई रिजक का कोई रहमत का और कोई कहर का बुतपरस्ती रोमियों के खून में रच–बस गई थी। और वह इसमें डूब गये थे। और खुराफात अर्थात बेकार की बातों में पड़ गये थे दीन की असल रूह उनके दिलों से निकल चुकी थी। रूमी बहुत से मअबूदों की इबादत व पूजा करते थे जब उन में नसरानीयत पहुँची और जब फिलिस्तीन पर कुस्तुनतीनिया वाले 306 ई0 में मसीही बने और नया दीन इख्तियार किया और उसको सरकारी धर्म

www.abulhasanalinadwi.org

बना दिया तो नसरानीयत ने यूनानियों से बुत परस्ती और उनके फलसफ से बहुत कुछ लेना आरंभ किया और धीरे धीरे बुत परस्ती से करीब होने लगे जिस से मसीही दीन की असलियत तथा उसकी रूह समाप्त हो गई। और पूरब की सादगी जाती रही वहदानियत का तसव्वुर (कल्पना) ख़त्म हो गया। कुछ ऐसे मुनफ़िक़ इस धर्म में आ गये जो पुराने विचारों तथा बुतपरस्ती को हवा देने लगे और एक नये धर्म की बुनियाद डाल दी। इस तरह बुत परस्ती और मसीहीयत एक साथ चलने लगी। नसरानियत धीरे–धीरे उस मार्ग को छोड़ बैठी जो हज़रत ईसा ने दिखाया था उस शिक्षा और तालीम को भुला दिया जो हज़रत ईसा ने दी थी। वह सही रास्ते से भटक गये उस राही की भांति जो अपने रास्ते से भटक गया हो अपने इरादे से था बिना इरादे के रात की अंधेरी में तो उस की यात्रा उस को अन्त में पहले रास्ते से न मिला सकेगे।

इस हिकमत और बारीकी को वही समझ सकता है जिसने इन धर्मों के इतिहास का अध्ययन किया हो। अल्लाह ने इन को गुमराह बताया और यहूद को प्रकोप भागी बताया है। चुनांच मुसलमानों की जबान से कहा :–

"ऐ अल्लाह हमे सीधे रास्ते पर चलने की तौफीक दे उनके रास्तों पर हमको चला जिस पर चलने वालों

पर तेरी तौफीक दे उनके रास्तों पर हमको चला जिन पर तेरी रहमत और इनआम रहा है हमको उनके रास्तों पर न चलाना जो तेरी रहमत से महरूम रहे और गुमराही के कारण तेरे गजब के हकदार बने। मसीहीयत का अपनी अस्ल से हट जाना एक दुखद घटना है। यूरोप के लिये और सारी मानवता के लिये जिस का नेतृत्व यूरोप ने एक लम्बे काल तक किया और अब तक उसकी प्रधानता बाकी है।

अल्लाह के सब कुछ पहले भी रहा है और बाद में अल्लाह ही के इख्तियार में सब कुछ है पहले भी और बाद में भी उसी का सब कुछ होगा।

समाप्त

www.abulhasanalinadwi.org

www.abulhasanalinadwi.org